लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–29

शुक सप्तति

अज्ञात

12वीं शताब्दी

अंग्रेजी अनुवाद बी हेल वर्थम – 1911

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken-29
Book Title: Shuk Saptati (The Enchanted Parrot)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of India

विंडसर¸ कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 7

शुक सप्तति 9

कहानियों का प्रारम्भ 11

1 मोहन और लक्ष्मी 18

2 यशोदेवी और उसके जीवन परिवर्तन 21

3 राजकुमार सुदर्शन और विमल 25

4 मूर्ख ब्राह्मण जिसने एक जादूगरनी से विवाह किया 29

5 रानी और हॅसती हुई मछली 34

6 सुमति जयन्ती और गणेश 41

7 ब्राह्मण और जादुई शाल 47

8 व्यापारी जिसने घर और जायदाद खोयी 52

9 रानी और हॅसती हुई मछली–समाप्त 55

10 देवस और उसकी दो पत्नियॉ 59

11 रम्भिका और उसका ब्राह्मण प्रेमी 61

12 शोभिका और बकुल का पेड़ 64

13 कपटी राजिका 66

14 चतुर धनाश्री 68

16 मुग्धिका जिसने अपने पति का प्यार पाया 74

17 हाजिरजवाब ब्राह्मण गुणाढ्य 76

19 चतुर सन्तिका जिसने अपने पति की साख बचायी 78

20 केलिका जिसने अपने पति को झूठा प्रेम दिखा कर धोखा दिया 80

22 माढ़क और ऊॅट 82

23 सौदे का बेटा जिसने अपना सारा पैसा खो दिया 83

25 एक बौद्ध साधु 93

26 रत्नादेवी और उसके दो प्रेमी 95

28 देविका ने क्या किया जब वह अपने प्रेमी के साथ पकड़ी गयी 97

29 चतुर सुन्दरी 99
30 मूलदेव जिसने अपने आपको होशियारी से बचाया 101
31 शशाक खरगोश और शेर 102
32 रजनी और गेहूँ की पोटली 104
33 रम्भिका और उसके चार प्रेमी 106
34 एक ब्राह्मण एक लड़की और पाँच भुट्टे 109
35 बीज का व्यापारी शम्भक 111
36 नायिनी और सिल्क की साड़ी 113
37 हल चलाने वाला पूर्णपाल और मालिक की बेटी 115
39 लोहे के बाट और तराजू जिन्हें चूहे खा गये 117
40 सुबुद्धि और कुबुद्धि 120
42 चीते को मारने वाली स्त्री–1 123
43 चीता मारने वाली स्त्री–2 125
44 चीता खाने वाली स्त्री–समाप्त 127
46 राक्षस और ब्राह्मण की पत्नी–1 129
47 राक्षस और ब्राह्मण की पत्नी–समाप्त 131
48 अक्लमन्द मन्त्री शकटल 133
50 धर्मबुद्धि और दुष्टबुद्धि 136
51 ब्राह्मण जिसने चोरों को भगाया 139
52 दुर्दमन और उसके तीन साथियों के कारनामे 141
54 धर्मदत्त और उसका मन्त्री विष्णु 146
55 धोखा देने वाला ब्राह्मण और चमार 149
57 चन्द्रलेखा जो राजा के एक बुद्धिमान आदमी के प्रेम में पड़ गयी 150
59 मूर्ख और बुरे स्वभाव वाला राजपुत्र 153
60 हरिदत्त और मणियों जड़ा कमरा 157
61 तेजुका और नकली डाक्टर 159
65 साधु का शिष्य और माँस का टुकड़ा 162

66 बहेलिया और कबूतर 163
67 बन्दर और मगर 165
68 ब्राह्मण और व्यापारी की बेटी 169
69 वणिका जिसने टैंक में गिर जाने का बहाना किया 171
70 गन्धर्व की बेटी जिसे नारद ने शाप दिया 177

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

शुक सप्तति

भारत में तोता एक बहुत ही प्यारी घरेलू चिड़िया मानी जाती है। यह इतनी पालतू है कि यह आपको बहुत सारे लोगों के घरों में मिल जायेगी। इसे हीरामन भी कहते हैं। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह बोलती है और कुछ तोते तो इतना अच्छा बोलते हैं कि आदमी की और उनकी बोली में अन्तर करना कठिन हो जाता है। यह नकल बहुत अच्छी करती है और इससे सभी सुनने वालों को आनन्द आता है।

इसके विषय में एक घटना बहुत प्रसिद्ध है कि एक बार कहीं किसी वस्तु की नीलामी हो रही थी। सब लोग एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर बोलियाँ लगा रहे थे। वस्तु की कीमत बढ़ती जा रही थी। जब आगे किसी और ने कोई बोली नहीं लगायी तो आखिरी बोली लगाने वाले को वह वस्तु बेच दी गयी। बाद में पता चला कि खरीदने वालों के मुकाबले में केवल वह तोता ही उस वस्तु के लिये बोली लगा रहा था जिसे बेचा जाना था। अब क्योंकि कि आखिरी बोली लगाने वाला तोता था सो उससे पहले वाली बोली लगाने वाले असली आदमी को वह वस्तु बेच दी गयी। है न मजेदार घटना।

तोते से सम्बन्धित कई लोक कथाऐं भी हैं। हमने तोते की लोक कथाओं की एक पुस्तक प्रकाशित की है जिसमें संसार के विभिन्न देशों से एकत्र की गयी तोतों की कथाऐं एकत्र की गयी हैं।[2]

तोते से सम्बन्धित भारत के साहित्य में दो पुस्तकें हैं एक तो "तोता मैना का किस्सा"। तोता मैना का किस्सा हिन्दी में लिखी हुई एक पुस्तक है जिसमें तोता और मैना केवल दो चरित्र हैं जो पुरुष और स्त्री की बेवफाई के किस्से एक दूसरे को सुना सुना कर एक दूसरे को बेवफा बताते रहते हैं।

और दूसरी पुस्तक है "शुक सप्तति"। शुक सप्तति संस्कृत में लिखी हुई एक पुस्तक है। शुक सप्तति – शुक माने तोता और सप्तति माने सत्तर। या तोते की सत्तर कहानियाँ तोते की सत्तर कहानियों का एक संग्रह है जिसे मूल रूप से संस्कृत में लिखा गया था। यह पुस्तक भारत में किसने लिखी और यह कब लिखी गयी इस बात का तो सही सही पता नहीं चलता पर अपने इस आधुनिक रूप में इसे 12वीं शताब्दी, यानी 1100–1200 में, पाया गया।

इस संग्रह का कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है जैसे फारसी में 14वीं शताब्दी में। मलय में इसका अनुवाद कादी हसन ने "हिकायत बयाँ बुदिमान" के नाम से 1371 एडी में किया। इसका अन्तिम अनुवाद 2000 एडी में हुआ। इस पुस्तक का एक अंग्रेजी अनुवाद एक पादरी ने 1911 में किया था।[3] यह पुस्तक उसी अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी अनुवाद है। इन कहानियों में कुछ अश्लील कहानियाँ भी हैं वे यहाँ नहीं दी गयी हैं। इस पुस्तक की सम्पूर्ण कहानियों की सूची नहीं मिलती।

इस संग्रह में वास्तव में 72 कहानियाँ हैं जिनमें से एक इसके प्रारम्भ की कहानी है और शेष 71 कहानियाँ तोते द्वारा सुनायी गयी हैं। इसकी कई कहानियाँ जातक कथाऐं और कथासरित्सागर में पायी जाती हैं। यह संस्कृत साहित्य का एक उत्कृष्ट नमूना है।

---

[2] Toton Ki Lok Kathayen. By Sushma Gupta. Only E-Mail edition is available.

[3] This collection was translated by B Hale Wortham in 1911 under the title "The Enchanted Parrot". Published by Luzac & Co, London. 1911. This book is available on the Web Site : https://archive.org/stream/cu31924022986115#page/n27/mode/1up

इस संग्रह में एक स्त्री का पालतू तोता उस स्त्री को हर रात एक कहानी केवल इसलिये सुनाता है ताकि वह अपने पति की अनुपस्थिति में घर से बाहर अपने प्रेमी के पास न जा सके। इनमें से अधिकतर कहानियॉ स्त्री पुरुषों के अवैध सम्बन्धों उनसे उत्पन्न हुई समस्याओं और फिर बुद्धिमानी से उन परिस्थितियों से बाहर निकलने पर आधारित हैं। सत्तर दिन बीत जाने पर स्त्री का पति वापस आ जाता है और फिर सब कुछ ठीक हो जाता है।

हॉ इस विषय में मुझे एक बात व्यक्तिगत रूप से कहनी है कि जब मैं ये कहानियॉ अनुवाद कर रही थी तो कई स्थानों पर मुझे ऐसा लगा कि ये कहानियॉ पूरी नहीं हैं। ये मुझे कुछ अधूरी अधूरी सी लगीं। क्योंकि उन कहानियों का कोई ओर छोर नहीं मिलता या उनका आशय समझ में नहीं आता। इन कहानियों के इस तरीके से देने के कई कारण हो सकते हैं जिनमें अन्दर जाने की चेष्टा नहीं की गयी है। सो ये सब कहानियॉ वैसी की वैसी ही अनुवाद कर दी गयी हैं जैसी पुस्तक में लिखी हुई हैं। यदि इन कहानियों में से किसी कहानी को पढ़ने में कुछ अजीब सा लगे तो मैं इसकी क्षमापार्थी हूँ।

तो लीजिये पढ़िये "शुक सप्तति" अब हिन्दी में।

कहानियों का प्रारम्भ

बुद्धि की देवी शारदा को नमन

एक नगर है जिसका नाम है चन्द्रपुर। वहाँ का एक राजा था जिसका नाम था विक्रम सेन। वहीं एक कुलीन परिवार का एक आदमी हरिदत्त भी रहता था। उसकी एक पत्नी थी जिसका नाम था श्रृंगारसुन्दरी और उसका एक बेटा था जिसका नाम था मदन।

मदन का विवाह हो चुका था और उसकी पत्नी का नाम था प्रभावती। प्रभावती नगर के एक बहुत बड़े आदमी की बेटी थी। मदन एक अच्छा बेटा नहीं था। वह भोग विलास में ही लगा रहता था। वह केवल जुआ शराब और स्त्रियों में ही लगा रहता था और किसी और की उसे कोई चिन्ता ही नहीं थी। अपने बेटे को बुरे रास्ते पर जाते देख कर माता पिता को बहुत चिन्ता लगी हुई थी।

एक दिन त्रिविक्रम नाम के एक ब्राह्मण ने हरिदत्त के दुख को समझा तो वह उसके घर गया और साथ में तोते के रूप में अपना एक व्यक्तिगत दोस्त ले गया।

ब्राह्मण हरिदत्त के घर जा कर बोला — "प्यारे हरिदत्त। इस तोते की देखभाल करना और इसे अपने बेटे की तरह समझना। मुझे विश्वास है कि यह अपनी बुद्धिमानी और ज्ञान से तुम्हारा दुख दूर कर पायेगा।"

सो हरिदत्त ने उससे तोता ले लिया और अपने बेटे को दे दिया। बेटे ने उसे एक सोने के पिंजरे में रख कर अपने सोने के कमरे में रख लिया।

एक दिन तोते ने खुश खुश मूड में मदन से कहा — "मेरे बेटे। तुम्हारी नीचता के लिये तुम्हारे पिता बहुत रो रहे थे। तुम्हारे ये गलत रास्ते तुम्हें नष्ट कर देंगे जैसे उन्होंने देवशर्मा के साथ किया था।"

मदन बोला — "और यह देवशर्मा कौन था।"

तोता बोला — "एक नगर है पंचपुर नाम का। वहाँ सत्यशर्मा नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसके धर्मशाला नाम की पत्नी थी और देवशर्मा नाम का एक बेटा था।

देवशर्मा दैवीय ज्ञान प्राप्त करने के लिये इतना उतावला था कि वह अपने माता पिता के प्रति कर्तव्यों तक को भूल गया था। सो वह उस ज्ञान की खोज में दूर देश चल दिया।

वह भागीरथी के तीर पर पहुँचा और वहाँ पहुँच कर घोर तप करने लगा। एक दिन वह अपनी तीर्थयात्रा के लिये जा रहा था कि एक बगुला उड़ता हुआ उसके ऊपर से गुजरा और उसके ऊपर बीट कर गया।

साधु ने क्रोध से ऊपर देखा तो दुर्भाग्य से वह चिड़िया उसकी दृष्टि पड़ते ही तुरन्त ही मर कर नीचे गिर पड़ी और राख हो गयी।

देवशर्मा अपनी यात्रा पर आगे चला गया और एक ब्राह्मण के घर पहुँचा। वहाँ उसने भोजन और ठहरने की जगह माँगी तो ब्राह्मण ने अपनी पत्नी को पुकारा और उसकी आज्ञा से उसकी पत्नी ने ब्राह्मण को इतनी अच्छी चिड़िया जैसे कि वगुला को नष्ट करने के लिये बुरा भला कहा।

अन्त में उसने उससे यह कह दिया कि उस जैसे के लिये वहाँ कोई जगह नहीं है वह किसी और जगह जा कर शरण खोजे।

देवशर्मा इस बात कुछ क्रोधित हुआ पर फिर आगे चला गया। अपने क्रोध को देख कर उसे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था।

अन्त में वह वाराणसी पहुँच गया। वह वहाँ धर्म व्याध के घर ठहरने के लिये गया। धर्म व्याध एक बहुत ही ज्ञानी ब्राह्मण था जिसको एक शाप ने कसाई बना दिया था।

देवशर्मा को धर्म व्याध घर पर ही मिल गया। वह एक जंगली की तरह दिखायी देता था। उसके दोनों हाथों से खून टपक रहा था। उसकी इस शक्ल से ऐसा लग रहा था जैसे उसके सामने कोई राक्षस खड़ा हो।

देवशर्मा तो यह दृश्य देख कर बहुत ही डरा डरा सा खड़ा रह गया पर कसाई ने उसे नमस्ते की और उसे घर के अन्दर बुलाया। उसे भोजन खिलाया और उसे रहने की जगह दी।

जब देवशर्मा ने आराम कर लिया तो उसने कसाई से कहा — "आप मुझे बताइये कि आपने और आपकी पत्नी ने इतनी अच्छी बुद्धि कहाँ से सीखी। आपने यह दैवीय ज्ञान भी कब सीखा।"

कसाई बोला — "जब जिस आदमी के जिन परिस्थितियों में जो कर्तव्य होते हैं। जो आदमी बाहरी सुखों की ओर आकर्षित नहीं होता चाहे वे छोटे हों या बड़े। वह जो अपने पिता का आज्ञापालन करता है और जो सब दशाओं में समान रहता है वही सच्चा भक्त है उसी के पास सच्ची बुद्धि होती है और वही गुणवान होता है।

मैं और मेरी पत्नी ऐसे ही हैं। पर तुम? तुमने तो अपने पिता को ही छोड़ दिया है। तुम तो घर से निकल कर बाहर घूम रहे हो। तुम तो मेरी एक भी स्थिति के बारे में बोलने योग्य भी नहीं हो।

मैं अतिथि के स्वागत के कर्तव्यों का आदर करता हूँ इसी लिये मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे सका।"

देवशर्मा ने पूछा — "और पूर्ण अनुशासन कहाँ रहता है।"

कसाई बोला — "जो उन लोगों का आदर नहीं करते जिनका आदर करना चाहिये। जो दूसरों से घृणा करते हैं। ऐसे लोग कभी स्वर्ग नहीं जाते।"

कसाई की यह सलाह सुन कर देवशर्मा वापस लौट गया और फिर अपने घर जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने अपने कर्तव्य करने प्रारम्भ किये और फिर इतना प्रसिद्ध हो गया कि इस संसार में भी प्रसन्न रहा और दूसरे संसार में भी प्रसन्न रहा।"

तोता आगे बोला — "यही तुमको भी करना चाहिये। तुम्हें इस संसार में रह कर जिन परिस्थितियों में भी तुम रह रहे हो अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिये और तुम्हें अपने माता पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहिये।"

यह सुन कर मदन को बहुत पश्चाताप हुआ। वह भी घर वापस चला गया और अपने माता पिता की सेवा करने लगा। इसके शीघ्र पश्चात ही उसने अपने माता पिता की आज्ञा से उन्हें छोड़ दिया अपनी प्रभावती से भी विदा ली और एक दूर देश चला गया।

उसकी पत्नी उसकी अनुपस्थिति में कुछ दिन तो दुखी रही पर बाद में उसकी सहेलियों ने उसे सलाह दी कि वह अब अपना यह दुख त्याग दे और किसी दूसरे को खोजे जो उसे उसके इस अकेलेपन में सान्त्वना दे सके।

उन्होंने उसे समझाया कि पिता और पति सब बहुत अच्छे हैं पर वे तभी तक अच्छे हैं जब तक वे जीवित हैं। उनकी मृत्यु के पश्चात या फिर अगर वे मृत जैसे भी हों तो भी उनके सहारे अपना जीवन खराब करना बहुत बड़ी मूर्खता है। इसलिये यद्यपि तुम्हारा पति घर छोड़ कर चला गया है पर तुम तो अभी नौजवान हो तुम्हें इस तरह रोना शोभा नहीं देता।

प्रभावती ने देखा कि उसकी सहेलियों की सलाह में कुछ दम है सो वह तुरन्त ही उनकी सलाह पर काम करने चल दी।

उसे एक गणचन्द्र नाम के व्यक्ति से प्रेम हो गया। पर असल में वह अपने घर से कुछ इस तरह से गयी थी कि तोते ने उसको बहुत बुरा भला कहा और कहा — "तुम्हारा यह व्यवहार तो बहुत ही खराब है।"

तोते की यह सलाह सुन कर प्रभावती को इतना क्रोध आया कि वह अपने नौकर से यह कहने वाली थी कि उसके जाने के तुरन्त बाद वह उसकी गर्दन मरोड़ दे। पर जाने से पहले उसने एक क्षण प्रतीक्षा की और सोचा कि वह अपने कुल देवता को पान चढ़ा कर तब वहाँ से जायेगी।

जब वह इस काम में लगी हुई थी तो तोता बोला — "भगवान तुम्हें सफल करें जहाँ तुम जा रही हो पर तुम जा कहाँ रही हो।"

प्रभावती ने अपने मन में सोचा "ऊँह यह तो केवल एक चिड़िया है सो मैं इससे कुछ भी कह सकती हूँ।"

सो उसने हँस कर उससे कहा "मैं अपने प्रेमी से मिलने जा रही हूँ।"

तोता यह सुन कर आश्चर्य से बोला — "क्या? मैंने तो किसी भी कुलीन स्त्री को ऐसा करते नहीं सुना। खैर अगर तुमने अपना मन बना ही लिया है तो चाहे यह बात सही है या गलत मुझे लगता है कि तुम्हें जाना ही चाहिये।

क्योंकि जब ओछे चरित्र वाले दुखी होते हैं तो वे अपना मन किसी और चीज़ में लगाने की सोचते हैं जैसे कि एक ओछे चरित्र

वाली स्त्री ने एक व्यापारी के बेटे के बाल पकड़ कर खींच कर किया।"

प्रभावती ने तोते को आदर के साथ सिर झुका कर पूछा — "और फिर उसने क्या किया।"

तोता बोला — "अगर तुम अपने प्रेमी के पास जा रही हो तो अवश्य जाओ पर जाने से पहले मेरी यह कहानी सुनती जाओ।"

प्रभावती बैठ गयी और तोते ने अपनी कहानी सुनानी प्रारम्भ की —

1 मोहन और लक्ष्मी[4]

एक बार चन्द्रावती नाम की नगरी में एक राजा रहते थे जिनका नाम था भीम। उसी नगरी में एक और आदमी रहता था जिसका नाम था मोहन। वह वहाँ के एक बहुत बड़े आदमी का बेटा था और बहुत धनी था।

एक दिन वह उसी नगर में रहने वाले एक आदमी की पत्नी लक्ष्मी के प्रेम में पड़ गया। उसने एक दूसरी स्त्री पूर्णा को पकड़ा जो ऐसे कामों में बिचौलिये का काम करती थी और उसके हाथों लक्ष्मी को एक सन्देश तब भेजा जबकि उसका पति घर पर नहीं था।

पूर्णा को इस काम के लिये बहुत कुछ दिया गया था सो उसने वही कर दिया जो उससे कहा गया था। वह लक्ष्मी के घर गयी और उससे कहा — "इस नगर में एक आदमी है जो तुम्हारे आकर्षण में फॅस गया है। तुम उसे अपने घर बुला लो।"

लक्ष्मी बोली — "यह काम तो मुझे किसी भी सम्मान वाली स्त्री के लिये असम्भव लगता है। पर क्योंकि तुमने उसके साथ सौदा कर लिया है तो जैसा कि तुम कहती हो मैं वैसा ही करूॅगी। क्योंकि जैसी कि कहावत है —

हरि भी जहर को नहीं रोक सकते कछुआ अपनी पीठ पर धरती को लादे रहता है
समुद्र के अन्दर भी आग होती है ईमानदार लोग अपनी बात के पक्के होते हैं

[4] Mohana and Lakshmi. (Tale No 1)

जब पूर्णा ने यह सुना तो वह बहुत प्रसन्न हो गयी। शाम को वह लक्ष्मी को अपने घर ले गयी क्योंकि उसे मोहन को वहीं मिलना था। जब मोहन के आने का समय आया तो वह किसी कारणवश नहीं आ सका तो लक्ष्मी ने जो कुछ समय आनन्द से बिताने की सोच रही थी पूर्णा से कहा कि यदि मोहन नहीं आ पाया तो कोई बात नहीं वह किसी और को बुला ले।

तो पूर्णा ने वही किया जो लक्ष्मी ने उससे करने के लिये कहा पर उसने यह बड़ी भारी गलती कर दी कि वह किसी कारण से लक्ष्मी के पति को ही ले कर वहाँ चली आयी।"

तोता आगे बोला — "अब तो यह दशा बड़ी अजीब सी हो गयी। तुम क्या सोचती हो कि उसके पति ने क्या किया होगा और उसने स्वयं ने क्या किया होगा।"

प्रभावती और उसकी सहेलियों ने कहा — "हम तो बिल्कुल भी नहीं सोच सकते कि उन दोनों ने क्या किया होगा। तुम्हीं बताओ न।"

तोता बोला — "अवश्य। मुझे यह बात तुम्हें बता कर बहुत प्रसन्नता होगी यदि तुम लोग यहाँ कुछ देर प्रतीक्षा करो तो।"

वे प्रसन्नतापूर्वक वहाँ प्रतीक्षा करने के लिये तैयार हो गयीं। कुछ देर बाद तोते ने अपनी कहानी समाप्त की — "लक्ष्मी ने अपने पति को तुरन्त ही पहचान लिया। वह बोली — "तो यह तुम थे। तुम तो अप्रत्याशित रूप से बहुत जल्दी आ गये।"

उसने उसके बाल पकड़े और उसे यह कहते हुए घसीटती हुई ले गयी — "ओ गधे। तुम मुझसे सदा ही यह कहते रहे कि मैं बस केवल तुम्हीं से प्यार करता हूँ। अब मुझे पता चल गया है कि तुम क्या क्या करते रहते हो। तो अब मैं तुम्हें बताती हूँ। तुम्हें अपने इस किये पर पछताना पड़ेगा।"

अन्त में हरिदत्त उसे किसी तरह समझा बुझा कर अपने साथ घर ले गया।

प्रभावती और उसकी सहेलियों को तोते की यह कहानी बहुत अच्छी लगी और रात अब काफी जा चुकी थी सो सब सोने चले गये।

2 यशोदेवी और उसके जीवन परिवर्तन[5]

अगले दिन शाम को प्रभावती फिर से अपने प्रेमी के पास जाने के विषय में सोचने लगी तो उसने तोते से फिर इस विषय में सलाह मॉगी।

तोता बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। यदि तुम जाना ही चाहती हो तो अवश्य जाओ पर देख लो यदि तुम कठिनाइयों से बाहर निकलने में उतनी ही बुद्धिमान हो जितनी बुद्धिमान यशोदेवी थी तो अवश्य जाओ।"

प्रभावती ने पूछा — "और यह यशोदेवी कौन थी।"

तोता बोला — "यदि मैं तुम्हें उसके विषय में बताऊॅ और तुम्हें यहॉ रोक कर रखॅू तो कदाचित तुम तो मेरी गर्दन ही मरोड़ दोगी।"

प्रभावती बोली — "उसकी तुम चिन्ता न करो। जो कुछ होता है वह होने दो। मुझे तो यशोदेवी की कहानी सुननी ही है।"

तोते ने कहानी प्रारम्भ की — "एक बार एक नगर था जिसका नाम था नन्दन। उसके राजकुमार का भी यही नाम था। उसके एक बेटा था जिसका नाम था राजशेखर। राजशेखर की एक पत्नी थी जिसका नाम था शशिप्रभा।

एक बार धनसेन नाम का एक आदमी उससे मिला तो वह उसके प्यार में पागल हो गया। वह उससे मिलने की अपनी इच्छा के

---

[5] Yashodevi and Her Transmigration. (Tale No 2)

इतना अधिक आधीन हो गया था कि उसकी मॉ यशोदेवी ने उससे पूछा कि बेटा क्या बात है।

बहुत रो रो कर उसने मॉ को सब बताया और कहा कि उसे राजकुमार की पत्नी चाहिये। वह जानता था कि उसको लेना बहुत कठिन काम था पर वह उसके बिना नहीं रह सकता था।

यह सुन कर यशोदेवी ने उससे कहा कि वह प्रसन्न हो जाये। वह देखेगी कि वह क्या कर सकती है। उसने खाना छोड़ दिया और अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहन कर शशिप्रभा के पास गयी। साथ में वह एक कुतिया को भी ले गयी।

उसने एक दुखी की सी शक्ल बना ली और शशिप्रभा को एक ओर ले जा कर बोली — "तुम इस कुतिया को देख रही हो न? मैं तुम और यह कुतिया हम तीनों पिछले जन्म में बहिनें थे। जहॉ तक मेरा प्रश्न है मैं अपने प्रेमियों को आगे बढ़ने से बिल्कुल नहीं रोकती थी। तुम्हें केवल उनके पते ही मिलते थे और वे भी हिचकिचाहट के साथ।

पर हमारी बहिन के साथ ऐसा नहीं था। वह किसी भी आदमी से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहती थी। वह सदा उनको दूर ही रखती थी। तो देखो कि आज वह किस दशा में है। यह सदा अपना पिछला जन्म ही याद करती रहती है।

तुम्हारी उनमें कोई बहुत अधिक रुचि नहीं थी सो तुम्हें कदाचित अपनी पुरानी दशा के विषय में कुछ याद भी नहीं होगा। पर मुझे

देखो मुझे अपनी उस दशा का कुछ भी याद नहीं है क्योंकि मैंने अपने जीवन का बहुत अच्छी तरह से आनन्द लिया।

इसलिये मुझे तुम्हारे लिये दुख होता है और इसी लिये इस कुतिया को ले कर मैं तुम्हें तुम्हारी पिछली दशा की याद दिलाने आयी हूँ।

यदि तुम्हारा कोई प्रेमी है तो तुम्हें अपना वह सब कुछ उसे दे देना चाहिये जो वह तुमसे चाहता है और इस प्रकार अपने आपको ऐसे भविष्य से अपनी रक्षा करने चाहिये।

क्योंकि जो आदमी खुले हाथों से देता है उसे बहुत मिलता है। ऐसा कहा जाता है कि जो घर घर भीख मॉगते हैं वे बस केवल यही दिखाते हैं कि वे हैं। वे कुछ मॉगते नहीं बल्कि देने वाला उन्हें अपनी हैसियत के अनुसार ही उनकी सहायता कर देता है जिनको उसकी आवश्यकता होती है।"

शशिप्रभा को यशोदेवी की यह बात जॅच गयी। उसने उसे गले लगा लिया और बहुत रोयी और पूछने लगी कि वह अपने ऐसे भविष्य से कैसे बच सकती है।

इस पर यशोदेवी ने शशिप्रभा को अपने बेटे से मिलवा दिया और राजशेखर जिसको बहुत सारी अमूल्य भेंटें दे कर चुप कर दिया गया था उसने अपने पत्नी को धनसेन के साथ जाने दिया। उसने सोचा कि यह तो उसके लिये बहुत ही अच्छे भाग्य की निशानी थी।

इस प्रकार यशोदेवी ने राजकुमारी के राजकुमार को साथ धोखा किया और अपना उद्देश्य सीधा किया। सो अगर तुम इतनी ही चतुर हो जितनी कि यशोदेवी थी तो तुम जा सकती हो वरना घर रहो और सोने चली जाओ। अपना बेवकूफ न बनाओ।"

3 राजकुमार सुदर्शन और विमल[6]

एक बार विशाला नाम की एक नगरी में सुदर्शन नाम का राजा राज करता था। उसी नगर में एक व्यापारी रहता था जिसका नाम था विमल। विमल की दो बहुत सुन्दर पत्नियाँ थीं। उन दोनों को देख कर एक नीच आदमी कुन्तल का ध्यान उधर गया।

उसने यह निश्चय कर लिया कि वह उन्हें किसी तरह प्राप्त कर के ही रहेगा। सो एक दिन वह दुर्गा जी के मन्दिर गया। वहाँ उसने उन्हें एक बहुत ही अमूल्य भेंट दी और उनसे प्रार्थना की वह उसे बिल्कुल विमल की शक्ल का बना दें।

दुर्गा जी ने उसकी इच्छा पूर्ण की तो वह सीधे विमल के घर गया और उसकी अनुपस्थिति में उस घर पर कब्जा लिया। नौकरों को उसने बहुत सारी भेंटें दे कर अपनी ओर मिला लिया। विमल की पत्नियों से भी अच्छी जान पहचान कर ली। उन्होंने उसको वह सब कुछ दे दिया जो उसने चाहा।

नौकरों को इस बात का पता नहीं चल सका कि यह सब क्या हो रहा था। इन्होंने सोचा कि कदाचित विमल को सम्पत्ति के चलायमान होने का पता चल गया है इसलिये वह धन व्यय करने में अब पहले से अधिक खुले हाथ हो गया है।

[6] Prince Sudarshana and Vimala. (Tale No 3)

कुछ समय पश्चात असली विमल लौट कर आया तो उसे अपने घर का दरवाजा बन्द मिला। यह देख कर उसकी दशा तो बहुत खराब हो गयी। उसने चीखना चिल्लाना और कोसना प्रारम्भ कर दिया। जब वह ऐसा कर रहा था तो उसके कुछ सम्बन्धी लोग वहाॅ आ गये। उसने उनसे भी विनती की पर सब बेकार।

उसने उनसे कहा — “आइये मेहरबानी कर के आइये और मेरी सहायता कीजिये। इस दुष्टों के राजकुमार ने मेरे साथ धोखाधड़ी की है।”

तभी वहाॅ से कुछ व्यापारी लोग जा रहे थे तो उन्होंने आश्चर्य से यह दृश्य देखा पर उन्होंने भी उसकी कोई सहायता करने से मना कर दिया। सो आखिरकार वह पुलिस के सरदार के पास गया और अपनी शिकायत लिखवायी।

उसने कहा — “सर। शहर भर में मुझसे सबसे अधिक गन्दी तरह से बर्ताव किया गया है।”

पुलिस ने उसकी बात सुनी और उसका मामला सिलटाने के लिये विमल के घर पहुॅची। विमल उनके साथ नहीं गया पर वह उनके पीछे पीछे अवश्य गया। उसने बस उनको काफी पैसे दे दिये ताकि उनकी उसमें उत्सुकता बनी रहे।

जब वे विमल के घर पहुॅचे तो उन्होंने देखा कि विमल तो घर में ही है तो उन्होंने आपस में कहा कि यह तो ठीक ही है कि विमल तो घर में ही है। तभी असली विमल अपनी छिपे हुए स्थान से बाहर

निकल आया। यह देख कर तो सारे पुलिस वाले हैरान रह गये कि यह क्या। यह विमल कौन सा है और वह विमल कौन सा है। इनमें असली विमल कौन सा है और नकली कौन सा।

और इसके बाद तो बहुत शोर मचा जिसने बहुत नुकसान पहुँचाया। इसकी सारी जिम्मेदारी राजकुमार सुदर्शन को गयी। बस इसके बाद तो विद्रोह की आग भड़क उठी। भयंकर उत्पात मचने लगे। इस आग का बुझाना कठिन हो गया। राजकुमार की शान को बहुत बट्टा लगा।

फिर सारा मामला राजकुमार के सामने लाया गया तो उसने बहुत सोच विचार के बाद यह प्लान काम में लिया। उसने विमल की पत्नियों को अलग बुलाया और उनसे पूछा — "जब तुम लोगों का विमल से विवाह हुआ था तुब तुम्हें उसने भेंट में क्या दिया था? उसने तुम्हें कितना पैसा दिया? वह क्या काम करता है? उसके माता पिता क्या थे? उसके परिवार की क्या स्थिति थी?"

उन्होंने इन प्रश्नों का उत्तर साफ साफ दे दिया। शीघ्र ही उसे वह सब पता चल गया जो वह जानना चाहता था। फिर उसने वैसे ही प्रश्न उन दोनों आदमियों से भी पूछे। साफ था कि उन दोनों के उत्तर एक दूसरे से बहुत भिन्न थे।

फिर उसने उन दोनों आदमियों के उत्तर विमल की पत्नियों के उत्तरों से मिलाये तो जिसके उत्तर उन स्त्रियों के उत्तरों से मिल गये उसे पता चल गया कि वही असली विमल था। उसने फिर उसी

विमल को उसकी पत्नियाँ दे दीं। जबकि दूसरे दुष्ट विमल को नगर से बाहर निकाल दिया गया।

4 मूर्ख ब्राह्मण जिसने एक जादूगरनी से विवाह किया[7]

सोमप्रभा नाम की एक बस्ती थी जहाँ बहुत सारे ब्राह्मण रहते थे। वहीं एक ब्राह्मण ऐसा रहता था जो बहुत ही नेक और बुद्धिमान था उसका नाम था सोमसम। उसके एक बेटी थी जो बहुत सुन्दर और सुघड़ थी पर साथ ही साथ वह अपने डायन जैसे दुर्गुणों के लिये भी बहुत प्रसिद्ध थी।

इसका परिणाम यह था कि इतनी सुन्दर होते हुए भी उससे विवाह करने का साहस किसी को नहीं होता था। सोमसम बेचारा उसके लिये वर खोजने के लिये इधर इधर घूमता रहा। अपने इस घूमने के दौरान वह ब्राह्मणों के एक और नगर में पहुँच गया जिसका नाम था जनस्थान।

वहाँ उसको गोविन्द नाम का एक ब्राह्मण मिला जो जितना वह गरीब था उतना ही मूर्ख भी था। उसने उससे अपनी बेटी को लेने के लिये विनती की और गोविन्द ने उसकी खतरनाक बेटी से उसके सुन्दर होने के कारण विवाह कर लिया हालाँकि उसके दोस्तों ने उसे बहुत समझाया कि वह उससे कोई मतलब न रखे पर उसने उनमें से किसी की एक न सुनी।

---

[7] The Stupid Brahmana Who Married a Witch. (Tale No 4)

अब यह विवाह कोई बहुत सफल तो रहा नहीं क्योंकि दुलहिन तो बहुत ही चंचल लड़की थी और गोविन्द बहुत ही सुस्त किस्म का लड़का था। सो वह बेचारी यही सोच सोच कर दुखी होती रहती कि उसे इस लड़के पर थोप दिया गया है।

जैसा कि लोग कहते हैं कि बहुत गुणों वाला पति जीवन और शक्ति से भरपूर स्त्री के लिये उचित नहीं होता। एक साधु के लिये ऐसी शक्ति या तो बेकार होती है या फिर हानि पहुँचाने वाली होती है या फिर बुराई का स्रोत होती है।

एक दिन उसने गोविन्द से कहा कि "मुझे घर छोड़े बहुत समय हो गया है मैं एक बार अपने माता पिता से मिलना चाहती हूँ। मेरी बहुत इच्छा है कि तुम मुझे वहाँ ले चलो।"

गोविन्द राजी हो गया। उसने अपनी गाड़ी साफ की अपनी पत्नी को उसमें बिठाया और पत्नी के नगर की ओर चल दिया।

रास्ते में उनको एक नौजवान ब्राह्मण मिल गया जिसका नाम विष्णु था। जैसे ही उसने गोविन्द की पत्नी की ओर देखा तो उसके रूप का शिकार हो गया।

क्योंकि जैसा कि कहा गया है कि "प्रेम तो प्रथम दृष्टि में ही होता है। उसके बाद भावनाऐं जागती हैं और प्रेम का जन्म होता है। उसके बाद रातों की नींद उड़ जाती है निर्बल हो जाता है मन इधर उधर भटकने लगता है स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रहता आदमी पागल सा हो जाता है मूर्ख भी हो जाता है और फिर मर जाता है।"

बुद्धिमान लोगों का कहना है कि प्रेम मनुष्य में ये दस दशाऐं पैदा करता है।

उस नौजवान ने गोविन्द से कहा कि वह एक ब्राह्मण है उसका नाम विष्णु है और पास के नगर में रहता है। वह अकेले जाने में डरता है सो वह उसके साथ चलना चाहता है।

मूर्ख गोविन्द बिना किसी सन्देह के राजी हो गया सो विष्णु गोविन्द के साथ चल दिया। एक दिन शाम को उसकी पीठ पीछे गोविन्द की पत्नी के साथ उसने कुछ ऐसी बातें कीं कि वह उसके प्रेम में पड़ गयी।

उसने उसे अपने बारे में उसे सब कुछ बता दिया अपना नाम अपनी कहानी अपना परिवार। तभी गोविन्द वहाँ आ गया और जब वह अपनी गाड़ी में घुसने लगा तो विष्णु और गोविन्द की पत्नी ने उसे चोर कहा और उसे गाड़ी में आने से रोका।

कुछ देर तक झगड़ने के बाद विष्णु ने गोविन्द की पत्नी की जादुई शक्तियों की सहायता से गोविन्द को बहुत ज़ोर से पीट दिया।

सो गोविन्द पास के एक गाँव चला गया और वहाँ जा कर रोने चिल्लाने लगा। गाँव वाले आये और उन्होंने उससे पूछा कि क्या बात थी और वह इतनी ज़ोर ज़ोर से क्यों रो रहा है।

वह बोला — "मेरे अच्छे लोगों। एक दुष्ट ने मेरी पत्नी को हथिया लिया है और मेरी पिटायी की। कृपा कर के मेरी सहायता कीजिये।"

आखिर यह मामला पुलिस के सरदार के पास गया तो उसने विष्णु से उस सुन्दरी डायन को सामने लाने के लिये कहा। फिर उसने उन लोगों से पूछा कि उन लोगों को इस बारे में क्या कहना है।

विष्णु बोला — "यह मेरी पत्नी। हम लोग शान्ति से यात्रा कर रहे थे कि हमें यह आदमी मिल गया और अचानक यह हिंसा की भावना से भर गया और उसने हमारे ऊपर हमला कर दिया।"

उसके बाद पुलिस के सरदार ने गोविन्द से पूछा तो गोविन्द ने भी लगभग वही उत्तर दिया जो विष्णु ने दिया था।

संयोग से वहाँ से एक भविष्य बताने वाला जा रहा था पर सच बताना तो उसके वश में नहीं था। तो अब प्रश्न यह था कि मजिस्ट्रेट इसका फैसला कैसे करे।

भविष्य बताने वाले ने उनसे कुछ और प्रश्न पूछे। उसने पूछा — "तुम लोग सड़क पर जब मिले थे तो किस समय मिले थे।"

दोनों एक साथ बोले — "खाना खाने के बाद।"

फिर वह भविष्य बताने वाला उन दोनों आदमियों को एक ओर ले गया और उनसे अलग अलग पूछा "तुम्हारी पत्नी ने क्या खाया था।"

अब गोविन्द को तो पता था कि उसकी पत्नी ने क्या खाया था सो उसने उसके प्रश्न का उत्तर तुरन्त ही दे दिया पर विष्णु नहीं बोल सका क्योंकि जब उसे पता ही नहीं था कि उसने क्या खाया था तो

वह क्या बताये। इस तरह से वह यह मुकदमा हार गया और सबकी हॅसी का पात्र बना।

उसने गोविन्द को सलाह दी कि वह अपनी पत्नी को राक्षसों की दुनियॉ में भेज दे और इस सदा की परेशान करने वाली से छुटकारा पा ले।

क्योंकि ऐसा कुछ कहा गया है —

एक विद्वान आदमी जिसे प्यार और शराब मिले
एक नाचने वाला जो खराब नाचता हो
एक भक्त जो मूर्ख हो
दूसरों पर जीवित रहने वाला जो बूढ़ा हो और थक गया हो
एक ब्राह्मण जिसे धर्म ग्रन्थों का ज्ञान न हो
एक राज्य जिस पर एक बच्चा राज करता हो
एक मित्र जो सलाह न दे सकता हो और जो धोखा देता हो
एक पत्नी जो अपनी सुन्दरता और यौवन का आनन्द लेने के लिये परपुरुष को प्रेम करती हो

अक्लमन्द लोग ऐसे लोगों के पास भी नहीं फटकते।

एक आदमी जिसके दिमाग के ऊपर प्रेम ने परदा डाल दिया हो जो साधारण सी सामान्य सलाह न सुनता हो बड़ी बड़ी सड़कों पर अपनी प्रिये को साथ लिये घूमता हो तो उस पर हमला अवश्य होगा जैसे कि गोविन्द के ऊपर हुआ। क्योंकि उसने अपने दोस्तों की सलाह नहीं सुनी।

5 रानी और हँसती हुई मछली[8]

उज्जयिनी नाम के एक नगर में एक राजा राज करता था जिसका नाम था राजा विक्रमदित्य। उसकी पत्नी का नाम था कामलीना। कामलीना एक अच्छे कुलीन परिवार की बेटी थी और राजा की प्रिय पत्नी थी।

एक दिन राजा उसके साथ खाना खा रहा था तो उसने उसको थोड़ी सी भुनी हुई मछली दी। कामलीना ने मछली की तरफ देखा और बोली — "सर। मैं तो इन आदमियों की ओर देख भी नहीं सकती इन्हें छूना तो दूर।"

यह सुन कर मछली बहुत ज़ोर से हँस पड़ी और इतनी ज़ोर से हँसी कि उसकी हँसी की आवाज सारे नगर में गूँज गयी। राजा मछली की इस हँसी का अर्थ बिल्कुल नहीं समझ सका सो उसने उन ज्योतिषियों से पूछा जो चिड़ियों की भाषा जानते थे कि मछली के इस प्रकार हँसने का क्या अर्थ था।

जब कोई भी राजा को यह नहीं बता सका तो उसने अपने निजी पंडित को बुला भेजा जो नगर में ब्राह्मणों का सरदार था और उससे कहा कि अगर वह इसका अर्थ नहीं बता सका कि मछली रानी की कही बात पर इतने ज़ोर से क्यों हँसी थी तो वह उसे और नगर के सारे ब्राह्मणों को राज्य से बाहर निकाल देगा।

---

[8] The Queen nd the Laughing Fish. (Tale No 5)

पंडित यह सुन कर बहुत परेशान हो गया। उसने राजा से कुछ दिनों की मोहलत माँगी और अपने घर चला गया। उसको इस बात का पूरा विश्वास था कि उसे और अन्य ब्राह्मणों को राज्य से अवश्य ही बाहर निकाल दिया जायेगा क्योंकि उसका इस प्रश्न का उत्तर पता करना बिल्कुल असम्भव सा लग रहा था।

सो वह उदास रहने लगा। जैसे जैसे मोहलत के दिन समाप्त होते जा रहे थे प्रश्न का उत्तर न खोज पाने के कारण पंडित की उदासी बढ़ती ही जा रही थी।

अब पंडित की एक बेटी थी वह बहुत होशियार थी। उसने देखा कि उसका पिता दिन प्रतिदिन उदास रहता है।

तो उसने अपने पिता से पूछा — "पिता जी। क्या बात है आप इतने उदास क्यों हैं। आप अपनी समस्या मुझे बताइये। कदाचित मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूँ। चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आयें बुद्धिमान लोगों को आत्मसंयम नहीं खोना चाहिये। क्योंकि ऐसा कुछ कहा गया है —

क्योंकि मनुष्य जो सम्पन्नता में प्रसन्न नहीं होता
खराब समय आने पर जो साहस नहीं हारता
कठिनाइयों में भी जम कर खड़ा रहता है
ऐसा मनुष्य एक आभूषण की तरह होता है और संसार की रक्षा करता है

तब ब्राह्मण ने उसे अपनी सारी कहानी सुनायी कि किस तरह राजा ने उसे और सारे ब्राह्मणों को देश से निकालने की धमकी दी

है। क्योंकि इस संसार में कोई भी ऐसा आदमी नहीं है जिसकी मित्रता और प्रेम पर विश्वास किया जा सके। और फिर उस राजा का तो कहना ही क्या है जो अत्याचार के रास्ते पर चलता हो।

क्योंकि यह भी कहा गया है कि "कौए में सफाई, जुआ खेलने वाले में ईमानदारी, सर्प में नम्रता, एक नपुंसक में शक्ति, एक पिये हुए आदमी में सत्यता और राजा में दोस्ती किसने देखी है।

इसके अलावा नदी में, जंगली जानवरों में, हथियार से लैस लोगों में, स्त्रियों में, राजकुमारों में कभी विश्वास मत रखो। राजा लोग तो यूनीफार्म में सज्जित सिपाही की तरह जंगली और अपने तरीकों में साँपों की तरह टेढ़े होते हैं जो तुम्हारे ऊपर तुम्हारा बुरा करने के लिये आ जाते हैं।

एक राजा अपनी मुस्कुराहट से मार देता है। वह तुम्हें सम्मान दे सकता है पर वह खतरनाक है। हाथी अपने ज़रा से छूने से ही मार देता है। और साँप के तो सहलाने से ही आदमी मर जाता है।

इतने सालों तक मैंने राजा की बड़ी ईमानदारी से सेवा की है फिर भी आज वह मेरा शत्रु बन गया है और मुझे और मेरे साथी ब्राह्मणों को राज्य से बाहर निकालने पर तैयार है।

यह भी कहा गया है कि एक आदमी को अपने परिवार के लिये अपना सब कुछ छोड़ देना चाहिये। अपने गाँव के लिये उसे अपना परिवार छोड़ देना चाहिये। अपने देश के लिये अपना गाँव छोड़

देना चाहिये पर अपना जीवन बचाने के लिये उसे सारा संसार छोड़ देना चाहिये।"

ब्राह्मण की बेटी ने अपने पिता की यह बात सुन कर कहा — "पिताजी। यह सब जो आपने अभी कहा वह सब सच है पर उस नौकर का कोई आदर नहीं करेगा जिसे राज्य से बाहर निकाल दिया गया हो। क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है —

किसी आदमी का चरित्र चाहे बहुत ऊँचा क्यों न हो और चाहे वह कितना ही सामान्य ही क्यों न हो यदि वह अपने राजा की सेवा करता है, चाहे वह राजा कोई भी हो, तो उससे उसे कुछ नहीं मिलेगा।

राजा के सामने तो जो कोई भी पहला आदमी आयेगा तो फिर वह चाहे गँवार हो या बुद्धिमान हो सम्मानित हो या अपमानित वह उसी को अपनी सेवा में ले लेगा क्योंकि राजा, स्त्रियाँ और बेलें उसी को पकड़ लेते हैं जो भी उनके पास होता है।

इसके अलावा कोई आदमी विद्वान, शक्तिशाली, कला जाने वाला, ऊँची ऊँची इच्छाऐं रखने वाला और अपने कर्तव्य पालन में चतुर भी हो सकता है पर फिर भी यदि उसे राजा का स्नेह न प्राप्त हो तो वह कुछ भी नहीं।

यदि कोई आदमी कुलीन घराने में पैदा हुआ हो योग्य हो पर यदि वह राजा की निगाहों में नहीं आता तो वह अपना सारा जीवन भीख माँगने और कष्ट में ही गुजार देता है।

जिसे रोग लग जाते हैं या फिर जो मगर या राजाओं के हाथ में पड़ जाता है या कोई मूर्ख जो कठिनाइयों में से बाहर निकलना नहीं जानता वह अपने जीवन में अपना पद बना कर नहीं रख सकता। क्योंकि कहा गया है कि —

राजा उन बुद्धिमान और होशियार लोगों के सामने कुछ भी नहीं हैं जो शेर चीते साँप हाथी जैसे जानवरों को अपने नियन्त्रण में ला सकते हैं। पर वे लोग जो बुद्धिमान हैं और राजा के स्नेह पर भरोसा करते हैं वे ही श्रेष्ठता की सीढ़ी चढ़ते हैं। चन्दन वन केवल मलय पर्वत पर ही पाये जाते हैं।

जो ऊँचे पद के निशान हैं जैसे छत्र, हाथी, घोड़े तो ये राजा केवल उन्हीं को ही देता है जिनसे वह प्रसन्न होता है और उन्हें सम्मान देना चाहता है। आप राजा के स्नेह पात्र हैं और सम्माननीय हैं इसलिये मेरे प्रिय पिता आप निराश न हों।

प्रधान मन्त्री का तो यह कर्तव्य ही है कि वह समय समय पर राजा के दिमाग से सन्देह निकालता रहे। इसलिये अब आप प्रसन्न हो जाइये और मैं आपके इस प्रश्न का उत्तर खोजने की चेष्टा करती हूँ कि मछली के इतने ज़ोर से हँसने का क्या अर्थ था।"

अपनी बेटी से यह सलाह पा कर ब्राह्मण को बहुत सन्तुष्टि हुई। वह तुरन्त ही राजा के पास गया और जो कुछ उसकी बेटी ने उससे कहा था उसे जा कर बता दिया। राजा तो यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने ब्राह्मण की बेटी को तुरन्त ही बुलवा लिया।

ब्राह्मण की बेटी आयी और बहुत देर तक राजा को अभिवादन करती रही फिर बोली — "सर। आप इन ब्राह्मणों के साथ इतने बुरे तरीके से व्यवहार न करें। इसमें इनका कोई दोष नहीं है।

कृपा कर के आप मुझे बताऐं कि आपने मछलियों से किस तरह की हॅसी सुनी थी। फिर भी क्योंकि मैं एक स्त्री हू क्या आप मुझसे ऐसे प्रश्न का उत्तर जानने के लिये शर्मा नहीं रहे हैं?

क्योंकि एक राजा यदि नीच भी होता है तो भी वह दूसरों की तरह का नहीं होता। उसका अपना एक दैवीय रूप होता है। आप राजा विक्रमदित्य जिनका नाम ही यह बताता है कि आपके अन्दर कोई दैवीय शक्ति है। क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है कि —

इन्द्र देव से शक्ति आती है, आग से गर्मी मिलती है, यम से क्रोध मिलता है, कुबेर धन देते हैं, पर राजा कामदेव और विष्णु का मिला जुला रूप है। आपको केवल अपने आपको ही दोषी ठहराना चाहिये क्योंकि सन्देह और कठिनाइयों को दूर करना आप ही का काम है।

अब आप वह सुनिये जो मैं आपसे कहती हॅू —

मछली मछली उन्होंने प्लेट पर रख दी
वे हॅस पड़ीं जब रानी ने उनको आदमी बताया

योर मैजेस्टी क्या आप जानना चाहेंगे कि इसका क्या अर्थ है आप इस पर बार बार सोचिये और यदि आप न जान पायें तो मुझे

बुला लीजियेगा। किसी भी तरह आप रानी की वफादारी पर सन्देह नहीं कर पायेंगे क्योंकि आपको पता है कि वह कभी महल के बाहर नहीं जाती।

अब न तो राजा और न ही कोई दरबारी कोई भी ब्राह्मण की बेटी की कही गयी इन लाइनों का अर्थ बता सका। सो ब्राह्मण की चतुर बेटी उन सबको आश्चर्य में पड़ा छोड़ कर वहाँ से चली गयी।

6 सुमति जयन्ती और गणेश[9]

इस पहेली को सुलझाने के चक्कर में राजा को रात भर नींद नहीं आयी क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि —

उसे नींद कैसे आ सकती है जिसके ऊपर कर्ज चढ़ा हो या जिसकी पत्नी नीच हो और जो शत्रुओं से घिरा हो।

सो सारी रात खराब करने के बाद अगले दिन सुबह ही राजा ने ब्राह्मण की बेटी को फिर से बुला भेजा और उससे कहा — "मैं तो यह पता नहीं कर पाया कि वह मछलियॉ रानी पर क्यों हॅसी थीं।"

ब्राह्मण की बेटी बोली — "यह बात योर मैजेस्टी को मुझसे नहीं पूछनी चाहिये क्योंकि आप उस व्यापारी की पत्नी की तरह पछता सकते हैं जो यह जानने का पक्का इरादा कर चुकी थी कि वे रोटियॉ कहॉ से आयीं।"

राजा ने पूछा — "और वह क्यों पछतायी थी।"

तब ब्राह्मण की बेटी ने राजा को यह कहानी सुनायी —

एक नगरी है जिसका नाम है जयन्ती। उस नगरी में एक सुमति नाम का व्यापारी रहता था। उसकी पत्नी का नाम था पद्मिनी। सुमति बेचारे का सारा पैसा डूब गया था इसलिये उसके परिवार ने उसका साथ छोड़ दिया क्योंकि यह तो सभी जानते हैं कि धन और मित्रता ही एक साथ रहते हैं।

---

[9] Sumati Jayanti and Ganesha. (Tale No 6)

जिसके पास पैसा है उसके पास दोस्त हैं और सम्बन्धी हैं।

जिसके पास पैसा है उसके पास बुद्धि है और वास्तव में वही आदमी महत्वपूर्ण भी है।

महाभारत में भी कहा गया है कि पाँच प्रकार की दशाऐं होती हैं जिनमें किसी भी आदमी को मरा हुआ जानना चाहिये – गरीबी, बीमारी, मूर्खता, देश निकाला और निराशापूर्ण दासत्व।

इसके अलावा कोई भी अनजान आदमी जो धनी है तो वह अपना सम्बन्धी है पर जो अपना सम्बन्धी है और यदि वह निर्धन है तो हम उसे नहीं जानते।

सो अपना सारा पैसा खोने के बाद यह व्यापारी भूसा और लकड़ी बाजार में बेचा करता था। एक दिन उसे दोनों में से कुछ भी नहीं मिला बल्कि उसे लकड़ी की बनी हुई एक गणेश जी की मूर्ति मिल गयी। उसने अपने मन में सोचा कि इससे उसका काम चल जायेगा क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है —

रोटी खाने के लिये कोई भूखा आदमी क्या नहीं कर सकता और एक ऐसा आदमी जिसका सब कुछ खो गया हो उसका तो विवेक भी समाप्त हो गया होता है ऐसे लोग तो कोई भी अपराध कर सकते हैं। जो किसी सम्मानित व्यक्ति के सपने में भी नहीं आयेगा ऐसा आदमी उस काम को तो बड़े आराम से कर लेगा।

सो उसने उस लकड़ी की मूर्ति को लकड़ी के लिये तोड़ने का विचार किया। तभी गणेश जी ने कहा — “यदि तुम मुझे छोड़ दो

तो मैं तुम्हें प्रतिदिन घी चीनी की बनी हुई पाँच रोटियाँ दूँगा। तुम उन्हें लेने के लिये यहाँ आ जाना पर एक बात याद रखना कि इस बात को तुम किसी से कहना नहीं। यदि तुमने यह बात किसी से कही तो बस समझ लो कि फिर मेरा तुम्हारा यह सौदा समाप्त।"

व्यापारी इस बात पर तैयार हो गया। उसने गणेश जी की मूर्ति को ऐसे ही छोड़ दिया और गणेश जी ने उसे घी चीनी से बनी पाँच रोटियाँ दे दीं। वह उन्हें ले कर घर चला गया और जा कर उन्हें अपनी पत्नी को दे दिया।

उनमें से कुछ रोटियों से तो उसने अपने परिवार को सन्तुष्ट किया शेष बची हुई रोटियाँ अपनी एक सहेली को दे दीं। एक दिन उसकी सहेली ने कहा — "तुम्हारी ये रोटियाँ तो बहुत स्वाद है कहाँ से आयीं।"

पद्मिनी इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दे सकी क्योंकि उसको तो स्वयं को ही पता नहीं था कि वे कहाँ से आती थीं। सहेली ने आगे कहा कि यदि उसने यह बात उसे न बतायी तो उनकी दोस्ती समाप्त। क्योंकि जैसा कि कहा गया है – "देना, लेना, भेद बाँटना, प्रश्न पूछना, साथ में बैठ कर खाना खाना – दोस्ती की ये पाँच निशानियाँ हैं।"

पद्मिनी बोली — "मुझे तो यह नहीं पता पर मेरे पति को पता है पर वह कहते हैं कि यह एक भेद की बात है और वह उसे मुझे नहीं बतायेंगे। चाहे मैं उनसे सौ बार भी क्यों न पूछूँ पर वह मुझे

किसी भी स्थिति में नहीं बतायेंगे। इसलिये उनसे इस बात को पूछने का कोई लाभ नहीं होगा।"

उसकी सहेली बोली — "तब तो मुझे तुमसे कहना चाहिये कि यदि तुमने यह बात पता नहीं की तो तुम अपने यौवन और सुन्दरता को यों ही गॅवा रही हो।"

सो पद्मिनी ने एक बार फिर अपने पति से पूछा कि ये रोटियॉ कहॉ से आयीं। व्यापारी बोला — "यह सब भाग्य का खेल है। क्योंकि ऐसा कुछ कहा गया है कि यदि भाग्य तुम्हारी ओर हो तो तुम्हारी सारी इच्छाऐं पूरी हो जाती हैं।

वह तुम्हें हर वह वस्तु दे देगा जो तुम्हारी इच्छा होगी चाहे वह कहीं किसी दूर के टापू से आयी हुई ही क्यों न हो चाहे संसार के दूसरे कोने पर हो या फिर समुद्र की तली में ही क्यों न हो।

एक बार की बात है कि एक चूहा अपने लिये अपना बिल बना रहा था कि वह सॉप के मुॅह में जा गिरा। सॉप को कई दिनों से कुछ खाने को नहीं मिला था और वह भूखा मर रहा था पर देखो भाग्य की बात कि उसे इतना अच्छा रसीला खाना मिल गया। उसको खा कर वह अपने रास्ते चला गया। इसलिये भाग्य ही मनुष्य के ऊपर उठने और नीचे गिरने का कारण है।"

पद्मिनी ने जब देखा कि उसका पति तो उसके विषय में कुछ बता ही नहीं रहा है तो उसने खाना खाना छोड़ दिया। अब तो व्यापारी कठिनाई में पड़ गया।

उसने अपनी पत्नी से कहा — “यदि मैंने तुम्हें बताया तब तो बहुत बड़ा अनर्थ हो जायेगा और बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी हो जायेगी और तुम्हें उसका बहुत दुख होगा। इसलिये अच्छा हो अगर तुम उसे न ही पूछो तो।”

अब पद्मिनी तो पति की कोई बात सुनने वाली नहीं थी। वह तो बस अपनी जिद पर ही अड़ी रही तो उसके पति को उसे बताना ही पड़ा — “जब भगवान किसी का सर्वनाश चाहते हैं तो सबसे पहले उसकी बुद्धि हर लेते हैं इससे वह यह नहीं जान पाता कि उसके लिये अच्छा क्या है और बुरा क्या है। वही हाल तुम्हारा हुआ है।”

ब्राह्मण की बेटी आगे बोली — “इस पकार योर मैजेस्टी। सुमति की मूर्ख पत्नी ने उसे यह भेद बताने के लिये विवश कर दिया।

क्योंकि देखिये भगवान श्री राम भी सोने के हिरन को पहचानने में असमर्थ रहे। राजा नहुष ने अपने रथ को कहारों की जगह ब्राह्मणों से उठवाया। अर्जुन गाय और बछड़ा दोनों ले गया। युधिष्ठिर ने अपनी पत्नी और अपने चारों भाइयों को जुए में दॉव पर लगा दिया। सो अक्सर भले लोग भी मुसीबत में पड़ने पर मूर्ख बन जाते हैं।

खैर पद्मिनी ने रोटियों का भेद अपने पति से उगलवा ही लिया और जा कर अपनी सहेली को बता दिया। अब इसका परिणाम

क्या हुआ? कि उसकी सहेली ने अपने पति को गणेश जी के पास भेजा। जब सहेली का पति गणेश जी के पास पहुँचा तो गणेश जी ने उसे रोटियाँ दे दीं।

अगले दिन रोज की रोटी लेने के लिये सुमति के साथ पद्मिनी भी गणेश जी के पास गयी तो उन्होंने उससे साफ साफ कह दिया कि अब उनका उनके पास आने का कोई काम नहीं था क्योंकि सौदे की शर्त तो टूट चुकी थी और उसके भाग की रोटियाँ किसी दूसरे को दे दी गयी थीं।

यह सुन कर पद्मिनी के पति ने पद्मिनी को बहुत डाँट लगायी और वे अपने किये पर रोते पछताते घर चले गये।

इसी लिये मैं कहती हूँ कि योर मैजेस्टी कि उन लाइनों का अर्थ समझने की चेष्टा न करें कहीं ऐसा न हो कि उनके अर्थ को जानने के बाद आपको पछताना पड़े। आप उनके अर्थ को मेरी सहायता के बिना स्वयं ही समझने की चेष्टा करें।"

इतना कह कर वह वहाँ से उठ कर चली गयी।

7 ब्राह्मण और जादुई शाल[10]

राजा उस रात भी न सो सका। वह ब्राह्मण की बेटी की बात पर सारी रात विचार करता रहा पर उसकी कुछ समझ में नहीं आया। अगले दिन सुबह उसने ब्राह्मण की बेटी को उसके घर से फिर से बुलवा भेजा। उसके आने पर राजा ने उससे फिर विनती की कि वह उसे उन लाइनों का अर्थ जल्दी से जल्दी बताये।

ब्राह्मण की बेटी बोली — "योर मैजेस्टी। आपको देवताओं से जिद नहीं करनी चाहिये कहीं ऐसा न हो कि आपको फिर पछताना पड़े जैसे कि एक ब्राह्मण को स्थगिका से प्रेम कर के पछताना पड़ा।

कहीं एक नगर था, कहाँ था यह बात कोई मायने नहीं रखती, जिसके राजा का नाम था वीराभ्य। उसकी नगरी में एक ब्राह्मण रहता था जिसका नाम था केशव।

एक दिन उसके दिमाग में आया कि उसके पिता ने जो सम्पत्ति उसके लिये छोड़ी है उसे बढ़ाया जाये क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है कि —

जो शान तुम अपने गुणों से अर्जित करते हो वही सच्ची शान है। दूसरे नम्बर की शान वह है जो तुम्हें अपने पिता से मिलती है पर जो शान तुम्हें कहीं दूर से मिलती वे बेकार है।

---

[10] Brahman and the Magical Cloak. (Tale No 7)

सो उसने अधिक पैसा कमाने के लिये इधर उधर घूमना प्रारम्भ कर दिया। जब वह घूम रहा था तो वह कई नगरों से हो कर गुजरा कई पवित्र स्थानों से हो कर गुजरा। अन्त में वह एक दूर की जगह पहुँच गया। वहाँ उसे एक साधु मिला जो पालथी मार कर ध्यान में बैठा हुआ था।

ब्राह्मण उस साधु के पास पहुँचा और उसे सिर झुका कर प्रणाम किया। साधु एक पल के लिये अपने ध्यान से जागा तो ब्राह्मण को देख कर पूछा — "इस संसार में किसके प्रति स्वतन्त्रता दिखानी चाहिये। किसकी रक्षा करनी चाहिये और किसको ऐसी वस्तु देनी चाहिये जो संसार में मिलनी असम्भव हो।"

ब्राह्मण उठ कर खड़ा हो गया और बोला — "मुझे। मैं धन की खोज में निकला हूँ।"

साधु को पता था कि उसके पास आने वाला एक ब्राह्मण है सो वह उसके मुँह से ऐसी बात सुन कर सकते में आ गया क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है कि —

गरीबी की दशा में किसी आदरणीय व्यक्ति को भीख माँगते देख कर जो उसे नहीं माँगनी चाहिये दिमाग को परेशान करता है चाहे देने वाला देने के लिये तैयार ही क्यों न हो।

एक भले और नेक आदमी के लिये चाहे वह स्वयं कितनी ही कठिनाई में क्यों न हो उसे अपने कर्तव्य का पालन करना ही

चाहिये। चन्दन के पेड़ को हजारों टुकड़े क्यों न कर दिये जायें फिर भी उसका हर टुकड़ा शीतलता देने का गुण रखता है।

साधु ने तब अपने पास आने वाले को एक जादू का शाल दिया और कहा — "जब भी तुम इसे हिलाओगे तभी इसमें से पॉच सौ सोने के सिक्के निकल पड़ेंगे। पर तुम इसे किसी और को नहीं देना और किसी को बताना भी नहीं कि यह पैसा तुम्हारे पास कहॉ से आया।"

ब्राह्मण ने साधु को धन्यवाद दिया और वह शाल ले कर वहॉ से चला गया। अगली सुबह उसने उसे हिलाया तो लो तुरन्त ही उसमें से पॉच सौ सोने के सिक्के निकल पड़े। वह अपनी यात्रा पर चलता रहा और एक रतुआवती नाम के गॉव में आ पहुॅचा।

वहॉ उसने एक नौजवान लड़की स्थगिका को देखा तो वह तो उससे बुरी तरह प्यार करने लगा। उसने देखा कि ब्राह्मण के पास तो बहुत पैसा है पर वह यह पता नहीं कर सकी कि इतना पैसा उसके पास आया कहॉ से। वह अपनी मॉ पर बहुत विश्वास करती थी सो उसने अपना सन्देह अपनी मॉ से कहा।

उसने कहा — "मॉ। यह ब्राह्मण करता क्या है क्योंकि इसके पास तो बहुत सारा पैसा है। यह इसके पास आता कहॉ से है?"

फिर उसने ब्राह्मण से पूछा पर उसने तो उसे बताया नहीं। चिन्ता दिखाते हुए उसने आखिर उससे बात निकलवा ही ली कि वह पैसा उसे वह जादुई शाल देता था।

अब इसका क्या परिणाम हुआ। कि उसने ब्राह्मण के सो जाने की प्रतीक्षा की और जब वह सो गया तो उसने उसका शाल चुरा लिया। अब क्या था ब्राह्मण का सारा पैसा समाप्त हो गया तो लड़की की माँ ने भी उसको बाहर जाने का दरवाजा दिखा दिया।

क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है कि —

दूसरा जो हमारे ऊपर विश्वास करता है उसे धोखा देने में कोई अधिक होशियारी की आवश्यकता नहीं है और न ही किसी ऐसे को मारने में अधिक साहस की आवश्यकता है जो सो रहा हो।

जब ब्राह्मण सो कर उठा तो उसे अपना जादुई शाल कहीं दिखायी नहीं दिया। वह तुरन्त ही मजिस्ट्रेट के पास जा कर शिकायत लिखवाने के लिये गया कि उसकी कोई चीज़ चोरी हो गयी है। मुकदमा चला तो माँ और बेटी इसमें अपराधी पायी गयीं।

माँ बोली — "इस बेकार आदमी ने मेरी बेटी से प्यार किया और यह शाल की कहानी तो बस ऐसे ही बना रहा है। कोई भी समझदार आदमी इसकी इन बेकार की बातों पर विश्वास नहीं करेगा। प्रारम्भ से ले कर अन्त तक की सब कहानी इसकी गढ़ी हुई है।

यह मेरे घर आया तो मेरे नौकरों ने इसे विदेशी जान कर इसे घर से बाहर निकाल दिया। इसका शाल हमने उसी को वापस भिजवा दिया जिसका वह था।"

इस तरह यह मुकदमा ब्राह्मण के विरुद्ध सुना दिया गया। अपना भेद स्थगिका पर खोल देने के कारण ब्राह्मण ने अपना शाल भी खोया और स्थगिका को भी खोया। यदि आप अपनी उत्सुकता को वश में नहीं करेंगे तो यही दशा योर मैजेस्टी की भी हो सकती है।"

इतना कह कर ब्राह्मण की बेटी फिर उठी और फिर अपने घर चली गयी।

8 व्यापारी जिसने घर और जायदाद खोयी[11]

राजा अभी भी उन उन लाइनों का अर्थ समझने में असमर्थ था सो अगले दिन उसने ब्राह्मण की बेटी को फिर बुला भेजा।

ब्राह्मण की बेटी ने आते ही कहा — "योर मैजेस्टी आपको इतना अधीर नहीं होना चाहिये। चाहे राजा अपने किसी अच्छे आदमी को अपना निशाना बना रहा हो या फिर किसी बुरे आदमी को पर एक राजा को इतना जिद्दी नहीं होना चाहिये।

राजा तो एक शरीर की भाँति होता है और उसकी जनता उसके शरीर के अंग होते हैं जिनका कर्तव्य राजा की आज्ञा का पालन करना होता है। फिर भी यदि मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँ तो आपका कुछ बुरा ही होगा जैसे कि एक व्यापारी के साथ हुआ कि उसने अपना घर भी खोया और सब कुछ खोया।

राजा ने तुरन्त पूछा — "वह कैसे?"

तब ब्राह्मण की बेटी ने उस व्यापारी की कहानी कुछ ऐसे सुनायी —

"एक नगरी है जिसका नाम है त्रिपुर। उसमें राजा विक्रम रहते थे। उसी नगरी में एक व्यापारी भी रहता था जिसकी पत्नी का नाम था सुभगा। सुभगा बहुत ही हल्के दिमाग की स्त्री थी और जो

---

[11] The Merchant Who Lost His House and the Property. (Tale No 8)

चाहती थी वही करती थी सो व्यापारी उसको अपनी सीमा में नहीं रख पाता था।

एक बार वह नगरी में इधर उधर घूम रही थी और कोई शरारत करने के मूड में थी कि उसको एक व्यापारी दिखायी दे गया जो एक यक्ष के घर में रहता था। उसे देखते ही वह उसके प्रेम में पड़ गयी। व्यापारी ने भी उसके प्रेम का उत्तर दिया तो उसने व्यापारी के साथ घर से भाग जाने का प्लान बना लिया।

भागने से पूर्व उसने अपनी एक विश्वस्त दासी को बुलाया और उससे कहा — "देखो मैं कुछ देर के लिये बाहर जा रही हूॅ। जैसे ही मैं घर से चली जाऊॅ तुम घर में आग लगा देना। मेरा पति उस आग को बुझाने में लग जायेगा और उसे पता भी नहीं चलेगा कि मैं बाहर चली गयी हूॅ। मैं जल्दी ही घर वापस आ जाऊॅगी।"

जैसे ही सुभगा घर से बाहर निकली दासी ने घर में आग लगा दी। सुभगा के पति को व्यापारी पर सन्देह था सो उसने यक्ष के घर की पहरेदारी करना छोड़ा और अपने घर की आग बुझाने में लग गया।

इस बीच सुभगा का प्लान सफलतापूर्वक काम कर गया और उसका घर जल गया। इस प्रकार व्यापारी ने अपना घर और सब कुछ खो दिया। योर मैजेस्टी। आपका भी यही कुछ होने वाला है पर यदि आप फिर भी जानना चाहते हैं तो आप जो भी जानना चाहते हैं मैं अगली बार आपको स्वयं बताऊॅगी।"

यह कह कर वह फिर वहॉ से चली गयी। राजा फिर सोच में डूबा बैठा रह गया।

9 रानी और हॅसती हुई मछली–समाप्त[12]

राजा अगले दिन तक भी उन लाइनों का अर्थ समझने में असफल रहा तो उसने ब्राह्मण की बेटी को फिर से बुलवा भेजा और उससे कहा — "तुमने कहा था कि तुम मुझे उन लाइनों का अर्थ स्वयं समझाओगी क्योंकि मुझे तो उनका अर्थ बिल्कुल ही समझ में नहीं आ रहा।"

ब्राह्मण की बेटी बोली — "यदि आप नहीं समझ सके तो फिर सुनिये। आपके ज्योतिषी और बुद्धिमान लोगों के समूह में एक पुष्पकार नाम का आदमी है उसे बुलाइये। वह उन सबका सरदार है। मेरा विश्वास है कि वह बहुत ही विश्वस्त आदमी है। पहले तो मुझे यह बताइये कि उसको पुष्पकार ही क्यों कहते हैं।"

राजा बोला — "उसका नाम पुष्पकार ठीक ही है क्योंकि जब वह मुस्कुराता है तब ऐसा लगता है जैसे उसके मुँह से फूल बरस रहे हों। उसकी यही तो विशेषता है।"

सो कुछ लोग उसकी इस विशेषता की जॉच के लिये उसे लाने के लिये भेजे गये। जब वह वहॉ आया तो न तो वह हॅस रहा था और न ही उसके मुॅह से फूल बरस रहे थे। और इस कारण लोगों ने उसे "भेद के बन्धन"[13] के नाम से पुकारा।

---

[12] The Queen and the Laughing Fish-Concluded. (Tale No 9)

[13] "The Bond of Secrecy"

ब्राह्मण की बेटी ने पूछा — “और पुष्पकार हँसा क्यों नहीं। क्या आप में से किसी को इसका कारण ज्ञात है।”

राजा बोला — “मैं तो इस बात का ज़रा सा भी अनुमान नहीं लगा सकता।”

ब्राह्मण की बेटी बोली — “तो इसी से पूछिये क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है कि — एक राजा राज्य न्यायपूर्ण होने से पाता है और न्यायपूर्ण ढंग से ही उसे राज करना चाहिये। न्याय से ही राजा अपनी प्रजा को नुकसान से बचाता है और उन्हें शरण देता है।

आपने मुझसे पूछा था कि मछली के हँसने का क्या अर्थ था तो यह प्रश्न अब आप उसी से पूछिये। सम्भव है कि वह आपके इस प्रश्न का उत्तर दे और आपको यह भी बताये कि वह स्वयं क्यों नहीं हँसा था।”

सो पुष्पकार को बुलाया गया। वह आया तो क्योंकि वह नगर का एक माननीय व्यक्ति था सो उसने राजा को कई कीमती उपहार भेंट किये। तब उससे पूछा गया कि जब वह आया तो वह स्वयं क्यों नहीं हँसा और मछली क्यों हँसी थी।

पुष्पकार बोला — “अपने परिवार की शर्मनाक बातों को बाहर नहीं कहना चाहिये। पैसे का नुकसान, दिमाग का दुख, घर की परेशानियाँ, धोखाधड़ी और अपमान – कोई भी बुद्धिमान आदमी इन्हें बताना नहीं चाहता।

फिर भी क्योंकि राजा की आज्ञा का पालन तो होना ही चाहिये क्योंकि राजा की शान भी एक शूद्र के बराबर ही धरती पर बहुत शक्ति रखती है।

एक न्यायपूर्ण शक्तिशाली राजा का तो नाम ही सूरज से कहीं अधिक शानदार होता है इसलिये मैं योर मैजेस्टी के प्रश्न का उत्तर अवश्य दूँगा। मुझे पता लगा कि मेरी पत्नी किसी से प्यार करती है तभी से उस दुख ने मेरी हँसी को रोक दिया है।”

तब राजा ने अपनी समस्या बुद्धिमान आदमी के सामने रखी तो उसने तो आव देखा न ताव और रानी के गाल पर एक ज़ोर का झापड़ मार दिया। रानी ने बेहोश होने का बहाना किया और पुष्पकार बहुत ज़ोर से हँस पड़ा।

यह देख कर राजा तो बहुत ही क्रोधित हो गया। जादूगर और ब्राह्मण की बेटी की ओर देखते हुए उसने कहा — “इसमें इतना हँसने की क्या बात है। इस हँसने का क्या अर्थ है।”

जादूगर ने काफी नीचे को झुकते हुए राजा से कहा — “योर मैजेस्टी। रानी जी उस रात बेहोश नहीं हुई थीं जब उन्हें उन नौजवानों ने पीटा था जिनके साथ वह थीं। पर आज जब मैंने मारा तब वह या तो बेहोश हुईं या फिर उन्होंने बेहोश होने का बहाना बनाया।”

इस बात पर तो राजा और भी अधिक क्रोधित हो उठा और बोला — "यह सब क्या है। क्या तुम यह बात अपनी जानकारी से कह रहे हो।"

जादूगर बोला — "हाँ सरकार। मैंने अपनी आँखों से देखा था और यदि योर मैजेस्टी मेरी इस बात से सन्तुष्ट न हों तो मैं इस बात को आपको प्रमाणित कर के दिखा सकता हूँ।"

राजा ने तब सब हाल सुना और सब बातों का पता किया। जादूगर बोला — "शायद योर मैजेस्टी अब समझ गये होंगे कि ब्राह्मण की बेटी आपको यह क्यों बताना नहीं चाहती थी कि मछली क्यों हँसी।"

इसका अन्त यह हुआ कि पुष्पकार और ब्राह्मण की बेटी को कॅपकॅपी की अवस्था में घर भेज दिया गया। जबकि रानी और उसके प्रेमी को एक थैले में बन्द कर के नदी में फिंकवा दिया गया।

10 देवस और उसकी दो पत्नियाँ[14]

राजपुर नाम के एक गाँव में देवस नाम का एक आदमी रहता था। उसकी दो पत्नियाँ थीं – श्रंगारवती और सुभगा। दोनों ही प्रेम प्रिय स्त्रियाँ थीं और अक्सर ही अपने किसी न किसी प्रशंसक के साथ लगी रहतीं। किसी भी तरह वे एक दूसरे की यह बात अपने पति से छिपाने में सफल रहती थीं।

एक दिन सुभगा घर में ही अपने किसी प्रेमी के साथ व्यस्त थी कि उसका पति बाहर आता दिखायी दिया। उसके हाथ में एक झाड़ी थी जिसे उसने अभी अभी खोदा था। इधर आनन्द ही आनन्द था तो अब क्या किया जाये।

श्रंगारवती बहुत चुस्त चालाक थी उसकी चुस्ती और चालाकी उसे कभी धोखा नहीं देती थी। उसने सुभगा के लगभग सारे वस्त्र उतार लिये और उसे घर के बाहर निकाल दिया। जब उसका पति घर के दरवाजे पर आया और उसे इस अवस्था में देखा तो आश्चर्य से चिल्ला पड़ा "क्या हुआ।"

जवाब श्रंगारवती ने दिया — "सच्चाई तो यह है कि सुभगा ने आपको यह झाड़ी हाथ में लिये हुए घर आते देखा तो जैसे ही उसने यह देखा तो यह तो बिल्कुल पागल सी हो गयी। इसने अपने कपड़े

[14] Devas and His Two Wives. (Tale No 10)

फाड़ डाले और दरवाजे की ओर भागी। आप जायें और इस झाड़ी को वहीं रख कर आयें जहाँ से आप इसे लाये हैं।"

मूर्ख आदमी बेचारा उस झाड़ी को ले कर उलटे पैरों लौट गया। जैसे ही वह गया उन्होंने सुभगा के प्रेमी को घर से बाहर निकलने का प्रबन्ध कर दिया।

11 रम्भिका और उसका ब्राह्मण प्रेमी[15]

दाभील नाम के एक गॉव में विलोचन नाम का एक आदमी रहता था। उसकी पत्नी का नाम रम्भिका था और वह एक मूर्ख और बुरा व्यवहार करने वाली स्त्री थी पर कोई उसका अनुचित लाभ नहीं उठा पाया था क्योंकि उस पति एक बहुत ही गम्भीर प्रकृति का और एक अप्रिय आदमी था।

एक दिन वह कुॅए पर पानी भरने के लिये गयी तो उसने वहॉ का बहुत ही सुन्दर नौजवान को देखा। वह किसी ब्राह्मण का बेटा था। उसने उसे अपनी ऑखों से ही नमस्ते की तो उस नौजवान ने भी उसका उत्तर दिया। क्योंकि कहा जाता है कि —

जब तुम बोलते हो तो जानवर भी यह जानते हैं कि तुम क्या कह रहे हो। कहने पर हाथी और घोड़े आगे जाते हैं। पर बुद्धिमान आदमी बिना बोले शब्द भी पहचान लेता है उसे तो एक इशारा ही काफी है।

सो वह रम्भिका के पास गया और उससे पूछा कि वह उससे क्या चाहती थी। रम्भिका बोली "मेरे पीछे पीछे आओ। मेरे घर चलो और मेरे पति का सम्मान करो। शेष सब मैं सॅभाल लूगी। बस ज़रा यह ध्यान रखना कि उनसे बहुत नर्मी से बोलना।"

---

[15] Rambhika and Her Brahmana Lover. (Tale No 11)

इतना कह कर वह अपने घर चल दी और यह नौजवान उसके पीछे पीछे चल दिया।

जब उसके पति ने एक सुन्दर नौजवान को अपनी पत्नी के साथ आते देखा तो वह कुछ आश्चर्य में पड़ गया। पर उसकी पत्नी उसके पास आयी और बोली — "आओ मैं तुम्हारी इस नौजवान से जान पहचान करा दूँ।"

पति ने पूछा — "यह नौजवान कौन है।"

रम्भिका बोली — "यह मेरा भाई है। मैंने इसे बहुत बचपन से नहीं देखा था। बहुत दिन पहले हम साथ में खेला करते थे। यह यहाँ मुझसे मिलने के लिये आया है तो मैं इससे पूछ रही थी कि मेरे सब सम्बन्धी कैसे हैं।"

नौजवान भी बहुत सतर्क रहा कि वह भी इस कहानी के अलावा कोई और कहानी न बता दे जो रम्भिका ने विलोचन को सुनायी थी। विलोचन उस नौजवान के व्यवहार से बहुत प्रभावित था। उसने उससे कहा कि वह उनके घर में आराम से रह सकता था। रम्भिका ने उसको बहुत अच्छी तरह से रखा।

जब उसका पति सोने चला गया तो रम्भिका ने अपने मेहमान की ओर ज़्यादा ध्यान देना प्रारम्भ कर दिया पर उसने उसके इस व्यवहार को मना करते हुए कहा "यह काम नहीं करेगा। क्या तुमने अभी यह नहीं कहा था कि यह मेरा भाई है। और यदि ऐसा है तो जा तुम चाहती थीं वह तुम्हें मिल गया।"

रम्भिका बोली — "बेकार की बातें मत करो। क्या यह नहीं कहा गया है कि — जो लड़कियों के आगे बढ़ने को रोकता है और उनकी आहों की ओर ध्यान नहीं देता वह नरक जाने के योग्य होता है।"

कह कर वह बहुत ज़ोर से चिल्ला पड़ी और फिर अपने पति को जगा दिया। यह देख कर नौजवान डर गया कि पता नहीं कि अब आगे क्या होने वाला है। वह उसके पैरों पर पड़ गया और उससे विनती की कि यदि वह उसे जीवित छोड़ देगी तो वह उसके लिये वही करेगा जो वह चाहेगी।

सो उसने कुछ खाना और दूध लिया जो वहीं पास में ही रखा हुआ था मोमबत्ती जलायी और दूध हिलाने लगी तो जब उसका पति आया तो वह चम्मच से दूध हिला रही थी।

उसे देख कर वह बोली — "अपने आपको इतना परेशान करने की आवश्यकता नहीं है। मेरे भाई को कभी कभी पेट में बहुत ज़ोर का दर्द उठता है सो उसने मुझसे जब यह कहा तो मैं इतना डर गयी कि मेरे मुँह से चीख निकल गयी। इसलिये मैं यहाँ यह दूध बनाने चली आयी ताकि उसके पेट को थोड़ा आराम मिल जाये।"

उसके मूर्ख पति ने देखा कि वह क्या कर रही थी और उसकी कहानी पर विश्वास कर के वह फिर सोने चला गया। नौजवान ब्राह्मण इस बीमारी का बहाना बना कर उसके घर में एक महीने रहा। दोनों उसके इस तरह से रहने से बहुत सन्तुष्ट थे।

12 शोभिका और बकुल का पेड़[16]

नलूद नाम का एक गॉव था जिसमें एक बहुत ही अमीर कुम्हार रहता था। उसकी पत्नी का नाम शोभिका था जिसकी साख बहुत ही अजीब सी थी। वह दूसरे पुरुषों को लुभाने में बहुत होशियार थी।

एक बार जब उसका पति बाहर गया हुआ था और वह अपने एक प्रेमी के साथ थी तो घर का मालिक अप्रत्याशित रूप से घर वापस लौट आया। अब तो वह बहुत कठिनाई में पड़ गयी पर उसने अपने दिमाग से काम लिया।

वह अपने प्रेमी को एक बकुल के पेड़ के नीचे ले गयी जो उसके घर के बाहर ही उगा हुआ था और उसे वहाँ ले जा कर उससे कहा — "जाओ इसके ऊपर चढ़ जाओ और छिप जाओ।"

उसने वैसा ही किया। वह बकुल के ऊपर चढ़ कर वहाँ छिप गया पर उसका कोट नीचे पेड़ की जड़ के पास जमीन पर ही पड़ा रह गया। उसी समय उसका पति आ गया। उसने कोट नीचे पड़ा देखा तो पत्नी से पूछा — "यह क्या है?"

उसकी पत्नी ने जवाब दिया — "कुछ नहीं। यह कोट तो एक ऐसे आदमी का है जो अपने उधार देने वालों से बच कर भाग रहा था। वह इस पेड़ पर इतनी जल्दी से चढ़ गया कि उसका कोट नीचे ही रह गया।"

---

[16] Shobhika and the Bakul Tree. (Tale No 12)

जब कुम्हार को इस बात का पता चला तो उसने पेड़ पर चढ़े हुए आदमी को नीचे बुलाया। सो वह आधा भागा हुआ नौजवान सन्देह के साथ नीचे उतरा। पर उसके सब सन्देह जाते रहे जब स्त्री के पति ने उसे खाना खाने के लिये अन्दर बुलाया और उसका अच्छी तरह से स्वागत किया।

शोभिका अपनी इस चालाकी पर बहुत प्रसन्न हुई।

13 कपटी राजिका[17]

नागपुर नाम के एक नगर में एक व्यापारी रहता था जिसकी पत्नी का नाम था राजिका। वह एक सुन्दर पर छिछोरे किस्म की स्त्री थी। यद्यपि उसके पति को पता नहीं था कि वह किस तरह से क्या करती थी।

एक दिन उसके पति को शाम को खाना खाने कहीं जाना था कि तभी राजिका ने देखा कि उसका कोई प्रेमी आ रहा है। उसने उसे अपने से मिलने के लिये बुलाया था। सो वह अपने पति के पास गयी और उससे कहा — "घर में मक्खन नहीं है। मैं ज़रा बाजार जा कर मक्खन खरीद लाती हूँ।"

पति ने उसे पैसे दे दिये और वह मक्खन खरीदने का बहाना कर के बाहर चली गयी। वहाँ से वह फिर अपने प्रेमी के साथ सैर करने चली गयी।

इस बीच उसका पति उसके लौट आने की प्रतीक्षा करता रहा। हर पल उसकी भूख और उसका क्रोध बढ़ता ही जा रहा था। अन्त में उसे वापस तो लौटना ही था। सो उसने अपना सिर और हाथ और वह सिक्का जिसे उसके पति ने मक्खन खरीदने के लिये दिया था सब कुछ धूल से भर लिया।

---

[17] Wily Rajika. (Tale No 13)

जब वह वापस लौटी तो घर में उसे उसका पति मिला। इस समय तक तो वह अपने क्रोध में उबला पड़ रहा था। वह चिल्ला कर उससे बोला — "कहाँ थीं तुम अब तक। इतनी देर कहाँ लगी अब तक।"

रोते हुए उसने धूल की ओर इशारा कर दिया और बोली — "मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप क्रोधित न हों। मुझसे यह सिक्का धूल में गिर पड़ा था। अब तक मैं इसे ही खोज रही थी। मेहरबानी कर के मेरी धूल झाड़ दीजिये।"

उसकी यह दशा देख कर उसके पति को बहुत दुख हुआ और पछताते हुए उसने उसकी धूल झाड़ दी।

14 चतुर धनाश्री[18]

पद्मावती नाम के एक नगर में एक व्यापारी रहता था जिसका नाम था धनपाल। उसकी एक पत्नी थी जिसका नाम था धनाश्री। एक दिन यह व्यापारी अपने काम के सिलसिले में कहीं बाहर गया। साथ में काफी सारा पैसा भी ले गया।

जब वह घर से चला गया तो उसकी पत्नी बड़े दुख से अपने दिन गुजारने लगी। वह न तो नहाती थी न खाती थी और न ही अपनी सहेलियों से बात करती थी। इस प्रकार वह अपनी ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रही थी।

मलय पर्वत से बहती हुई सुगन्धित हवा कोयल का मीठा सन्देश लायी। मधुमक्खियों का गुनगुनाना सुनायी पड़ने लगा। चमेली की सुगन्ध चारों ओर फैल गयी। इन्होंने हमारी इन्द्रियों पर भी असर किया।

यदि वसन्त में यह सब हमारी इन्द्रियों पर असर न करे तो समझो कि फिर तो बस मौत का राजा ही आया है। ऐसे समय में आदमी का दिमाग भी बदलने लगता है।

एक दिन धनाश्री की सहेलियों ने उससे कहा — "तुम समय क्यों बर्बाद कर रही हो। मेरी बात सुनो। कोयल जो प्रेम की देवी है तुमसे प्यार की भाषा में बोल रही है। वसन्त सारी धरती पर फैला

---

[18] Ingehious Dhnashri. Tale No 14,

हुआ है। तुम अपना घमंड उठा कर रख दो। स्त्रियों को अपने उचित सम्मान का आदर करना चाहिये। यौवन तो बहुत जल्दी निकल जाता है और जीवन अनिश्चित है। जब तक तुम आनन्द उठा सकती हो तब तक तुम्हें आनन्द उठाना ही चाहिये।"

यह सुन कर उसके मुँह से निकला — "तुम लोग ठीक कहती हो। अब मैं और देर नहीं लगाऊँगी। मुझे बताओ कि मैं क्या करूँ।"

एक नौजवान वहाँ आया और उसको अपने साथ ले गया। जब वह उस नौजवान के साथ थी तो उसने अपने बालों की एक लट काट ली। उसी समय उसका पति घर आ गया।

एक पल सोच कर उसने उससे कहा — "ज़रा दो मिनट ठहरो मैं ज़रा घर ठीक कर लूँ।" कह कर वह अपने कुल देवी के मन्दिर में भागी गयी।

उसने अपनी कटी लट उसने देवी के चरणों में रख दी उसके बाद वह अपने पति को अपने घर में ले कर आयी और उसको धीरे धीरे वह कुल देवता के मन्दिर ले गयी और कहा — "प्रिय। यहाँ अपनी कुल देवी को धन्यवाद दो।"

उसने ऐसा ही किया तो उसने देवी के सामने बालों की एक लट रखी देखी तो उसने पत्नी से पूछा — "यह क्या है।"

धनाश्री ने उत्तर दिया — "यह मेरी प्रतिज्ञा के पूरे होने की निशानी है। मैंने देवी से प्रतिज्ञा की थी कि यदि वह तुम्हें सुरक्षित

घर ले आयेगी तो मैं उन्हें अपने बालों की एक लट चढ़ाऊँगी। तुम सुरक्षित लौट आये हो सो मैंने अपनी प्रतिज्ञा रखी।"

यह सुन कर उसके मूर्ख पति ने एक बार और कुल देवी को धन्यवाद दिया और अपनी पत्नी को और भी अधिक प्रेम करने लगा।

15 श्रीदिव्या ने अपनी पायल खोने पर क्या किया[19]

एक नगर है शालीपुर जहाँ एक व्यापारी रहता था जिसके एक बेटा था गुणाकर। गुणाकर का विवाह हो चुका था। उसकी पत्नी का नाम था श्रीदिव्या। श्रीदिव्या का मन एक युवक की ओर लगा हुआ था जिसका नाम था सुबुद्धि।

उसे बस संसार भर की बातें करने में आनन्द आता था पर उसका पति उसका इतना प्यार करता था कि वह उसके विरुद्ध कुछ सुनने को तैयार नहीं थी क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है कि —

"दोस्तों को दोस्त के गुण ही गुण दिखायी देते हैं जबकि शत्रुओं को उसी आदमी में बुराई ही बुराई दिखायी देती है।"

एक दिन उसके ससुर ने उसे उसके प्रेमी साथ सोते हुए देख लिया तो बिना उसे जगाये हुए उसकी एक पायल निकाल ली। कुछ देर बाद जब वह जागी तो उसने देखा कि उसकी एक पायल तो उसके एक पैर में है ही नहीं। पर उसने उसके विषय में कुछ कहा नहीं और सीधी अपने पति के पास जा कर लेट गयी।

बीच रात में उसने उसे जगाया और कहा — "यह सोचते हुए कि मैं सो रही हूॅ तुम्हारे पिता ने मेरी एक पायल निकाल ली है। यह तो मेरा बहुत बड़ा अपमान है। क्या कभी किसी ने ससुर को अपनी सोती हुई पुत्रवधू के पैरों से पायल निकालते सुना है।"

---

[19] What Sridevya Did When She Lost Her Anklet. (Tale No 15)

यह सुन कर गुणाकर तो क्रोध में भर उठा। वह तुरन्त उठा और अपने पिता पर अपनी पत्नी की पायल चुराने पर बहुत चिल्लाया।

तो पिता बोला — "बेटा बात यह थी कि मैंने देखा कि बहू किसी दूसरे के साथ सो रही थी इसलिये मैंने उसके एक पैर से उसकी एक पायल निकाल ली।"

श्रीदिव्या बोली — "यह बिल्कुल झूठ है क्योंकि उस समय तो मैं अपने पति के साथ थी और यह बात मैं परीक्षा दे कर प्रमाणित कर सकती हूँ।"

और उसकी परीक्षा यह थी कि उनके गाँव से कुछ दूरी पर ही एक गाँव था जिसमें एक यक्ष रहता था। जिन लोगों पर अपराध का सन्देह होता था उन्हें यक्ष के पास ले जाया जाता था। वह उन्हें पकड़ लेता था और यदि वे निरपराध होते थे तो वे उसकी पकड़ से आसानी से मुक्त हो जाते थे।

सो वह बेकार की स्त्री अपने प्रेमी के पास गयी और उससे बोली — "कल सुबह मुझे अपनी परीक्षा के लिये यक्ष के पास जाना है तो ज़रा ख्याल रखना कि तुम भी वहीं रहना और जैसे ही यक्ष मुझे पकड़े उससे पहले ही तुम मेरी गर्दन पकड़ लेना।"

उसकी समझ में कुछ नहीं आया कि वह ऐसा क्यों कह रही है पर फिर भी वह वैसा करने पर तैयार हो गया।

अगले दिन श्रीदिव्या नहायी धोयी कुछ फूल साथ में लिये और एक बड़ी भीड़ के साथ यक्ष के घर की तरफ चली। जैसे ही वह यक्ष के सामने पहुँचने वाली थी तो जैसा कि तय हुआ था उसका प्रेमी पास में से निकल आया और अपनी दोनों बॉहों से उसकी गर्दन पकड़ ली।

तभी वह बहुत ज़ोर से चिल्लायी और अपने आपको पवित्र करने के लिये भागी जबकि पास में खड़े लोगों ने उसके प्रेमी को पकड़ कर वहाँ से भगा दिया। जब उसकी पवित्र होने की रस्में समाप्त हो गयीं तब वह वापस आयी और यक्ष को फूल अर्पण किये।

"सर आपके लिये। मेरे पति को और उस आदमी को छोड़ कर जिसने अभी मेरी गर्दन पकड़ी थी किसी दूसरे आदमी ने मुझे छुआ भी नहीं है। यदि मैं झूठ बोलूँ तो मुझे उचित सजा मिले।" कह कर उसने अपने आपको परीक्षा के लिये सौंप दिया और साफ बच कर निकल आयी।

यक्ष जिसने यह सब देखा तो कहा तो कुछ नहीं पर मन ही मन उसकी बुद्धिमानी की बहुत प्रशंसा की। इस तरह से वह अपना मान सम्मान बनाये रख कर घर वापस आ गयी।

16 मुग्धिका जिसने अपने पति का प्यार पाया[20]

एक बार की बात है कि एक नगर में एक व्यापारी रहता था जिसकी पत्नी का नाम मुग्धिका था। वह बहुत चंचल और अपने मन की करने वाली थी। उसका पति उसके व्यवहार से बहुत असन्तुष्ट रहता था।

एक दिन उसने अपने परिवार वालों को बुला कर एक मीटिंग की और उन्हें बताया कि उसकी पत्नी रोज रात को कहीं बाहर जाती है। तो उन्होंने उसके लिये उसे बहुत डॉटा पर उसने कहा कि उन लोगों को कहीं गलती लग गयी है। वह रात को बाहर नहीं जाती बल्कि उसका पति रात को बाहर जाता है।

बहुत देर की बातचीत के बाद वे इस फैसले पर पहुँचे। उन्होंने कहा — "तुममें से कोई भी हो आज के बाद जो कोई भी पहले रात को बाहर जायेगा वही अपराधी होगा।"

मुग्धिका ने इस फैसले के बाद भी पहल की और वह पहले रात को बाहर निकली। जब उसके पति को पता चला कि वह घर में नहीं है तो उसने घर के दरवाजा को अन्दर से ताला लगा दिया और आ कर सो गया।

तभी वह बाहर से आयी और दरवाजा खटखटाया पर उसके पति ने उसे अन्दर नहीं आने दिया तो उसने एक बड़ा सा पत्थर

---

[20] Mugdika Who Got the Best out of Her Husband. (Tale No 16)

उठाया और उसे टैंक में फेंक दिया और फिर छिप कर प्रतीक्षा करने लगी।

उसके पति ने पत्थर के पानी में पड़ने की आवाज सुनी तो उसने सोचा कि शयद उसकी पत्नी टैंक में गिर पड़ी होगी वह उसे देखने के लिये बाहर आया। जैसे ही वह दरवाजे के बाहर आया मुग्धिका चुपके से घर के अन्दर चली गयी और दरवाजे की सॉकल लगा ली।

उसके पति ने देखा कि वह तो घर के बाहर है और दरवाजा बन्द है तो वह बेचारा ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा — "प्रिये मुझे अन्दर आने दो।"

उसने इतना अधिक शोर मचाया कि पत्नी को लगा कि उतने शोर से तो पुलिस ही आ जायेगी सो उसने दरवाजा खोल दिया और यह कहते हुए उसे घर के अन्दर ले लिया — "आगे से एक दूसरे में दोष ढूँढना बन्द करो।"

17 हाजिरजवाब ब्राह्मण गुणाढ्य

विशाला नगरी में एक बहुत ही पक्का ब्राह्मण रहता था। उसके एक बेटा था उसने उसे अपने धर्म ग्रन्थों से बुद्धिमानी की बहुत सारी बातें सिखायी थीं।

एक दिन उसके बेटे ने जिसका नाम गुणाढ्य था अपने पिता से किसी दूर देश जाने की आज्ञा माँगी। वहाँ पहुँच कर उसने अपनी बुद्धिमत्ता से बहुत सम्मान प्राप्त किया। वहाँ उसने बहुत मन लगा कर ध्यान किया कि अब वह अपनी बुद्धिमानी से किस प्रकार लाभ उठाये।

अन्त में उसने एक बैल खरीदा और उसके साथ अपनी यात्रा प्रारम्भ की। जब वह उसे ले कर सड़क पर जा रहा था तो उसे एक बहुत सुन्दर लड़की दिखायी दी।

सो एक ऐसा आदमी ढूँढने के इरादे से जो उसका बैल अपनी घुड़साल में बाँधने को तैयार हो उसने उस लड़की से पूछा कि वह कोई ऐसी जगह बताये जहाँ वह रात को रुक सके।

लड़की ने बता दिया तो गुणाढ्य जा कर वहाँ रुक गया। बैल ने भी अपने घूमने के लिये जगह देखना प्रारम्भ किया तो वह उसको उसके घर में ही मिल गयी। वहाँ उसने रात गुजारी। अगले दिन सुबह वह उठ कर वहाँ से चला आया साथ में वह उसकी एक पायल ले गया।

इस बीच एक नौकर आया तो उसने एक बैल बॅधा देखा तो पूछा कि वह बैल किसका था। स्त्री जिसने गुणाढ्य को घुड़साल में बैल रखने की अनुमति दी थी जानती थी कि उसका मालिक कहॉ गया है सो वह चुप रही क्योंकि ऐसा कुछ कहा गया है —

बुद्धिमान लोग धन की हानि, मन का दुख, घर की बदनामियॉ, धोखाधड़ी, और अपमान के विषय में बात नहीं करते।

दिन में गुणाढ्य जुआ खेलता रहा पर उसमें उसका भाग्य बहुत खराब रहा। जब वह जुआघर से बाहर आ रहा था कि उसे वह लड़की दिखायी दे गयी जिसकी उसने पायल चुरायी थी।

उस लड़की ने तुरन्त ही उसे पकड़ लिया। उसकी पकड़ में होने के कारण वह ज़ोर से चिल्लाया "बचाओ बचाओ। मैं एक बदनाम स्त्री के फन्दे फॅस गया हूॅ।" उसने इतनी ज़ोर का शोर मचाया कि उस लड़की को उसे छोड़ देना पड़ा।

उसके बाद वह उस लड़की को भला बुरा कहता हुआ उसके पीछे पीछे चलने लगा। यहॉ तक कि उसे उसे पीछे वाली सड़क पर ले जाना पड़ा और उसका मुॅह बन्द करने के लिये उसे अपना एक कंगन देना पड़ा।

सो जो कठिनाइयों के साथ रह सकता है या उन्हें नजरअन्दाज कर सकता है या जो उनमें अपने दिमाग का सन्तुलन नहीं खोता ऐसा आदमी प्रशंसा के योग्य होता है।

19 चतुर सन्तिका जिसने अपने पति की साख बचायी[21]

करल नाम के एक नगर में सोढ़क नाम का एक आदमी रहता था। वह नगर का एक बहुत बड़ा आदमी था। उसकी पत्नी सन्तिका उसके प्रति बहुत वफादार थी।

उसी नगर में एक व्यापारी भी रहता था जिसकी पत्नी स्वच्छन्दा बहुत ही चंचल स्वभाव की और बुरा व्यवहार करने वाली थी। वह सदा ही सोढ़क को अपनी ओर लुभाने में लगी रहती थी पर वह उसकी ओर देखता भी नहीं था।

एक दिन सोढ़क मनोरथ नाम के एक साधु से मिलने गया तो स्वच्छन्दा उसके पीछे पीछे चल कर उसके घर में चली गयी। किसी ने ठीक कहा है —

कोई भी आदमी अपने ऊपर नियन्त्रण तभी तक रख सकता है जब तक वह गुणों के रास्ते पर चलता है। जब तक वह अपनी इन्द्रियों को अपने वश में रखता है। जब तक वह चतुराई से व्यवहार करता है। जब तक किसी सुन्दर लड़की ऑखों के तीर उसको लगते तो हैं पर वे उसके दिमाग में उथल पुथल नहीं मचाते।

---

[21] The Prudent Santika Who Saved Her Husband’s Credit. (Tale No 19)

पुलिस ने स्वच्छन्दा के कारनामे देखे तो उन्होंने मनोरथ के घर को घेर लिया। तो सन्तिका उस घर में शोर मचाती पहुँच गयी और पहरेदारों से बोली — "मैंने यह प्रतिज्ञा की है कि इस पवित्र साधु के दर्शन करने के बाद किसी सुनसान जगह चली जाऊँगी। तो क्या तुम लोग यह थोड़ा सा पैसा ले कर मुझे इस घर के अन्दर जाने दोगे।"

उन्होंने उसे प्रसन्नतापूर्वक जाने की आज्ञा दे दी। वह अन्दर गयी उसने ऊपर से स्वच्छन्दा के कपड़े पहने और स्वच्छन्दा ने उसके कपड़े पहन लिये। अगली सुबह पुलिस ने देखा कि सोढ़क तो अपनी पत्नी के साथ ही घर छोड़ कर जा रहा था।

तो उनकी तो समझ में ही नहीं आया कि यह क्या हो रहा है पर उन्होंने तो बस यह देखा कि बस किसी तरह से यह हो गया है।

20 केलिका जिसने अपने पति को झूठा प्रेम दिखा कर धोखा दिया[22]

साबरमती नदी के तीर पर एक नगर है जिसका नाम है शंखपुर। वहाँ सूर नाम का एक धनी किसान रहता था। उसकी पत्नी का नाम था केलिका। वह बहुत ही झगड़ालू और बुरे व्यवहार वाली स्त्री थी।

पर वह नदी के उस पार रहने वाले एक ब्राह्मण से बहुत प्यार करती थी। क्योंकि वह सिर तक उस ब्राह्मण के प्यार में डूबी हुई थी तो वह उससे मिलने के लिये अपनी एक सहेली के साथ नदी पार कर के जाया करती थी।

किसी तरह उसके पति को इस बात का पता चल गया कि उसकी पत्नी अक्सर नदी पार कर के कहीं जाती थी। सो एक दिन उसने यह पता लगाने के लिये कि वह वहाँ क्या करने जाती है उसका पीछा करने का सोचा।

एक बार वह नदी पार से लौट कर आ रही थी कि उसने अपने पति को देख लिया। सो उसने एक बर्तन में पानी में भरा और अपनी सहेली के साथ पास के मन्दिर में चली गयी जो वहीं नदी के किनारे पर ही था। उस मन्दिर में एक देवता की मूर्ति भी थी।

---

[22] Kelika Who Deceived Her Husband by Pretented Affection. (Tale No 20)

उसने मूर्ति पर फूल चढ़ाये जल से उसे नहलाया फिर अपनी सहेली की ओर देख कर ऑख मारी और उससे कहा — “ओ देवी। कुछ समय पहले आपने मुझसे कहा था कि यदि मैंने आपको जल और फूल न चढ़ाये तो मेरा पति कुछ ही दिनों में मर जायेगा। सो आपके कहे अनुसार आज मैं आपको यह जल और फूल चढ़ा रही हूँ। मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि मेरे पति की आयु बढ़ा दी जाये।”

उसकी सहेली ने तुरन्त ही उसका उत्तर दिया “ऐसा ही होगा।”

यह देख कर उस स्त्री का पति बिना अपनी पत्नी की दृष्टि पड़े वहाँ से घर चला आया। वह अपनी पत्नी के प्यार और वफादारी से बहुत प्रसन्न था।

22 माढ़क और ऊॅट[23]

किसी गॉव में एक किसान रहता था जिसका नाम था सोढ़क। उसकी पत्नी का नाम था माढ़का। एक दिन वह सड़क के किनारे किनारे कुछ खाना लिये जा रही थी कि उसे रास्ते में शूरपाल नाम का एक आदमी मिला। उसने अपना खाना तो नीचे रख दिया और उसके पास जा कर उससे बात करने लगी।

इस बीच मालदेव नाम का एक मूर्ख वहॉ आया और उसने उस खाने को एक ऊॅट की शक्ल में बना दिया। जब माढ़का वहॉ लौट कर आयी तो उसने देखा कि उसका खाना तो एक ऊॅट की शक्ल ले चुका है। तो उसने उस ऊॅट को बड़ी सावधानी से उठाया ताकि वह टूटे नहीं और उसे घर ले गयी।

घर पहुॅचने पर वह अपने पति से मिली तो खाने से बना ऊॅट देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके मुॅह से निकला — "अरे यह क्या है।"

उसकी पत्नी ने कहा — "अभी कुछ रात पहले मुझे एक स्वप्न आया कि तुम्हें किसी ऊॅट ने खा लिया है। सो अब तुम यह ऊॅट खा लो ताकि ऊॅट तुम्हें न खा सके।"

पति अपनी पत्नी यह बुद्धिमानी की बातें सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त ही वह ऊॅट खा लिया।

[23] Madhak and the Camel. (Tale No 22)

23 सौदे का बेटा जिसने अपना सारा पैसा खो दिया[24]

अगले दिन प्रभावती की सहेलियों ने उससे कहा — "जाओ जहाँ चन्दन की सुगन्ध वाला पसीना गिरता है। जाओ जहाँ चारों ओर प्यार की आवाजें सुनायी देती हैं। जहाँ पायलों की झनकार भी शान्त रहती है। जहाँ की हर वस्तु प्रेम की ओर ले जाती है। जाओ जहाँ केवल प्रेम के नियम ही चलते हैं।

क्योंकि स्वास्थ्य आनन्द शान्ति शक्ति किसी का मालिक होना बिना प्रेम के सब व्यर्थ है। कुछ ऐसा कहा गया है कि —

स्त्रियाँ जिनकी लम्बी अधखुली आँखें होती हैं और जब वे अपने ही रूप को शीशे में देखती हैं तो उन्हें प्रेमी के आने का बड़ी अधीरता से प्रतीक्षा रहती है। केवल उनके आकर्षण के कारण ही उन्हें प्रेम का फल मिलता है।"

यह सुन कर तोता बोला — "आदमियों को बहुत जल्दी जीता जा सकता है। वे सदा न्यायपूर्ण बात करते हैं। वह बोलने वाला जो अप्रिय बोलता है केवल उसे ही सुनने वाला कोई नहीं मिलता। पर अधिक क्या कहें। तुम और तुम्हारी सहेलियाँ तो सब बुरे काम करने पर ही लगी हुई हो।

[24] The Son of the Promise Who Lost All His Money. (Tale No 23)

पद्मावती नामका एक नगर था जहाँ की सड़कों पर धूप की किरनें पड़ती हैं तो सड़कों पर पड़े हुए पत्थर सर्प के फन पर लगे रत्न की तरह चमक जाते है मानो सर्पों के राजा धरती पर आ गये हों। वहाँ के राजा का नाम था सुदर्शन।

ऐसे राजा की जितनी भी प्रशंसा की जाये कम है जो अपनी प्रजा की ठीक से देखभाल करता हो जिसके नगर में सूरज को कोई बुराई न मिलती हो। उसकी पत्नी का नाम था श्रृंगारसुन्दरी। उसके साथ वह गर्मी का मौसम बिताया करता था।

जब धूप की तेज़ी असहृयनीय हो जाती है। जब लम्बे लम्बे दिन काटे नहीं कटते। जब हवा जैसे किसी भट्टी की साँस जैसी हो जाती है। जब गर्मी से हर चीज़ या तो सूख जाती है या नष्ट हो जाती है। चन्दन के लेप हल्के पतले कपड़े ठंडे पेय पदार्थ जो ठंडक प्रदान करते हैं इस मौसम में केवल वही गर्मी को जीत पाते हैं।

गर्मी तो बस केवल उन्हीं की गुलाम होती है जो दोपहर को चन्दन का लेप लगाते हैं जो शाम को नहाते हैं और जो रातों को अपने आपको पंखे की हवा से बहलाते रहते हैं।

इसी नगर में एक व्यापारी रहता था जिसका नाम था चन्दन। वह और उसकी पत्नी प्रभावती गर्मी का मौसम अपने घर की छत पर बिताते थे। यहाँ तक कि सूरज जिसे आकाश में अपनी किरनों का सहारा रहता है जब दिन समाप्त हो जाता है तो वह भी समुद्र में डूब जाता है क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है कि —

जब भाग्य उलटा होता है तब ऊँचा उठने के लिये प्रयत्न करना व्यर्थ है।

जब सूरज के अस्त होने का समय आता है तो उसकी लाखों किरनें भी उसे सहारा नहीं दे सकतीं। तब सूरज आकाश में नीचे डूब जाता है उसकी सारी चमक चली जाती है वह एक मूँगे के टुकड़े की भाँति चमकता है।

उसके बाद अपनी बड़ी बड़ी आँखें ले कर चाँद आता है और उसका स्थान ले लेता है। वह अँधेरा दूर करने के लिये पूर्वीय पहाड़ों की ओर से बहुत सारे तारों के साथ निकलता है और एक दीपक की भाँति अँधेरे संसार को प्रकाश देता है। वह रात के प्रारम्भ में ही पूर्वीय पहाड़ों के पीछे से निकल कर रात की गोद में पड़ा या फिर वह कृष्ण के सिर पर स्थित चमकता रहता है।

ऐसे ऐसे दिन और रात थे जब चन्दन और उसकी पत्नी अपना समय साथ साथ गुजारा करते थे। उनके एक बेटा था जिसका नाम राम था। उसके पिता ने उसे दैवीय ज्ञान की बहुत सारी बातें सिखायी थीं।

उसकी माँ ने चाँद से प्रार्थना की थी — "मेरे केवल एक ही बेटा है इसलिये मैं बहुत दुख और चिन्ता में रहती हूँ।"

चाँद बोले — "यह तो तुम्हारे लिये बहुत अच्छी बात है कि तुम्हें केवल एक ही बेटा है क्योंकि जो होशियार हो विनम्र हो बहुत इच्छा न रखने वाला हो न्यायशील हो जिसे बहुत कलाएें आती हों

और जिसमें गुण ही गुण भरे हो वैसा तो एक ही बेटा बहुत अच्छा होता है।

इसके अलावा बहुत सारे बेटों का तुम क्या करोगी। तुम्हें उनकी देखभाल भी करनी पड़ेगी और वे तुम्हें दुख भी दे सकते हैं। इसलिये ऐसे एक ही बेटे से सन्तुष्ट रहना ठीक है जो स्वयं भला हो और जिको अपने साथ मिलायासका स्वभाव भला हो।"

पर प्रभावती इससे सन्तुष्ट नहीं थी सो उसने धूर्तमाया नाम की एक स्त्री को अपने विश्वास में लिया और उससे कहा — "अगर तुम मेरे लिये एक ऐसे बेटे का प्रबन्ध कर दोगी जो स्त्रियों की धोखा देने वाली सब कलाओं को मात दे दे तो मैं तुम्हें सौ सोने की मुहरें दूॅगी।"

धूर्तमाया बोली — "हॉ मैं ऐसे बेटे का प्रबन्ध जरूर कर दूॅगी। यदि वह किसी स्त्री के जाल में फॅस जाये तो मैं तुम्हें तुम जो मुझे दोगी उसका दोगुना वापस कर दूॅगी।"

इस प्रकार यह सौदा हो गया और एक बेटा व्यापारी के घर में रख दिया गया जहॉ उसके ऊपर सारी स्त्रियॉ जितने भी तरीके सोच सकती थीं आजमाये गये।

स्त्रियों के तरीके थे – झूठ बोलना, चाल खेलना, कसमें खाना, झूठमूठ को रोना गाना हॅसना प्यार जताना, बेकार के प्रश्न पूछना, जलन, द्वेष, अच्छे बुरे में भेद न करना, अपने प्रेमियों की ओर तिरछी दृष्टि से देखना आदि आदि।

सो धूर्तमाया द्वारा भेजा हुआ यह लड़का जैसा कि धूर्तमाया से सौदा हुआ था उसके पिता द्वारा सम्पत्ति को बढ़ाने के लिये सुवर्णा द्वीप भेजा गया। वास्तव में सुवर्णा द्वीप में कलावती नाम की एक स्त्री रहती थी। वहॉ उस लड़के ने उसके साथ एक साल बिताया।

एक दिन उसने कलावती से कहा — "मेरी छोटी बहिन अक्सर कहती है कि वह सारे आदमियों को आकर्षित करने में सफल रही है पर वह अपने किसी प्रशंसक में से कुछ भी नहीं निकलवा सकी। इसे कैसे पूरा किया जा सकता है।"

कलावती ने यह बात अपनी मॉ से जा कर कही तो उसकी मॉ बोली — "तुम्हारी इस बात से ऐसा लगता है कि तुम्हारा यह प्रेमी स्त्रियों के सारे तरीके जानता है। तुम इस तरह से उसे नहीं पकड़ सकतीं। सम्भव है कि झूठी प्रशंसा काम कर जाये।

जब वह घर जाने की बात करे तो तुम उससे कहना कि तुम भी उसके साथ जाना चाहती हो और यदि वह तुम्हें अपने साथ नहीं ले गया तो तुम उसके पीछे डूब कर मर जाओगी। मुझे पूरा विश्वास है कि फिर वह तुमसे कुछ भी मॉगने के लिये अवश्य कहेगा।"

कलावती बोली — "मॉ तुम इसको ऐसे मत रखो। मुझे उससे कोई पैसा वैसा नहीं चाहिये। मुझे उसके बिना उसके पैसे की कोई परवाह नहीं है। जैसा कि कहा गया है कि — "अपना दिल ऐसे धन पर मत लगाओ जिसे नीचता से प्राप्त किया गया हो या फिर किसी ऐसे शत्रु से लिया गया हो जिसे तुमने नीचा दिखाया हो।"

उसकी मॉ बोली — "ऐसा नहीं है मेरी बच्ची। धन तो जीवन या मृत्यु का कारण होती है। ऐसा कहा गया है —

एक आदमी जो उत्साह के साथ काम करता है अवश्य ही फलता फूलता है क्योंकि हर पदार्थ में शक्ति ही अच्छे भाग्य की ओर ले जाती है। जिन्होंने अपने भेद नहीं खोले हैं जिन्होंने कोई बुरा नहीं किया है ज्न्हिोंने बिना किसी कारण के किसी को नहीं मारा है वे ही प्रशंसा और प्रसिद्धि के अधिकारी होते हैं।

न्याय या अन्याय भाग्य से ही मिलता है मान या अपमान भी भाग्य से ही मिलता है। वह भाग्य ही है जिसके कारण मनुष्य मॉगता है या देता है।"

उसकी मॉ आगे बोली — "तुमसे जैसा मैंने कहा है वैसा ही करो। शेष मैं सॅभाल लूॅगी।"

सो कलावती ने अपनी मॉ की बात मानी और उसका क्या परिणाम हुआ? व्यापारी के बेटे ने अपना सारा धन सम्पत्ति उसे दे दी। करोड़ों की सम्पत्ति जो उस व्यापारी के बेटे की थी उसे पाने के बाद उसे घर से निकाल दिया गया और वह दर दर मारा फिरता रहा।

इस प्रकार कलावती का प्रेमी अपनी सारी सम्पत्ति और सम्मान हार कर घर लौटा। उसके पिता ने जब उसे इस दशा में देखा तो वह बहुत दुखी हुआ। उसने उससे पूछा कि क्या हुआ। लड़के ने उन्हें तो बताना नहीं चाहा पर उसने अपने गुरू को सब बताया।

गुरू बोला — "मेरे बच्चे निराश मत हो। आदमी के भाग्य में सौभाग्य और दुर्भाग्य दोनों ही होते हैं। बुद्धिमान आदमी को पैसे के बारे में इतना क्यों सोचना चाहिये। यदि वह जाता है तो जाने दो दुखी मत हो। और यदि वह आता है तो आने दो उसकी परवाह मत करो।"

जब उसके पिता को यह सब पता चला तो वह धूर्तमाया के पास गया। मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि हमारे ऊपर एक बहुत भारी मुसीबत टूट पड़ी है। मेरा बेटा एक स्त्री के जाल में फँस गया है।"

धूर्तमाया बोली — "ऐसा कौन है जो स्त्रियों के जाल में नहीं फँसा क्योंकि यह कहा गया है —

एक आदमी जिसे पैसा मिल जाता है वह बहुत घमंडी हो जाता है। जो परेशानियों में घिरता है उसकी इन्द्रियाँ काम करना बन्द कर देती हैं। किसका दिल है जो स्त्रियों से प्रभावित नहीं हुआ। राजा से दोस्ती कौन कर सकता है।

कौन मृत्यु के फेर में नहीं पड़ता। धनी आदमी की कौन इज़्ज़त नहीं करता। जो बुराइयों के जाल में फँस जाता है वह बिना हानि के बच कर नहीं आता। इसलिये यदि आप मुझे अपने बेटे के साथ जाने दें तो मैं आपके बेटे के साथ ही वापस जाऊँगी। ऐसा कहा गया है —

नुकसान का बदला नुकसान से ही चुकाया जा सकता है। घायल करने वाले को घायल ही करना चाहिये। अगर आप मेरे पंख नोचेंगे तो मैं आपके बाल नोचूँगी।

यदि आपके बेटे को किसी स्त्री ने धोखा दिया है तो मैं उसकी जिम्मेदार हूँ क्योंकि यद्यपि पृथ्वी जिसे सर्पों के राजा ने सँभाल रखा है, जिसे शक्तिशाली पहाड़ का कछुए का और हाथी का सहारा प्राप्त है वह हिल सकती है पर जो कुछ विद्वान और विचारक द्वारा किया जाता है वह कभी नहीं हिल सकता – युग बीत जाने पर भी नहीं।"

सो धूर्तमाया और चन्दन का बेटा दोनो सुवर्णा द्वीप की ओर चल दिये। वहाँ कलावती और सब लोगों ने उसका बड़े उत्साह से स्वागत किया पर उसे वहाँ पैसा नहीं मिल पाया।

पर अब प्रश्न यह था कि अब धूर्तमाया क्या करे।

खैर अब जब पैसा तो आ नहीं रहा था तो उसने एक चांडाल का रूप रखा और घूम घूम कर पैसा वापस पाने की कोई तरकीब ढूँढने लगी। एक बार जब वह घूम रही थी तो उसे चन्दन का बेटा कलावती के पास बैठा दिखायी दे गया।

उसी समय चन्दन के बेटे ने भी उसे देखा तो वह उससे मिलने के लिये दौड़ पड़ा। यह चन्दन के बेटे और धूर्तमाया की पहले से सोची हुई चाल थी। कलावती उसके पीछे पीछे दौड़ी और बोली — "अरे यह तो बताओ कि यह है कौन।"

चन्दन के बेटे ने उत्तर दिया "यह मेरी माँ है। जबसे मैंने अपना पैसा खोया है मैंने उसे देखा नहीं है।"

धूर्तमाया ने उसके हाथ पकड़े और उसे प्यार से पुचकार कर बोली — "अच्छा तो मेरे बेटे। तुम इस स्त्री के घर गये हुए थे। तुम तो इसके जाल में फँस गये पर कुछ समय बाद तुम इसके चंगुल में से निकल भी तो गये। तुम्हें पता है कि जो पैसा तुम ले कर गये थे वह मेरा पैसा था।"

यह बात वह बार बार कहती रही कसमें खा खा कर कहती रही। इस सबसे परेशान हो कर कलावती और उसकी माँ उस चांडाल को घर के अन्दर ले गयीं।

उन्होंने पूछा — "मैडम क्या आप हमें बतायेंगी कि आप कहाँ से आयी हैं। आपका नाम क्या है और संक्षेप में कि आप कौन हैं।"

चांडाल बोली — "मैं पद्मावती के राजा सुदर्शन के कई रखैलों में से एक हूँ। मेरे इस बच्चे ने मेरा सारा पैसा ले लिया और फिर तुमने उसे इससे चुरा लिया।"

कलावती और उसकी माँ यह सुन कर बहुत डर गयीं। उन्होंने कहा — "लो यह लो। हम आपसे विनती करते हैं कि आप इसे स्वीकार कर लें।"

धूर्तमाया बोली — "नहीं ऐसे नहीं। जब तक इस देश का राजा मुझे इसकी आज्ञा न दे दे मैं ऐसा कुछ नहीं कर सकती।"

यह सुन कर तो वे दोनों उसके पैरों पर पड़ गयीं और बोलीं — "हम आपसे विनती करते हैं कि आप इसे स्वीकार करें और हमारे ऊपर दया करें।"

उनकी विनती सुन कर उसने वह पैसा स्वीकार कर लिया और कलावती और उसकी माँ से सम्मानित हो कर राम के साथ अपने घर चली गयी।

25 एक बौद्ध साधु[25]

एक नगर है चन्द्रपुरा वहॉ एक बौद्ध साधु रहता था। उसका नाम था सिद्धसेन। उसका नगर में बहुत सम्मान था। एक दिन एक सफेद कपड़े पहने एक साधु वहॉ आया वह भी एक बहुत ही गुणवान आदमी था।

जल्दी ही वह सभी के आकर्षण का केन्द्र बन गया। और इतना अधिक आकर्षण का केन्द्र बन गया कि बौद्ध साधु का सम्मान अब उतना नहीं रह गया। इससे बौद्ध बहुत परेशान हो गया क्योंकि उसका सम्मान दूसरे को चला गया था। सो उसने एक सुन्दर लड़की को उसके पास इसलिये भेजा ताकि वह उसे गुणों के पथ से भ्रष्ट कर सके।

अब वह गुणवान आदमी बहुत ही सॅवरा सधा आदमी था सो वह लड़की उसे पथ से भटकाने में सफल हो गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि अब वे दोनों नगर में चर्चा का विषय बन गये। इधर बौद्ध साधु ने भी उस अपमान जनक बात को सारे में फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

नगर के लोग सोच कि यह बौद्ध तो बहुत ही धार्मिक प्रवृति का आदमी है पर वह सफेद कपड़े पहनने वाला साधु जैसा वह दिखाते थे उससे अधिक अच्छा नहीं था। इसका अन्त यह हुआ कि साधु ने

---

[25] Buddhist Mendicant. (Tale No 23)

अपने सफेद कपड़े जला दिये उस लड़की से विदा ली जो इन सब परेशानियों की जड़ थी और अगले दिन सुबह थोड़े से कपड़े पहने ही वहाँ से चला गया।

इस प्रकार नगर की बातचीत बन्द हो गयी। लोगों ने कहा — "हमारा बौद्ध उस साधु के बराबर का नहीं है जो सफेद कपड़े पहनता था।"

26 रत्नादेवी और उसके दो प्रेमी[26]

जलौध नाम के एक गाँव में राजपुत्र नाम का एक आदमी रहता था। उसकी पत्नी का नाम रत्नादेवी था। उसी गाँव में एक और आदमी भी रहता था जिसका नाथ था देवस। उसके एक बेटा था जिसका नाम था धवल। ये दोनों ही रत्नादेवी को प्यार करते थे पर दोनों ने ही अपने अपने भेद एक दूसरे से छिपाये हुए थे।

एक दिन पिता और बेटा दोनों ही राजपुत्र के घर में बैठे हुए थे कि राजपुत्र अचानक ही घर वापस आ गया। रत्ना देवी तो अब बहुत कठिनाई में पड़ गयी। तो उसने बेटे को इशारा किया तो बेटे ने यह देख कर कि क्या हो गया था घबराहट की दशा में तुरन्त ही बाहर चला गया।

पर घर से बाहर निकलते समय सीढ़ियों पर उसकी राजपुत्र से टक्कर हो गयी तो राजपुत्र बोला — "अरे यह क्या। तुम जा रहे हो।"

जवाब रत्नादेवी ने दिया — "इस बेचारे के साथ इसके पिता ने बहुत ही अन्याय किया है इसलिये यह बेचारा तुम्हारे पास रक्षा के लिये आया था। इसका पिता भी इसके पीछे पीछे यहाँ आ गया। मेरा तो साहस ही नहीं हुआ कि मैं बेटे को घर के अन्दर बुला सकूँ।

[26] Ratnadevi and Her Two Lovers. (Tale No 26)

पर जैसा कि कहा गया है “एक सच्चा क्षत्रिय वही होता है जो भले लोगों की रक्षा करता है और संकट के समय जिसका धनुष शक्तिशाली होता है। पर जिस किसी के पास शक्ति भी है और साधन भी है और फिर वह कुछ नहीं करता वह उस आदमी समान है जो केवल वायदे करता है उन्हें पूरा नहीं करता।”

राजपुत्र ने कुछ ग्लानि से कहा — “जाओ बेटे को अन्दर बुलाओ।” बेटे ने उसका निमन्त्रण तुरन्त ही स्वीकार कर लिया।

28 देविका ने क्या किया जब वह अपने प्रेमी के साथ पकड़ी गयी[27]

एक बहुत बड़ा गॉव है कुखादा जहॉ जरस नाम का एक आदमी रहता था। वह बहुत ही बड़े किस्म का मूर्ख था। उसकी पत्नी का नाम था देविका। वह बड़ी झगड़ालू और बुरे व्यवहार की स्त्री थी।

उसका एक प्रेमी था वह ब्राह्मण था। वह उससे मिलने के लिये विभीतका के पेड़ के नीचे जाया करती थी। गॉव में इनके मिलने की बहुत चर्चा थी। समय के साथ साथ पति के कानों में भी इस बात की चर्चा पड़ी।

तो उसने स्वयं ही इस मामले की तह तक जाने का इरादा किया। वह पेड़ के पास गया और उस पेड़ पर चढ़ कर बैठ गया। उस पेड़ पर चढ़े चढ़े उसने देखा कि गॉव में जो बातें हो हो रही थीं वे बिल्कुल सच थीं।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "ओ बेकार की स्त्री। लगता है कि तू यह खेल काफी दिनों से खेल रही है।"

अब तो वह बहुत ही कठिनाई में पड़ गयी। पर फिर भी सॅभल कर बोली — "मुझे नहीं पता कि तुम क्या कह रहे हो।"

[27] What Devika Did When She Was Caught With Her Lover. (Tale No 28)

पति बोला — "मैं अभी समझाता हूँ कि मैं क्या कह रहा हूँ। तू रुक मैं अभी नीचे आता हूँ।"

पत्नी ने तब तक वहाँ प्रतीक्षा की जब तक वह पेड़ से उतर कर नीचे आया। जब तक वह पेड़ से नीचे उतरा उतनी देर में उसने अपने प्रेमी को वहाँ से भगा दिया। अन्त में पति पेड़ से नीचे उतरा और बोला — "अब तेरा बहाना बनाने से कोई काम चलने वाला नहीं है। अब तू रंगे हाथों पकड़ी गयी है।"

यह सुन कर पत्नी बोली — "प्रिय। तुम्हें पता होना चाहिये कि इस पेड़ की कई विशेषताऐं हैं। जो भी इस पेड़ पर चढ़ता है उसे पता चल जाता है कि उसके पति या पत्नी का घर से बाहर भी कोई चाहने वाला है या नहीं।"

यह सुन कर पति बोला — "अच्छा तो तू इस पेड़ पर चढ़ और देख कर बता कि तूने क्या देखा।"

यह सुन कर पत्नी उस पेड़ पर चढ़ गयी और इधर उधर देख कर बोली — "ओ कमीने। तुम तो कई दिनों से स्त्रियों के पीछे भाग रहे हो।"

अब यह सच था सो वह मूर्ख कुछ नहीं कह सका और अपनी पत्नी से सुलह कर के घर वापस चला गया।

29 चतुर सुन्दरी[28]

सीकुली नाम के गॉव में एक बहुत ही धनी व्यापारी रहता था। उसकी पत्नी का नाम सुन्दरी था। वह मोहन नाम के एक आदमी से सदा ही मिलती रहती।

एक दिन मोहन उसके घर में आया हुआ था कि उसने देखा कि उसका पति भी आ रहा था। अब यह तो बड़ी गड़बड़ बात थी। उसने अपनी सारी बेशर्मी के साथ अपने प्रेमी जिसके शरीर पर एक चिथड़ा भी नहीं था झूले[29] में डाला और अपने पति से मिलने चली गयी।

दूर से ही वह चिल्लायी — "जल्दी करो। किसी अच्छे टोटके वाले को बुला कर लाओ। हमारे घर में एक नंगा भूत आ गया है वह झूले में लेटा हुआ है।"

उसका पति जो बिल्कुल ही खरदिमाग था। वह अपनी पूरी गति से टोटके करने वाले को बुलाने के लिये दौड़ गया। उधर पत्नी तुरन्त ही घर के अन्दर दौड़ी और अपने प्रेमी को घर से बाहर निकाला।

---

[28] The Clever Sundari. (Tale No 29)

[29] Translated for the word "Hammock". See its picture above.

जब उसका पति घर वापस आया तो वह उसे हाथ में एक जली हुई लकड़ी हाथ में लिये मिली। उसने कहा — "अब सब ठीक हो गया है मैंने उसे इस जलती लकड़ी से मार मार कर भगा दिया है।"

30 मूलदेव जिसने अपने आपको होशियारी से बचाया[30]

किसी जगह एक कब्रिस्तान था भूतवन। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि वह कहाँ था। उसमें दो राक्षस रहते थे कुराल और उत्ताल। दोनों के एक एक पत्नी थी। एक दिन यह बहस छिड़ गयी कि उन दोनों में से किसकी पत्नी अधिक सुन्दर थी।

एक दिन दोनों अपनी अपनी पत्नियों के साथ घूमने जा रहे थे तो रास्ते में उन्हें एक मूलदेव नाम का आदमी मिला तो उन्होंने उसे तुरन्त ही उसे हाथ पकड़ कर पकड़ लिया और कहा कि यदि उसने तुरन्त ही यह न बताया कि उन दोनों में कौन सी स्त्री अधिक सुन्दर थी तो वे उसे मार डालेंगे।

वे दोनों स्त्रियाँ बड़ी आयु की थी और बदसूरत भी थीं। इस प्रकार यह तो साफ ही था कि यदि मूलदेव सच बोला तो उसे मरने से कोई नहीं रोक सकता था।

सो उसने एक पल सोचा और बोला — "वह जिसकी सुन्दर पत्नी है उसके लिये वह जीवन की सबसे सुन्दर भेंट है।"

दोनों राक्षसों को उसका यह उत्तर बहुत अच्छा लगा। उन्होंने तुरन्त ही उसे छोड़ दिया।

[30] Muladeva Who Saved Himself by His Tact. (Tale No 30)

31 शशाक खरगोश और शेर[31]

मधरा नाम के जंगल में एक शेर रहता था जिसका नाम था पिंगल। वह सारे जंगल के जानवरों के लिये एक बहुत बड़ा खतरा था क्योंकि वह अक्सर ही जंगल में घूमता रहता और जो जानवर भी उसे दिखायी दे जाता वह उसे ही खा लेता।

एक दिन जंगल के सब जानवर मिल कर उसके पास गये और उससे एक सौदा किया कि यदि वह उन्हें अकेला छोड़ दे तो वे रोज उसको खाने के लिये एक जानवर भेज दिया करेंगे।

कुछ दिन ऐसा चलता रहा। एक दिन शेर के पास जाने की एक खरगोश की बारी आयी। खरगोश ने मना कर दिया कि वह नहीं जायेगा पर दूसरे जानवरों ने उसे डॉटा और कहा — "तुमको शेर के पास अवश्य जाना है नहीं तो शेर पहले की तरह से हम सबको खा जायेगा।"

खरगोश बोला — "ठीक है ठीक है। मैं चला जाता हूँ। पर तुम सब लोगों को परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह अब और कोई जानवर नहीं खायेगा।"

सो अगले दिन दोपहर को वह बहुत धीरे धीरे चलता हुआ शेर के पास पहुँचा और आ कर बोला — "सर जी। मैं जब आपके

---

[31] Shashak the Rabbit nad the Lion. Tale No 31.

पास आ रहा था कि आपके एक शत्रु ने मुझे बन्दी बना लिया इसी लिये मुझे दुख है कि मुझे आने में कुछ देर हो गयी।"

शेर ने तुरन्त पूछा — "मेरा शत्रु। कौन सा शत्रु। मुझे उससे तुरन्त मिलाओ।"

चालाक खरगोश शेर को एक बाड़े में ले गया जहाँ एक कुँआ था। कुँए में जब शेर ने झाँक कर देखा तो उसमें उसे अपनी परछाँई दिखायी दी। क्रोध के कारण उसने आव देखा न ताव और उस शेर को मारने के लिये कुँए में छलाँग लगा दी। बस वह उसमें डूब कर मर गया।

क्योंकि कहा गया है कि "डर की अवस्था में लोगों की बुद्धि सहायता करती है न कि शक्ति।" क्योंकि ऐसी ही अवस्था में एक शक्तिशाली शेर को एक छोटे से खरगोश ने इतनी सरलता से मार डाला।

एक शक्तिशाली धनुष चलाने वाले का बाण किसी को मार भी सकता है और नहीं भी मार सकता पर एक चालाक मन्त्री के काम किसी भी शक्तिशाली राज्य को उलट पुलट कर सकते हैं।

32 रजनी और गेहूँ की पोटली[32]

शान्तिपुर में एक बड़ा नामी आदमी रहता था जिसका नाम था माधव। उसके एक लड़के की बहू थी रजनी। रजनी सुन्दर और चतुर थी पर अपने व्यवहार में बहुत ही छिछोरी थी।

एक दिन उसकी सास ने उसे कुछ गेहूँ लाने के लिये भेजा सो वह गेहूँ लाने के लिये चल दी। बाजार से उसने गेहूँ खरीदा उसको एक पोटली में बाँधा और फिर घर वापस चल दी।

रास्ते में उसे अपना एक प्रेमी मिल गया तो उसने वह गेहूँ की पोटली तो बाजार के एक कोने में रख दी और उसके साथ बात करने कहीं चली गयी।

इस बीच एक आदमी आया तो उसकी निगाह गेहूँ की पोटली पर पड़ी। उसने पोटली में से गेहूँ तो निकाल लिया और उसमें रेत भर दिया।

रजनी को वहाँ आवश्यकता से कुछ अधिक देर लग गयी सो वह जल्दी जल्दी भागी हुई वहाँ आयी जहाँ वह अपनी गेहूँ की पोटली छोड़ कर गयी थी। जल्दी जल्दी में उसने यह देखा ही नहीं कि उस पोटली में गेहूँ ही था या कुछ और वह पोटली जैसी रखी थी वैसी ही उठा कर घर चल दी।

---

[32] Rajani and the Bundle of Wheat. (Tale No 32)

जब वह घर पहुँची तो उसकी सास ने वह पोटली उससे ली और उसे खोला तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उसमें तो गेहूँ तो था ही नहीं बल्कि रेत भरा हुआ था। सो उसने रजनी से पूछा "यह क्या है।"

रजनी बोली — "माँ। जब मैं बाजार जा रही थी तो मुझसे जो पैसे आपने गेहूँ खरीदने के लिये दिया थे वे रास्ते में गिर पड़े सो जब मैं उन्हें उठा रही थी तो यह रेत भी उन्हीं के साथ आ गया होगा।"

यह सुन कर रजनी की सास ने उस रेत में पैसे ढूँढने प्रारम्भ किये पर उसमें तो पैसे भी नहीं थे। अब जब उसे यही पता नहीं चला कि क्या हुआ था तो वह कुछ कहने से रुक गयी और इस मामले पर कुछ नहीं कहा।

33 रम्भिका और उसके चार प्रेमी[33]

शंखपुर नाम के एक गॉव में शंकर नाम का एक माली रहता था। वह बहुत ही धनी था। उसकी पत्नी का नाम था रम्भिका। शंकर अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था।

एक दिन शंकर ने अपने घर में अपने पूर्वजों की याद में एक भोज का आयोजन किया। और कुछ ऐसा इत्तफाक हुआ कि उसी दिन रम्भिका ने अपने चार प्रेमियों को मिलने के लिये बुलाया हुआ था।

वह सुबह से बाहर फूल बेच रही थी। वह वहीं उनसे एक के बाद एक से मिली – एक नाई था, एक दूकानदार का बेटा था, एक औफीसर था और एक गवैया था। उसने सबको अलग अलग बुलाया और उन सबने उसका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

सो अगले दिन जब माली बागीचे चला गया तो पहले दूकानदार का बेटा वहॉ आया। उसे वह नहाने वाली जगह ले गयी।

वहॉ उसने अभी नहाना प्रारम्भ ही किया था कि नाई घर की ओर आता दिखायी दिया तो दूकानदार के बेटे को उस समय वह जिस दशा में था उसी दशा में उसे वहॉ से बाहर निकाला गया और एक बाहर के कमरे में धकेल दिया गया जिसमें माली अपने बर्तन आदि रखता था।

[33] Rambhika and Her Four Lovers. (Tale No 33)

उसके बाद नाई को नहाने वाली जगह ले जाया गया। अभी वह पूरा नहाया भी नहीं था कि तभी गवैया आता दिखायी दिया। सो उसे बाहर वाले कमरे में यह कहते हुए भेजा गया कि वह वहाँ थोड़ा सावधान रहे क्योंकि वहाँ एक साँप अपने कुछ बच्चों के साथ रहता था।

नाई ने अपने मन में सोचा कि "मुझे थोड़ी देर चुप रहना चाहिये।" कि उसी समय औफीसर आ गया। गवैया जो अभी नहाने वाली जगह ही था उसे जल्दी से बाहर वाले कमरे में बर्तनों के पीछे छिपा दिया गया।

अब माली बागीचे से लौटता दिखायी दिया तो औफीसर को दूसरों की तरह ही उसी कमरे में बन्द कर दिया गया।

अब भोज प्रारम्भ हुआ तो माली और उसके दोस्तों ने रस्मो रिवाज निभाने प्रारम्भ कर दिये। कुछ खाना उन चार प्रेमियों के लिये भी ले जाया गया जो आपस में एक दूसरे से अनजान थे।

दूकानदार के बेटे ने जैसे ही पहला कौर खाया उसने उसे थूक दिया। उसके थूकने की आवाज से नाई को याद आयी रम्भिका की चेतावनी की कि वहाँ साँप अपने कुछ बच्चों के साथ रहता है। सो यह याद कर के वह बहुत डर गया और उसके विचारों ने उसके ऊपर विजय प्राप्त कर ली।

दूकानदार के बेटे ने भी रम्भिका की चेतावनी को सुना था जो उसने नाई को दी थी। उसे सोच कर वह तो इतना परेशान हो गया कि उससे कुछ मिट्टी के बर्तन ही टूट गये।

अब उनमें से एक बर्तन नाई के सिर पर जा गिरा जो दूकानदार के बेटे के थोड़ा नीचे ही खड़ा था। अब इसके बाद तो नाई का डर पक्का हो गया। वह तुरन्त ही "खून खून" चिल्लाता हुआ उस बाहर वाले कमरे के बाहर भागा।

चिल्लाने की आवाज सुन कर शेष लोग भी बहुत डर गये और उस कमरे से निकल कर सड़क पर भागने लगे।

माली और उसके दोस्तों की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। जब वह कुछ न समझ सका तो उसने अपनी पत्नी से पूछा तो पत्नी बोली — "प्रिये। यह तो साफ ही है कि जब आप सब रस्में पूरी कर रहे थे तो वे आपने अपने पूरे मन से नहीं कीं इसलिये आपके ये पूर्वज जो बेचारे भूखे तो थे पर खाना नहीं खा सके और घृणा से यहाँ से भाग गये।"

सो उसकी सलाह के अनुसार माली ने वे सब रस्में दोबारा कीं पर उसके पूर्वज फिर कभी उस तरह के भोज में भाग लेने के लिये नहीं लौटे।

34 एक ब्राह्मण एक लड़की और पॉच भुट्टे[34]

एक नगर में सम्भ नाम का एक ब्राह्मण रहता था। वह नियमित रूप से जुआ खेलता था और एक जगह से दूसरी जगह घूमता रहता था। एक दिन वह एक सड़क के किनारे किनारे जा रहा था तो उसने एक सुन्दर सी लड़की एक खेत की रखवाली करती देखी।

उसने उससे जाने पहचानी आवाज में बात की और उसे अपने साथ कुछ दूर घूमने चलने के लिये कहा और साथ ही उसने पैसे देने का भी वायदा किया। लड़की तैयार हो गयी और उसके साथ चली गयी।

कुछ देर बाद उसने लड़की की तरफ देखा और उससे पूछा — "मैं तुम्हें क्या दूॅ।"

लड़की बोली — "जो तुमने देने के लिये कहा था।"

जब वे इस बात पर आपस में बात कर ही रहे थे तब तक वे एक गॉव के पास तक आ पहुॅचे। लड़की उसी गॉव में रहती थी। ब्राह्मण ने पॉच भुट्टे तोड़े और उसके पीछे पीछे चल दिया। जब वे गॉव में पहुॅच गये तो उसने कुछ ऐसे इशारे किये जिनसे लगता था कि उस लड़की ने उसका अपमान किया है।

[34] The Brahman the Girl and the Five Ears of Corn. (Tale No 34)

फिर वह चिल्लाया — “अरे ओ देखो। ओ इस गॉव के रहने वाले भले लोगों देखो। इस लड़की की ओर देखो इसने अपने आपको मुझे केवल पॉच भुट्टों में ही बेच दिया है।”

यह सुन कर लड़की की तो बोली ही नहीं निकली। वह उसका क्या उत्तर दे। उधर गॉव वालों ने ब्राह्मण ने जो कुछ भी कहा उस पर विश्वास कर लिया।

35 बीज का व्यापारी शम्भक[35]

एक बार की बात है कि एक मक्का का व्यापारी था जिसका नाम था शम्भक। अब ऐसा हुआ कि एक बार उसे किसी काम से सरग्राम जाना पड़ गया। वहाँ पहुँच कर उसने भंडारघर देखने वाले के घर पर दस्तक दी।

भंडारघर देखने वाला तो घर पर नहीं था पर उसकी पत्नी अवश्य मौजूद थी। वह उसे जो कोई भी मिल जाता उसी से हँसी मजाक करने के लिये तैयार हो जाती थी। जल्दी ही दोनों में सुलह हो गयी और इतनी अधिक हो गयी कि ब्राह्मण ने उसे उसकी मेहरबानियों के लिये उसे एक अँगूठी दे दी।

अब ब्राह्मण के जाने का समय आया तो उसने भंडारघर की देखभाल करने वाले की पत्नी से अपनी अँगूठी माँगी। वह उसकी दी हुई अँगूठी की ओर ऐसे देखती रही जैसे कि वह उसको उसकी सेवाओं के बदले में दी गयी हो सो उसने उसे वापस देने से मना कर दिया। तो अब वह उससे उसे वापस कैसे ले। सो उसने कुछ ऐसा किया।

क्योंकि मक्का का व्यापारी उससे अँगूठी नहीं ले सका था इसलिये वह भंडारघर की देखभाल करने वाले के पास गया जो

[35] Shambhak the Seed Merchant. (Tale No 35)

दूकान में बैठा हुआ था और उससे जा कर कहा — "मुझे सौ माप बीज दे दो जो तुमने मुझसे उधार लिये हुए थे।"

भंडारघर की देखभाल करने वाला बोला — "सौ माप बीज? यह तुम क्या कह रहे हो? मैंने तुमसे कुछ उधार नहीं लिया।"

व्यापारी बोला — "हॅा तुमने मुझसे उधार लिया है क्योंकि जब तुम घर में नहीं थे तो मैंने तुम्हारी पत्नी से सौ माप बीज खरीदे थे और बदले में मैंने उसे एक ॲगूठी दी थी जिसकी कीमत सौ माप बीज की कीमत से दोगुनी थी।।'

भंडारघर की देखभाल करने वाला यह सुन कर बहुत क्रोधित हुआ। वह तुरन्त ही अपनी पत्नी के पास गया और उससे कहा — "यदि तुम इसी प्रकार करती रहीं तो हमारी दूकान का तो मान सम्मान ही समाप्त हो जायेगा। वापस करो इस आदमी की ॲगूठी।"

यह सुन कर उसने तुरन्त ही व्यापारी की ॲगूठी उसे वापस कर दी और व्यापारी भी अपनी ॲगूठी ले कर चला गया। इससे भी अधिक अच्छी बात तो यह थी कि वह अपनी ॲगूठी भी वापस ले गया और सौ माप बीज भी बिना कुछ दिये ले गया।

36 नायिनी और सिल्क की साड़ी[36]

एक बार की बात है कि एक शूरपाल नाम का एक किसान रहता था। उसकी पत्नी नायिनी कई दिनों से उसे एक सिल्क की साड़ी के लिये जिद कर रही थी।

जब भी वह अपनी यह बात कहती तो किसान उससे कहता — "प्रिये हम लोग किसान लोग हैं। क्या कभी किसी ने किसानों को सिल्क की साड़ी पहने देखा है। सूती कपड़ा ही हम लोगों के लिये ठीक है।"

सो नायिनी एक दिन गाँव के सरदार के पास गयी और उसे खाने के लिये निमन्त्रण दे कर आयी। उसके पति ने भी यह बात सुनी। सो जब वह अपने घर लौट कर आया तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "यह उचित नहीं है कि तुम गाँव के सरदार को निमन्त्रण दो। और फिर वह मेरी कोई जान पहचान का भी तो नहीं है।"

नायिनी बोली — "क्यों? या फिर तुम मुझे यह बताओ कि तुम मुझे मेरी माँगी हुई चीज़ क्यों नहीं ला कर देते। मुझे सिल्क की एक साड़ी ला कर दो।"

किसान बोला — "अच्छा अच्छा ठीक है। यदि तुम यह निमन्त्रण वापस ले लो तो मैं तुम्हें सिल्क की साड़ी ला दूँगा।"

---

[36] Nayini and the Silk Dress. (Tale No 36)

नायिनी बोली — "ठीक है तुम मुझे सिल्क की साड़ी दो मैं उससे अपना निमन्त्रण अभी वापस ले लेती हूँ।"

सो उसने एक सिल्क की साड़ी ला कर उसे दे दी। अब समस्या थी कि इस मेहमान को आने से कैसे रोका जाये। इस समस्या का हल ऐसे निकाला गया।

नायिनी ने उस सरदार से कहा — "जब आप हमारे घर खाना खाने आयें तो आप अपने साथ और दूसरे औफीसरों को भी साथ ले कर आयें। मैं आप सबको बहुत अच्छा खाना खिलाऊँगी।"

सो वे सब साथ साथ आये और सबने बहुत अच्छा खाना भी खाया। सबने एक स्वर में कहा — "शूरपाल का भाग्य बहुत अच्छा है। उसकी पत्नी से अधिक मेहरबान और अच्छी स्त्री और कोई नहीं है।"

और इस प्रकार उसने अपना वायदा भी रखा और निमन्त्रण भी रोक दिया।

37 हल चलाने वाला पूर्णपाल और मालिक की बेटी[37]

एक बार की बात है कि संग्रम नाम के एक गॉव में एक किसान रहता था जिसका नाम था शूरपाल। पूर्णपाल नाम का एक आदमी उसके खेत पर काम करता था। जब खेत पर काम करने के लिये मौसम बहुत खराब होता था तो वह अपने मालिक के घर में काम करता था।

शूरपाल की सुभगा नाम की एक बेटी थी। उसको यह हल चलाने वाला बहुत अच्छा लगता था सो वह अक्सर अपने घर से कुछ दूरी पर स्थित खेत के पास एक कुंज में उससे मिलने जाया करती थी।

खेत पर काम करने वाले कुछ मजदूरों को इस बात की भनक पड़ गयी और उन्होंने इसकी जानकारी औरों को भी दे दी। वे शूरपाल के पास भी गये और उसे बताया तो शूरपाल ने सोचा कि वह स्वयं ही इन कहानियों की जॉच पड़ताल करेगा।

सो एक दिन वह उसी जगह के पास जा कर छिप कर खड़ा हो गया जहॉ उसकी बेटी उस हल चलाने वाले से मिलती थी ताकि वह वहॉ से सब कुछ देख सके पर वे लोग उसे न देख सकें।

[37] Purnapala the Ploughman and the Master's Daughter. (Tale No 37)

जो कुछ भी उसने सुना था उससे उसे लगा कि कम से कम पहाड़ के नीचे राई तो होगी। पर हल चलाने वाले को पता चल गया कि उसका मालिक उसके ऊपर दृष्टि रखने के लिये आ रहा है तो उसने एक लम्बी सी आह भरते हुए कहा —

“मेरी भी क्या ज़िन्दगी है। अभी तो मुझे हल चलाना है खेत की घास फूस निकालनी है सुबह से रात तक काम करना है। लगता है कि मैं तो नरक में हूँ। पर मेरा मालिक बहुत अच्छा आदमी है इसलिये जितनी ईमानदारी से काम कर सकूँ मुझे उसके लिये उतनी ईमानदारी से काम करना चाहिये।”

शूरपाल ने वह सुना जो हल चलाने वाले ने कहा तो उसने सुनी सुनायी कहानियों पर विश्वास न करते हुए सोचा कि वह आदमी तो ठीक है।

39 लोहे के बाट और तराजू जिन्हें चूहे खा गये[38]

कुंडिन नाम के एक शहर में एक भूधर नाम का व्यापारी रहता था। दुर्भाग्य से उसका सारा पैसा खो गया था और यद्यपि इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी फिर भी उसके परिवार और सम्बन्धियों ने उसे छोड़ दिया था।

कहावत है कि धनी आदमी बुद्धिमान होता है धनी आदमी उदार होता है धनी आदमी गुणों का अवतार होता है धनी आदमी के बारे में हर कोई सोचता है उसको दोस्तों की कोई कमी नहीं होती। पर यदि उसका पैसा चला जाता है तो फिर उसके पास कुछ नहीं बचता।

सो इस भूधर का भी सब कुछ खो गया था सिवाय कुछ बाटों[39] और तराजू को छोड़ कर। अब वह किसी दूसरे देश चला गया था। उसने अपनी बची हुई चीज़ें अपने एक दोस्त की देखरेख में रख दी थीं जो एक व्यापारी था।

कुछ समय बाद उसका भाग्य पलटा तो वह अपने देश लौटा। लौटते ही सबस पहले उसने यह किया कि वह अपने दोस्त के पास गया और अपने तराजू और बाट माँगे। व्यापारी उन्हें देना नहीं चाहता था।

---

[38] Iron Weights and Scales Which Were Eaten by Mice. Tale No 39.

[39] Translated for the word “Weight”, such as “2 Kg Weight” means “Do Kilo ka Baat”

कुछ देर की बहस के बाद उसने कहा कि “मुझे बहुत अफसोस है कि उनको तो चूहे खा गये।” भूधर यह सुन कर चुप रह गया कुछ नहीं बोला बस अपने समय के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

इस घटना के कुछ समय बाद ही वह अपने दोस्त के घर के आस पास घूम रहा था कि उसने देखा कि उसके दोस्त का बेटा बाहर घूम रहा है। बस भूधर ने उसे उठाया और घर ले गया।

जब व्यापारी को पता चला कि उसका बेटा खो गया है तो वह बहुत परेशान हुआ। वह अपने सारे परिवार और दोस्तों को ले कर उसे ढूँढने के लिये निकल पड़ा।

एक पड़ोसी ने उनके ऐसे एक साथ रोते घूमते देखा तो उनसे पूछा कि “क्या मामला है।” उन्होंने बताया कि व्यापारी का बेटा खो गया है। हम उसे ही ढूँढने ही निकले हैं।

पड़ोसी बोला “मैं बता सकता हूँ कि वह कहाँ है। मैंने उसे भूधर के पास देखा है।”

सो वे सब लोग भूधर के घर गये। व्यापारी ने भूधर से अपना बेटा देने के लिये कहा तो भूधर बोला — “मुझे बहुत अफसोस है पर मैं तुम्हें उसे नहीं दे सकता। तुम्हारा बेटा मेरे पास था तो। हम दोनों नदी के किनारे टहल रहे थे कि एक गरुड़ आया और उसे ले गया।”

यह सुन कर व्यापारी बहुत क्रोधित हुआ और भूधर को मजिस्ट्रेट के पास ले गया कि भूधर ने उसके बेटे को चुराया है।

भूधर उसके प्रश्न का उत्तर देने के लिये आया और जब मजिस्ट्रेट ने उससे पूछा कि इस मामले में उसे क्या कहना है।

भूधर बोला — "माई लौर्ड। एक ऐसी जगह जहॉ लोहे के तराजू और बाट चूहे खाते हों वहॉ तो एक गरुड़ एक हाथी को भी आसानी से उठा कर ले जा सकता है वह तो केवल एक बच्चा था।"

मजिस्ट्रेट ने जब यह मुकदमा सुना तो फैसला दिया कि व्यापारी को भूधर की तरजू और बाट वापस भूधर को दे देने चाहिये और भूधर को व्यापारी का बेटा वापस कर देना चाहिये। वैसा ही हुआ। पर व्यापारी को चोरी के अपराध में सजा मिली।

40 सुबुद्धि और कुबुद्धि[40]

एक बार की बात है कि एक नगर में दो लोग रहते थे एक का नाम था कुबुद्धि दूसरे का नाम था सुबुद्धि। समय के साथ दोनों एक दूसरे के दोस्त बन गये।

एक दिन सुबुद्धि को किसी लम्बी यात्रा पर जाना पड़ गया तो कुबुद्धि को उसकी पत्नी के साथ रहने का अच्छा मौका मिल गया। कुछ समय बाद जब सुबुद्धि का काम समाप्त हो गया तो वह घर लौटा जबकि कुबुद्धि ने यह दिखाया था कि उसको दोस्ती कितनी झूठी और धोखेबाजी की थी।

सो जब सुबुद्धि घर वापस आया तो कुबुद्धि ने बहुत प्रेम जताते हुए उससे कहा — "प्रिय दोस्त। तुम बताओ कि तुमने अपनी इस लम्बी यात्रा में क्या कुछ आश्चर्यजनक देखा।"

सुबुद्धि बोला — "हॉ देखा तो। एक नदी के किनारे पर एक मनोरथ नाम का नगर है उसके पास मैंने एक आम का पेड़ देखा जिस पर बिना मौसम के फल आ रहे थे।"

कुबुद्धि ने पूछा — "क्या ऐसा? ऐसा कैसे हुआ?"

सुबुद्धि बोला — "ऐसा कैसे हुआ यह मैं तुम्हें सच सच बताता हूॅ।"

[40] Subuddhi and Kubuddhi. (Tale No 40)

कुबुद्धि बोला — “यदि यह बात पक्की सच निकली जैसा कि तुम कह रहे हो कि वह पक्की सच है तो तुम मेरे घर से वह सब कुछ ले जा सकते हो जिसे तुम अपने दो हाथों में उठा सकते हो और यदि नहीं निकली तो फिर मैं वैसा ही तुम्हारे साथ करूँगा।”

सौदा पक्का हो गया।

कुबुद्धि घर चला गया और फिर वह उसी रात उसी पेड़ के पास गया जिस पर ये आम लगे हुए थे। उसने वे वहाँ से आम तोड़ लिये।

जब परीक्षा का समय आया तो फल तो उस पेड़ पर कहीं दिखायी नहीं दिया। सुबुद्धि तो यह देख कर भौंचक्का रह गया पर कुबुद्धि तो सुबुद्धि की पत्नी को लेने के चक्कर में था सो वह बोला — “क्योंकि आम के पेड़ पर बेमौसमी आम नहीं हैं इसलिये अब जो सौदा हमारे बीच हुआ है उसे हमें पूरा कर लेना चाहिये।”

किसी तरह से सुबुद्धि को कुबद्धि के बुरे इरादों का पता चल गया था तो उसने इसके लिये फिर क्या किया। उसने अपनी पत्नी को घर की छत पर चढ़ा दिया और सीढ़ी खींच ली।

कुबुद्धि जल्दी ही अपने सौदे की शर्त पूरी करने के लिये आ गया। उसे देख कर सुबुद्धि बोला — “मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि तुम आ गये। तुम मेरे घर में से जो चाहे ले जा सकते हो।”

अब सुबुद्धि की पत्नी तो छत पर थी और कुबुद्धि उसे हाथ भी नहीं लगा सकता था सो वह सीढ़ी लाने के लिये चला तो सुबुद्धि ने

उसे तुरन्त ही रोक दिया — "नहीं नहीं यह नहीं चलेगा। सौदा यह था कि तुम मेरे घर में से केवल वही कुछ ले जाओगे जो कुछ तुम अपने दोनों हाथों में उठा सकोगे। इस सौदे में सीढ़ी का कहीं कोई नाम नहीं था।"

सो कुबुद्धि को खाली हाथ ही घर लौट जाना पड़ा। इसके अलावा वह सारे नगर में हँसी का पात्र और बन गया।

42 चीते को मारने वाली स्त्री–1[41]

एक बार की बात है कि देवलाख्य नाम के गॉव में एक राजकुमार रहता था जिसका नाम था राजसिंह। उसकी पत्नी एक माननीय चरित्र की स्त्री थी पर वह बहुत झगड़ालू और बात बात पर क्रोधित हो जाने वाली स्त्री थी।

एक बार उसकी अपने पति से मारा पीटी हो गयी तो वह अपना घर छोड़ कर अपने दो बेटों को साथ ले कर अपने पिता के घर चल दी। कई नगर और गॉव पार करती हुई वह मलय पर्वत के पास एक बड़े से जंगल में जा पहुॅची।

वहॉ उसे एक चीता मिल गया। चीते ने भी उसे देख लिया। क्रोध में भरा चीता अपनी पूॅछ फटकारता हुआ उसकी ओर बढ़ने लगा।

वह डर गयी पर साहस जुटा कर उसने अपने बच्चों को चॉटा मारा और बोली — “तुम लोग इस बात पर क्यों लड़ रहे हो कि इस चीते को कौन खायेगा। क्या तुम लोग देख नहीं पा रहे कि एक चीता तो हमारे सामने ही खड़ा है। पहले हम इसे खा लें फिर दूसरा ढूॅढेंगे।”

[41] The Lady Tiger Slayer. (Tale No 42)

चीते ने जब यह सुना तो सोचा "यह स्त्री तो बहुत ही बहादुर स्त्री है जो चीते खाती है।" यह सुन कर वह वहॉ से डर के मारे भाग गया।

43 चीता मारने वाली स्त्री–2[42]

जब चीता डर के मारे भागा जा रहा था तो उसे एक गीदड़ मिल गया। गीदड़ उसे इस प्रकार भागा जाता देख कर बहुत ज़ोर से हँस पड़ा और बोला — "देखो वह चीता किसी के डर के मारे भागा जा रहा है।"

चीता बोला — "दोस्त गीदड़। तुम्हारे लिये यही अच्छा होगा कि तुम भी जल्दी से जल्दी किसी दूर नगर में चले जाओ क्योंकि यहाँ आसपास में एक बहुत ही भयानक स्त्री घूम रही है जिसका रोज का खाना ही चीता है।

जैसा कि हम लोग केवल कहानियों में ही सुनते हैं। वह तो मेरे लिये बिल्कुल मौत के समान थी। तो जैसे ही मैंने उसे देखा तो मैं तो वहाँ से भाग लिया।"

गीदड़ बोला — "यह सुन कर तो मुझे बहुत ही आश्चर्य हो रहा है। तुम्हारा कहने का अर्थ यह है कि तुम आदमी के केवल एक माँस के टुकड़े से डर रहे हो।"

चीता बोला — "अरे वह आदमी के केवल एक माँस का टुकड़ा नहीं है। मैं तो उसके बिल्कुल पास था। और जो कुछ भी मैंने वहाँ खड़े रह कर सुना और देखा वह तो किसी को भी डराने के लिये काफी है।"

---

[42] The Lady Tiger Slayer-2. (Tale No 43)

गीदड़ बोला — “मैं उसे स्वयं अपनी आँखों से देखना चाहता हूँ। देखता हूँ मुझे वह चीता खाने वाली स्त्री मिलती है या नहीं। और तुम मेरे साथ नहीं आना क्योंकि वह तुम्हें पहचान लेगी।”

चीता बोला — “चाहे तुम मेरे साथ जाओ या मेरे बिना जाओ इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। तुम तो वहाँ मारे ही जाओगे।”

गीदड़ बोला — “ठीक है तो मैं तुम्हारी पीठ पर बैठ जाता हूँ और हम साथ साथ चलते हैं।”

सो गीदड़ ने अपने आपको चीते की पीठ से बाँध लिया और दोनों उस स्त्री की ओर चल दिये। बहुत जल्दी ही वह स्त्री उन्हें अपने दोनों बेटों के साथ मिल गयी।

रानी ने जब इन दोनों को आते देखा तो पहले तो वह थोड़ी डर गयी पर एक पल सोच कर वह चिल्लायी — “ओ गधे गीदड़। पहले तुम मुझे हमारे खाने के लिये तीन तीन चीते एक साथ ला दिया करते थे और आज केवल एक ही चीता लिये चले आ रहे हो।”

जैसे ही चीते ने यह सुना तो वह तो इतना डर गया कि तुरन्त ही पीछे की ओर घूमा और गीदड़ को अपनी पीठ पर लिये हुए ही वहाँ से भाग गया।

44 चीता खाने वाली स्त्री–समाप्त[43]

अब क्या था चीता तो अपनी पूरी गति से भागा जा रहा था और गीदड़ उसकी पीठ से बँधा हुआ था। गीदड़ वहाँ बैठा बैठा बहुत परेशान हो रहा था। वह यही सोच रहा था कि इस परेशानी की दशा से कैसे निकला जाये क्योंकि चीता तो इतना डरा हुआ था कि वह तो सबको चीरता हुआ बस भागा ही जा रहा था भागा ही जा रहा था।

अचानक गीदड़ बहुत ज़ोर से हँस पड़ा तो चीता बोला — "इसमें इतनी ज़ोर से हँसने की क्या बात है।"

गीदड़ बोला — "मुझे लगता है कि यह हँसने की बात है क्योंकि अभी अभी मुझे ऐसा लगा कि हमने चीता खाने वाली स्त्री को कितनी अच्छी तरह मूर्ख बना दिया। तुम्हारे कारण अब मैं भी सुरक्षित हूँ और अब तो वह बहुत पीछे रह गयी पता नहीं कहाँ। मैं इसी लिये हँस रहा था। सो मेरे प्यारे चीते अब तुम मुझे अपनी पीठ पर से उतार दो ताकि मैं यह देख सकूँ कि हम कहाँ हैं।"

अपनी बड़ाई सुन कर चीता तो बहुत प्रसन्न हो गया। वह रुका और उसने प्रसन्नतापूर्वक गीदड़ को अपनी पीठ से नीचे उतार दिया। जैसे ही गीदड़ नीचे उतरा चीता मर कर नीचे गिर गया और गीदड़ प्रसन्नतापूर्वक वहाँ से भाग गया।

---

[43] The Lady Tiger Slayer-Concluded. (Tale No 44)

कहावत है न “बुद्धि दिखावे और डींग मारने से कहीं अधिक अच्छी है क्योंकि उसके द्वारा लोग ऊँचे उठते हैं धन मान सम्मान पाते हैं। पर जिसके पास बुद्धि नहीं है वह बहुत सारी परेशानियों में घिर जाता है। अज्ञानी आदमी की शक्ति दूसरों का बताया काम करने के काम आती है जैसे एक शक्तिशाली हाथी आदमी के वश में रहता है।

46 राक्षस और ब्राह्मण की पत्नी–1[44]

वत्सोम नाम के एक नगर में एक ब्राह्मण रहता था जो जितना बुद्धिमान था उतना ही गरीब भी था। उसकी पत्नी का नाम था करगरा[45] और यही नाम उसके योग्य भी था। चारों तरफ मीलों दूर दूर तक जानवर उससे डरे रहते थे।

और एक भूत जो पास के एक पेड़ पर ही रहता था वह तो उससे इतना डर गया कि वह तो वह पेड़ छोड़ कर जंगल ही भाग गया। ब्राह्मण भी उनकी देखादेखी घर छोड़ कर भाग गया।

जाते समय वह उसी भूत से मिला जो उसके घर के पास वाले पेड़ पर रहता था। भूत ने कहा — "तुम बहुत दूर से आ रहे हो थके हुए और भूखे होगे। आओ मेरे साथ आओ मैं तुम्हें कुछ खाने के लिये देता हूँ।"

ब्राह्मण ने उसे पहचान लिया कि वह किस तरह का आदमी है सो वह थोड़ा हिचका और बोला — "प्रसन्नतापूर्वक। पर केवल एक शर्त पर कि उसके बाद तुम मुझे जाने दोगे।"

भूत बोला — "निश्चित रूप से मैं तुम्हें जाने दूँगा। तुम्हें मुझसे डरने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। सच्चाई तो यह है कि मैं तुम्हें बहुत अच्छी तरह जानता हूँ क्योंकि एक बार तुम मेरे मालिक

[44] The Goblin and the Brahman's Wife. (Tale No 46)

[45] Karagaraa means "poisoner" in English.

थे। मैं तुम्हारे घर के पास एक बड़े पेड़ पर रहता था। मैं वहाँ से तुम्हारी पत्नी करगरा से डर कर भाग आया। तुम मेरे व्यवहार पर पूर्ण विश्वास कर सकते हो।

हम यहाँ से मृगवती जायेंगे। वहाँ राजा की बेटी सुलोचना बहुत बीमार है। सब डाक्टरों ने जवाब दे दिया है। यह हो सकता है कि तुम अपनी बुद्धिमानी से वह कर सको जो इतने सारे डाक्टर नहीं कर सके। जब हम मृगवती पहुँच जायेंगे तब मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।"

जैसे ही वे मृगवती पहुँचे तो उन्होंने राजा की यह घोषणा सुनी कि हर उस आदमी का महल में स्वागत है जो राजकुमारी को ठीक कर सकता हो। सो ब्राह्मण महल गया और वहाँ जा कर उसका इलाज किया। पर उसके बाद भूत ने जैसा कि उसने ब्राह्मण से वायदा किया था उसे छोड़ने के लिये मना कर दिया।

ब्राह्मण बोला — "किसी ने सच ही कहा है कि अच्छे परिवार के लोग धार्मिक पुस्तकें पढ़ने वाले अपने वायदे नहीं तोड़ते और अमर लोग तो बिल्कुल ही नहीं तोड़ते।"

यह सुन कर भूत शर्मिन्दा हो कर चला गया। ब्राह्मण का विवाह राजकुमारी से हो गया और उसे राजा का आधा राज्य भी मिल गया। इस सबकी तो उस ब्राह्मण ने आशा भी नहीं की थी।

47 राक्षस और ब्राह्मण की पत्नी–समाप्त[46]

जब ब्राह्मण और राजकुमारी आनन्द से अपने दिन बिता रहे थे तो कुछ दिन बाद ही वह भूत वहाँ आया और राजकुमारी सुलोचना को चुरा कर ले गया। ब्राह्मण यह देख कर बहुत दुखी हुआ।

उसने एक बहुत बड़े जादूगर को अपनी सहायता के लिये बुलाया पर उसने किसी भी शर्त पर किसी भी कीमत पर उसकी सहायता करने के लिये मना कर दिया। सो ब्राह्मण ने फिर स्वयं ही सुलोचना को भूत की पकड़ से बचाने की सोचा।

जब वह भूत के रहने की जगह पहुँचा तो भूत उसे देख कर हँसा और उसका बहुत तरीके से अपमान किया फिर बोला — "मैंने अपने हिस्से का काम कर दिया अब मेरे आदरणीय दोस्त तुम अपना काम करो।"

ब्राह्मण ने एक मिनट तो प्रतीक्षा की फिर वह भूत के पास गया और उससे फुसफुसा कर बोला — "देखो करगरा आ रही है। वह बस मेरे पीछे पीछे ही है तो मैं तुम्हें सावधान करने के लिये चला आया।"

भूत को तो यह बस कह देना ही काफी था। कारगरा का नाम सुनते ही उसने सुलोचना को छोड़ दिया और वहाँ से भाग गया।

---

[46] The Goblin and the Brahman's Wife-Concluded. Tale No 47.

उसने फिर कभी ब्राह्मण को परेशान नहीं किया। उसके बाद ब्राह्मण सम्मानसहित मृगवती लौट आया।

48 अक्लमन्द मन्त्री शकटल[47]

एक बार पाटलिपुत्र में नारद नाम का राजा राज्य करता था। वह सारे संसार का राजा था क्योंकि उसने अपनी और अपने मन्त्रियों की बुद्धिमत्ता से सब राजाओं और राजकुमारों को अपने आधीन कर रखा था।

इतना सब पाने के बाद राजा नारद को बहुत घमंड हो गया। वह अपने कर्तव्यों को भूल गया। और उसने अपनी सम्पत्ति और राज्य दोनों को जुए में लगाना प्रारम्भ कर दिया कि उसके प्रधान मन्त्री ने उसे रोकने की बहुत चेष्टा की पर कोई फायदा नहीं हुआ।

बल्कि राजा को इस बात पर बहुत क्रोध आया कि प्रधान मन्त्री उसके कामों में कोई रोक लगाये। उसने शकटल – यही उस प्रधान मन्त्री का नाम था, को जेल में डलवा दिया। शकटल इतने दिन जेल में रहा कि लोगों को लगा कि अब तक तो वह मर भी गया होगा।

लगभग इसी समय पड़ोसी देश के एक राजा ने राजा नारद के पास अपने दूत भेजे। उनके साथ दो घोड़ियाँ भी थीं। राजा नारद को उन घोड़ियों की योग्यताऐं जाँचनी थीं कि उनमें से कौन सी फ़िली[48] थी।

---

[47] Shakatala the Wise Minister. (Tale No 48)

[48] Filly means a mare who is normally less than four years old.

दोनों घोड़ियाँ शक्ल सूरत और दूसरी बातों में बिल्कुल एक सी थी सो राज्य के सारे भागों से घोड़ियों के बारे में होशियार लोग बुलाये गये पर कोई भी उस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका।

तब राजा नारद को अपने पुराने प्रधान मन्त्री शकटल की याद आयी। ऐसा लग रहा था जैसे उसके बिना न तो राजा और न राज्य का ही कोई अस्तित्व था। ऐसा कहा जाता है —

एक गुणवान बुद्धिमान और ईमानदार मन्त्री को निकालने का अर्थ है राजा और उसका राज्य समाप्त कर देना। जब राज्य नष्ट हो जाये तब ऐसे मन्त्री को खोजने से क्या फायदा।

इस सिद्धान्त के ऊपर विचार कर के राजा ने अपने पुलिस चीफ़ को बुला भेजा और उससे पूछा — "शकटल का कुछ पता है।"

पुलिस चीफ़ बोला — "कुछ तो पता होगा पर ठीक से कुछ पता नहीं है। क्योंकि कड़ी सजा के कारण शकटल से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध रखना सम्भव नहीं था।"

खैर पुलिस को जेल भेजा गया जहाँ शकटल बन्द था। वह वहाँ मिल गया सो उसको बहुत अधिक सम्मान के साथ लाया गया कि वह एक माननीय आदमी था वह एक दोस्त था अध्यात्मिक गुरू था एक राजकुमार था जिसके पास लोग शरण माँगने आते थे।

खराब समय में एक राजकुमार ही प्राण बचाने वाला होता है
अध्यात्मिक गुरू धार्मिक पुस्तकें पढ़ाता है
एक दोस्त मुसीबतों में सहानुभूति दिखाता है
डर के समय में राजा ही शरण देता है

सो मन्त्री ने राजा से पूछा — "सर। आप मुझसे क्या जानना चाहते हैं।"

राजा ने शकटल को अपनी समस्या बतायी और उसे हल करने के लिये कहा। शकटल ने उन दोनों घोड़ियों को अपने सामने जीन कस कर बुलवाया और उन दोनों घोड़ियों को पास के घुड़दौड़ के मैदान में ले गया।

कुछ देर तक उन्हें ऊपर नीचे कुदा कर उसने उनकी जीन और रास आदि हटा दी। उसने जल्दी ही पता लगा लिया कि उनमें से कौन सी फ़िली है क्योंकि दूसरी घोड़ी फ़िली को बराबर चाटे जा रही थी।

इस प्रकार राजा के प्रश्न का उत्तर पा कर वह फिर राजा के पास गया और जा कर उसे बताया। राजा ने प्रसन्न हो कर उसे फिर अपने प्रधान मन्त्री पद पर रख लिया।

इस प्रकार उसने न केवल अपना खोया हुआ पद प्राप्त किया बल्कि अपनी खोया हुआ सम्मान और धन भी प्राप्त कर लिया।

50 धर्मबुद्धि और दुष्टबुद्धि[49]

संसार के किसी बहुत दूर के भाग में दो दोस्त रहते थे। उनमें से एक का नाम धर्मबुद्धि था दूसरे का नाम दुष्टबुद्धि था। एक दिन दोनों दोस्तों ने तय किया कि वे पैसा कमाने के लिये बाहर जायेंगे सो वे पैसा कमाने चल दिये। वहॉ उनको काफी सफलता मिली तो फिर उन्होंने घर लौटने का सोचा।

घर जाने से पहले उन्होंने यह विचार किया कि वे उसमें से कुछ पैसा घर ले कर जायेंगे और शेष बचा हुआ अधिक पैसा एक पीपल के पेड़ के नीचे गाड़ जायेंगे ताकि वे उसे वापस आ कर निकाल कर बॉट सकें।

ऐसा कर के वे लोग अपने अपने घर चले गये। वे बहुत प्रसन्न थे। आनन्द मनाने की सोच रहे थे।

पर दुष्टबुद्धि को यह सब करने की फुरसत कहॉ। मुझे तो यह बताते हुए भी शर्म आती है कि उसने क्या किया क्योंकि किसी बुरी बात का वर्णन करना अच्छी बात नहीं होती। बुरे कामों की तो बात भी नहीं करनी चाहिये।

दुष्टबुद्धि उस जगह गया जहॉ उन दोनों ने अपना बचा हुआ पैसा गाड़ा था। उसने वह सब पैसा निकाला और उसे अपने घर ले

[49] Dharmabuddji and Dushtabuddhi. (Tale No 50)

गया। जब पैसे को बॉटने का समय आया तो दोनों दोस्त साथ साथ उस पेड़ के पास गये जहॉ उन्होंने अपना पैसा गाड़ा था।

पर साफ था कि पैसा तो वहॉ था नहीं।

सो धर्मबुद्धि मजिस्ट्रेट के पास गया और जा कर उसे बताया कि उसके साथ क्या हुआ था और दुष्टबुद्धि का नाम लगाया कि उसने वहॉ से सारा पैसा खोद कर निकाल लिया।

मजिस्ट्रेट ने दुष्टबुद्धि को इस बात का उत्तर देने के लिये बुलाया। उसने एक हजार पौंड की जमानत दे कर मजिस्ट्रेट से कसम खा कर मुकदमा रफा दफा करवा दिया। मजिस्ट्रेट ने दुष्टबुद्धि से एक हजार पौंड ले कर दोनों को घर भेज दिया और अगले दिन दोनों से पेड़ के पास आने के लिये कहा।

दुष्टबुद्धि ने घर जा कर अपने पिता से कहा तो पिता ने बताया कि उसे क्या करना चाहिये। दुष्टबुद्धि ने अपने पिता को उस पीपल के खोखले तने में छिपा दिया।

अगले दिन मजिस्ट्रेट दुष्टबुद्धि धर्मबुद्धि और गॉव के बहुत सारे लोग इस तमाशे को देखने के लिये पीपल के पेड़ के पास पहॅुचे। दुष्टबुद्धि को पहले पवित्र किया गया फिर उसने बड़ी भक्ति से पीपल के पेड़ को सिर झुकाया और बोला —

"ओ पवित्र पेड़। मैं तुमसे विनती करता हॅू कि तुम सच बोलना कि मैंने यहॉ से पैसा लिया या नहीं।"

उसका पिता जो पीपल के पेड़ के खोखले तने में छिपा बैठा था बोला "निश्चित रूप से नहीं।" वहाँ खड़े हुए सभी लोगों ने यह उत्तर सुना तो सभी ने यही सोचा कि दुष्टबुद्धि बिल्कुल बेकुसूर है।

पर धर्मबुद्धि इस बात को मानने के लिये तैयार नहीं था क्योंकि उसने दुष्टबुद्धि के पिता की आवाज पहचान ली थी। सो उसने तुरन्त ही पेड़ में आग लगा दी।

कि तभी दुष्टबुद्धि का पिता पेड़ के खोखले तने में से बाहर निकलता हुआ दिखायी दिया। वह जल रहा था और उसका दम घुटा जा रहा था। यह देख कर मजिस्ट्रेट ने दुष्टबुद्धि को गिरफ्तार कर लिया और उससे धर्मबुद्धि को उसका पैसा वापस करवा दिया।

51 ब्राह्मण जिसने चोरों को भगाया[50]

एक नगर है जिसका नाम चमत्कारपुर है। उसमें सभी बहुत ही पवित्र और धनी लोग रहते थे। एक दिन वहाँ रहने वाले कुछ ब्राह्मणों ने यह सोचा कि वे सब वल्लभी देवता के मन्दिर जायेंगे।

सो काफी सारे घोड़े रथ आदि ले कर वे सभी लोग अपनी अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ वल्लभी देवता के मन्दिर चले। यात्रा के लिये उन्होंने काफी सारा खाना भी ले लिया था।

रास्ते में कुछ चोरों ने उनके ऊपर हमला कर दिया तो वे सब अलग अलग दिशाओं में भाग गये। उनमें से एक भला आदमी जिसका नाम गांगीला था और जो कुछ लँगड़ा सा था इसलिये वह दूसरे लोगों के साथ उतनी तेज़ी के साथ नहीं भाग सकता था सो वह अपनी गाड़ी में ही बैठा रह गया जो उसे लाती ले जाती थी।

उसने बिना कोई डर दिखाये अपने स्वाभाविक रूप में ज़ोर से अपने भाई को आवाज लगायी जो उसके पास ही था — "ज़रा मुझे यह तो बताओ कि कितने घोड़े और घाड़ियाँ तुम्हारे पास हैं। तुम जल्दी से मेरा जादू का धनुष बाण ला कर दो तो मैं जल्दी से इन सब बदमाशों का अन्त कर देता हूँ।"

चोर यह सुन कर वहाँ से तुरन्त भाग गये।

---

[50] The Brahman Who Put the Thieves to Flight. (Tale No 51)

क्योंकि यदि कोई आदमी बुद्धिमानी से ठीक समय पर ठीक बात बोलता है और अपनी समझ नहीं खोता तो कोई भी उससे कुछ भी नहीं निकलवा सकता।

52 दुर्दमन और उसके तीन साथियों के कारनामे[51]

संसार के किसी दूर के भाग में एक नगरी थी जिसका नाम था प्रतिष्ठानपुर। उसके राजा के बेटे का नाम था दुर्दमन। एक बार उसके दिमाग में आया कि उसे अपने पिता को छोड़ कर अपने गुणों पर अपना नाम कमाना चाहिये।

सो उसने अपने जैसे अपने तीन दोस्त लिये। उनमें से एक ब्राह्मण था एक व्यापारी का बेटा था और तीसरा एक बढ़ई था। सबसे पहले उन तीनों ने आपस में सोच विचार किया कि उनको अपना यह काम कैसे प्रारम्भ करना चाहिये।

अन्त में यह तय हुआ कि सबसे पहले उन्हें समुद्र से मिलना चाहिये जो अथाह सम्पत्ति का खजाना है। क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है कि —

बुद्धिमान का घर, कुलीन और जो सौभाग्यशाली होते हैं वे राजा के महल के समान होते हैं। भले लोग हर एक की भलाई करते हैं जैसे एक गिरे हुए हाथी को हाथी ही उठाता है।

सो इन सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने व्रत रखा कई भेंटें चढ़ायीं और फिर अपनी विनती ले कर समुद्र के पास पहुँचे। समुद्र देव उनकी पूजा भेंटों से इतना प्रसन्न हुए कि उन्होंने हर एक को एक एक जादुई मणि दी।

---

[51] Adventures of Durdamana and His Three Companions. (Tale No 52)

इस प्रकार उन्हें लगा कि उनकी यात्रा का प्रारम्भ अच्छा ही हुआ है। सबने अपनी अपनी मणि सुरक्षित रूप से रखने के लिये व्यापारी को दे दीं। उसने भी वायदा किया कि वह इन्हें सँभाल कर रखेगा।

अब यह व्यापारी एक बहुत बड़ा दुष्ट था। उसने यह सोचते हुए कि इन मणियों को वह अपने पास ही रख लेगा उसने ये मणियाँ ले कर अपने पाजामे के नेफे में सिल लीं। इसके बाद वे फिर अपनी यात्रा पर सड़क पर चलने लगे।

व्यापारी उन सबसे थोड़ा सा पीछे चल रहा था कि वह अचानक चिल्लाया — "मेरी सहायता करो। चोर चोर। चोरों ने मुझे लूट लिया।"

उसके दूसरे साथी यह देखने के लिये पीछे लौटे कि देखें क्या हुआ है। उसने कहा — "मैं ज़रा सा सड़क के इधर उधर हुआ था कि कुछ चोरों ने आ कर मुझे पकड़ लिया और मेरा सब कुछ लूट कर ले गये। वे सब मणियाँ भी जो समुद्र देवता ने हमें दी थीं।"

जो उसने कहा वह उसके साथियों ने सुना और आपस में सोच विचार किया। उनकी राय यह थी कि यह आदमी बदमाश था और उसने स्वयं ही उनकी चीज़ें ले ली हैं।

एक दो दिन बाद वे ऐरारती नाम के एक नगर पहुँचे जहाँ एक बुद्धिसर रहते थे जो राजा के प्रधान मन्त्री थे। उनकी प्रसिद्धि सारे संसार में फैली हुई थी।

जब ये मुकदमा करने वाले बुद्धिसर के सामने पहुँचते थे तो उन्हें केवल अपनी बात कहनी होती थी। उससे सुनते ही वह अपना फैसला सुना देता था और उसका फैसला हमेशा ही ठीक होता था।

सो राजकुमार का बेटा अपने दूसरे दो दोस्तों के साथ उसको सामने अपना मुकदमा रखने गया और जा कर सारा हाल बताया। उन्होंने यह भी कहा कि यदि वह उनका यह मुकदमा देख ले और सबसे अलग अलग प्रश्न पूछ ले तो उसे सब सच का पता चल जायेगा। उसकी जाँच पड़ताल व्यर्थ नहीं जायेगी।

जब बुद्धिसर ने यह सुना तो वह कुछ परेशान हो गया। वह किसी तरह भी यह पता नहीं चला सका कि चोर कौन है और वे मणियाँ कहाँ हैं। वह दुखी हो कर अपने घर चला गया।

उसकी बेटी ने देखा कि उसका पिता कुछ दुखी है सो उसने उससे पूछा कि क्या बात है वह इतना क्या सोच रहा है। मन्त्री ने उसे अपनी कहानी बता दी तो उसकी बेटी बोली — "पिता जी आप परेशान न हों। मैं पता लगाऊँगी कि वे मणियाँ कहाँ हैं।"

मन्त्री बोला — "बेटी जब मैं नहीं पता चला सका तो तू इसका पता कैसे लगायेगी।"

बेटी बोली — "किसी को ऐसा नहीं कहना चाहिये कि मेरा तो दिमाग ही काम नहीं कर रहा क्योंकि —

ऐसा कौन है जो किसी चीज़ के विषय में बहुत थोड़े से अधिक जान सके। परेशानियाँ बुद्धि की आँखों से जीती जा सकती हैं जैसे कि अँधेरे को लालटेन की रोशनी से दूर किया जाता है।

सो पिता ने बेटी को कह दिया कि वह भी चेष्टा करे। इसके अनुसार मन्त्री ने चारों यात्रियों को अपने घर बुलाया। वे वहाँ आ कर नहाये और पेट भर कर खाना खाया। फिर उनको सोने के लिये तीन अलग अलग कमरे दिखा दिये गये।

मन्त्री की बेटी सबसे पहले राजकुमार के बेटे के पास गयी और उससे उसने प्यार करने का नाटक किया साथ में उससे सौ पौंड भी माँगे। राजकुमार के बेटे ने कहा "मेरे पास तो पैसे नहीं हैं पर यदि तुम मुझे घर जाने दो तो मैं तुम्हें वहाँ से ला कर दे सकता हूँ।"

वह बोली — "ओह नहीं। उससे मेरा काम नहीं चलेगा। मुझे तो वे अभी अभी चाहिये।"

फिर वह ब्राह्मण के पास गयी। वहाँ भी उसने वही किया जो उसने राजकुमार के बेटे के साथ किया पर यहाँ भी उसे वही उत्तर मिला जो राजकुमार के बेटे ने दिया था।

फिर वह बढ़ई के पास गयी उसने भी यही कहा "मेरे पास तो पैसे नहीं हैं पर यदि तुम कुछ देर प्रतीक्षा करो तो मैं तुम्हें ला कर दे सकता हूँ।"

उसके बाद वह व्यापारी के पास गयी और उसके साथ भी वही किया जो उसने राजकुमार के बेटे और व्यापारी के बेटे के साथ

किया था। व्यापारी बोला — "मेरे पास पैसे तो नहीं हैं पर मेरे पास ये चार अमूल्य मणियाँ हैं। यदि तुम चाहो तो इन्हें ले सकती हो।"

इतना कह कर उसने अपने पाजामे का नेफा खोला और उसमें से चार मणियाँ निकाल कर उसके हाथ पर रख दीं।

उसने उनको लिया और यह कहती हुई चली गयी "मैं इनकी ज़रा जाँच करा लूँ कि ये असली हैं या नकली।"

वे मणियाँ ले जा कर उसने अपने पिता को दे दीं और पिता ने जो मणि जिसकी थी उसे वह मणि दे कर उन सबको सन्तुष्ट किया।

54 धर्मदत्त और उसका मन्त्री विष्णु[52]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसका नाम था धर्मदत्त जो शकावती का राजा था। वह बहुत न्यायशील राजा था। उसका एक मन्त्री था जिसका नाम सुशील था। वहीं उसके पास एक और आदमी रहता था जिसका नाम विष्णु था।

यह विष्णु भी कभी मन्त्री था पर अब उसका सारा पैसा भी खो गया था और उसका अपना पद भी। इसका परिणाम यह हुआ कि वह अब कुछ अप्रिय अप्रिय सा रहने लगा था। अपने में ही सिमटा रहता। इसके अलावा राजा भी अब उसे पसन्द नहीं करता था और उसकी ओर देखता तक नहीं था।

एक दिन सुशील ने राजा से पूछा कि विष्णु इतना निराश और अप्रिय कैसे हो गया पर राजा ने सुशील के इस प्रश्न पर कोई ध्यान नहीं दिया। फिर भी सुशील बोलता रहा — "योर मैजेस्टी। वह सुन्दर है आकर्षक है एक सम्मानित व्यक्ति है राजनीति भी बहुत अच्छी तरह जानता है आपको उसे किसी न किसी मिशन पर अवश्य ही भेजना चाहिये।"

जो सुशील ने कहा उसे सुन कर भी राजा का मन विष्णु की ओर से कुछ अधिक साफ नहीं हुआ सो उसने कुछ राख ली और

[52] Dhrmadatta and His Minister Vishnu. (Tale No 54)

उसका एक छोटा सा पार्सल बना कर विष्णु को दे कर उससे कहा कि वह उसे विदिशा के राजा शत्रुदमन के पास ले जाये।

विष्णु तुरन्त ही उस पार्सल को ले कर विदिशा की ओर चल दिया। उसको तो यह ही पता नहीं था कि उस पार्सल के अन्दर क्या था। विदिशा पहुँच कर उसने वह पार्सल राजा को दिया तो राजा ने उसे खोला और जब उसने उस पार्सल को खोल कर देखा कि उसमें क्या था तो उसका क्रोध चरम सीमा पर पहुँच गया।

इससे ऐसा लगा जैसे राजा ने विष्णु को इतनी खराब अवस्था में डाल दिया गया हो पर वह बहुत होशियार आदमी था। यह देख कर कि विदिशा का राजा इतना क्रोधित था वह बोला —

"सर। मेरे राजा अश्वमेध यज्ञ कर रहे थे और योर मैजेस्टी को यह सम्मान देने के लिये उन्होंने यज्ञ कुंड से थोड़ी सी राख आपके लिये भेजी है। ये तीन अग्नियों से उत्पन्न हुई है यह बुराइयों को दूर करती है समृद्धि लाती है और बुरी चीज़ों से बचाती है। कुछ ऐसा कहा गया है कि —

हाथी की भेंट देना अच्छी बात है। घोड़ों की भेंट देना भी अच्छी बात है। पर आपको किसी यज्ञ की राख की भेंट किस राज्य में मिलेगी।"

इतना कह कर उसने वह राख अपने हाथ में उठायी और विदिशा के राजा को भेंट कर दी। राजा ने उस राख की भेंट को

और विष्णु की बोली को इतना सराहा कि उसने उसे बहुत सारा सोना भेंट में दिया और सादर उसके देश वापस भेज दिया।

55 धोखा देने वाला ब्राह्मण और चमार[53]

चर्मकूट नाम के गॉव में श्रीधर नाम का एक ब्राह्मण रहता था। वहीं एक चमार भी रहता था जो श्रीधर के लिये उसके जूते बनाया करता था। चमार सदा ही उससे अपने जूते बनाने के पैसे मॉगता था पर कभी उसे उनके पैसे नहीं मिले।

श्रीधर सदा ही चमार से यह कह देता कि एक दिन तुम्हें इतना मिलेगा कि तुम सन्तुष्ट से भी अधिक सन्तुष्ट हो जाओगे। समय बीतता गया। कुछ समय बीतने के बाद एक दिन चमार ने ब्राह्मण को पकड़ ही लिया और उससे अपने पैसे मॉगे।

अब ब्राह्मण के लिये तो बड़ी अपमानजनक बात थी क्योंकि उस समय तो उसके पास कोई पैसा भी नहीं था सो अपनी होशियारी से उसने उससे कहा — "ओ मेरे योग्य चमार। मैंने तुमसे कहा था न कि बहुत जल्दी ही तुम्हें तुम्हारे पैसे मिल जायेंगे। गॉव के सरदार के यहॉ एक बेटा हुआ है। तुम इस बात से सन्तुष्ट हो या नहीं।"

चमार तो बड़ी मुश्किल में पड़ गया। यदि वह "ना" कहता है तब तो लौर्ड क्रोधित हो जायेगा और यदि "हॉ" कहा तो जो पैसा उसका ब्राह्मण पर बनता है वह खो जायेगा। सो इन दोनों बुराइयों में से उसने छोटी वाली बुराई चुनी और ब्राह्मण को पैसा दिये बिना ही जाने दिया।

[53] The Cheating Brahmana and the Cobbler. (Tale No 55)

57 चन्द्रलेखा जो राजा के एक बुद्धिमान आदमी के प्रेम में पड़ गयी[54]

एक बार की बात है कि विक्रमार्क नाम का एक राजा था। उसकी पत्नी का नाम था चन्द्रलेखा। एक बार ऐसा हुआ कि चन्द्रलेखा को राजा का शुभकर नाम का एक बुद्धिमान आदमी अच्छा लगने लगा। वह उसे अक्सर ही कुछ न कुछ लिखती रहती। इसके अलावा वह उसके घर भी जाती रहती।

एक राता बरसात के मौसम में चन्द्रलेखा शुभकर के घर जाने के लिये तैयार हुई तो बारिश आ गयी। बादल गरजने लगे बिजली भी बहुत ज़ोर से कड़कने लगी। अब ऐसा मौसम तो प्रेमिकाओं को अपने प्रेमियों से मिलने में बाधा डालता है।

राजा को पता चल गया कि रानी चन्द्रलेखा शुभकर के घर के लिये रवाना हो चुकी है। सो उसने काले रंग के कपड़े पहने। अपनी तलवार अपने हाथ में ली और छिप कर उसका पीछा करने लगा।

शुभकर ने अपने दरवाजे पर ही रानी का स्वागत किया और रानी से कहा "जब आकाश में इतनी सब हलचल मची है। जब

[54] Chandralekha Who Fell in Love With One of King's Wise Men. (Tale No 57)

अन्धा कर देने वाला अँधेरा सारी धरती पर छाया हुआ है। रात की घड़ियाँ भी शोर से चुप हो गयी हैं।

ऐसी हालत में तुम राजा का हरम छोड़ कर यहाँ क्यों आयी हो जो अपने शत्रुओं को इस प्रकार मार देता है जैसे समुद्र के अन्दर आग रहती है। निश्चित रूप से यह केवल एक ढोंग है कि स्त्रियाँ कमल की आँख भी नहीं सह सकतीं।"

राजा ने जब शुभकर की ये बातें सुनी तो उसे बहुत अच्छा लगा। इस बीच शुभकर ने रानी को बहुत प्यार से समझाया और तसल्ली दी।

अगले दिन राजा ने रानी को बुलवाया और पंडित को भी उससे मिलने के लिये बुलवाया। शुभकर की ओर देखते हुए उसने कहा — "निश्चित रूप से यह केवल एक ढोंग है कि स्त्रियाँ कमल की आँख भी नहीं सह सकतीं।"

शुभकर तो यह सुनते ही खो गया क्योंकि वह जान गया कि राजा उनके विषय में सब कुछ जान गये हैं क्योंकि एक भले घर में भी बुरे काम की सजा मिलती है तो यह तो राजा का महल है।

सो एक पल के लिये उसने सोचा और फिर बोला — "आपकी शान तो ओ लौर्ड समुद्र के पानी पर भी राज करती है जिसमें बहुत भयानक भयानक जानवर रहते है और आकाश तक जाती है ऊँचे ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ जाती है नरक तक पहुँचती है जहाँ बहुत बड़े बड़े जानवर जहरीली साँसें छोड़ते रहते हैं।

ओ प्यार के अवतार। निश्चित रूप से स्त्रियों का डर जो इसका सामना कर सकता है वह भी एक बहाना है।"

पंडित ने जो कहा वह राजा ने सुना। उसने पहले पंडित की ओर देखा फिर रानी की ओर देखा। उसने अपने मन में सोचा "यह तो एक बुद्धिमान और विवेकी आदमी है इसको पकड़ना आसान नहीं ही पर यह स्त्री है इसे पकड़ने में कोई कठिनाई नहीं है।"

सो उसने रानी का हाथ पकड़ा और पंडित से कहा — "लो रानी यहाँ है इसे ले लो।"

पंडित यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ पर उसने अपने भावों को छिपाते हुए कहा — "कोई आदमी जो धर्म ग्रन्थ नहीं जानता वह अच्छे और बुरे में कैसे अन्तर कर सकता है। कोई अन्धा आदमी सुन्दर और बदसूरती में कैसे अन्तर कर सकता है।"

इसका परिणाम यह हुआ कि पंडित के इस निर्णय से राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसकी अनुमति से रानी का साहचर्य पाता रहा।

59 मूर्ख और बुरे स्वभाव वाला राजपुत्र[55]

संगम नाम के एक गॉव में राजपुत्र नाम का एक आदमी रहता था। वह जितना बड़ा मूर्ख था उतना ही बुरा व्यवहार करने वाला भी था। उसकी पत्नी का नाम रुक्मिणी था।

एक दिन वे दोनों एक मन्दिर जाने के लिये निकले। रास्ते में राजपुत्र ने रुक्मिणी को सड़क पर जाते हुए आदमी को टेढ़ी ऑखों से देखते हुए देख लिया। राजपुत्र को लगा कि वह उसका ध्यान आकर्षित करने की चेष्टा कर रही है सो वह तुरन्त ही मुड़ा और घर की तरफ चल दिया।

जब वह अपने घर पहॅुचा तो वह अपनी पत्नी के साथ बड़ी सख्ती से पेश आया। उसने उसे एक कमरे में बन्द कर दिया।

रुक्मिणी ने अपने मन में सोचा "इतनी ज़रा सी बात के लिये इतनी बड़ी सजा। इससे पहले कि मैं और बड़ी हो जाऊॅ मैं किसी और को घर में ले आऊॅगी और अपने पति की ऑखों के सामने ही उससे प्यार करूॅगी।"

कुछ समय बाद उसके पति ने उसे आजाद कर दिया। उसके बाद जो उसे पहला आदमी मिला वह वही आदमी था जिससे वह अपने पति के साथ मन्दिर जाते समय मिली थी।

---

[55] Stupid and Ill-tempered Rajputra. (Tale No 59)

उसने उसे बुलाया और उससे कहा — "आज शाम को तुम मुझसे मिलने आना। हम लोग ऑगन में लगे इमली के पेड़ के नीचे बैठेंगे।"

वह यह प्रस्ताव सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ। जब समय आया तो वह उसके घर पहुँच गया वहाँ इमली के पेड़ के नीचे आराम किया नाश्ता किया। जब वह आराम से बैठ गया तो रुक्मिणी ने अपने पति को बुलवा लिया।

उसका पति अपना धनुष बाण ले कर वहाँ आया तो रुक्मिणी बोली — "प्रिय तुम तो बहुत अच्छा निशाना लगाते हो। तुम तो शक्तिशाली हीरो हो। तुम्हारी शक्ति और निशाना दोनों ही गाँव भर में बहुत प्रसिद्ध हैं। मेरी इच्छा है कि तुम थोड़ी सी चाँदनी मेरे लिये भी काट दो।"

अब राजपुत्र तो मूर्ख था ही उसने अपना धनुष उठाया और चाँदनी की एक किरन की ओर निशाना बाँधा पर उसका निशाना चूक गया। इस पर उसकी पत्नी ताली बजा बजा कर हँस पड़ी।

जब उसने देखा कि वह उसकी इस गलती पर हँस पड़ी तो उसने दूसरा बाण ढूँढने की चेष्टा की पर वह उसे कहीं मिला नहीं। जब वह अँधेरे में यह सब करने की चेष्टा कर रहा था तो वह चिल्लायी — "अरे ओ मूर्ख। मैंने अपना इरादा पूरा कर लिया है। मैं अपने प्रेमी को अपने मकान में ले आयी हूँ। तुम बहुत अच्छा निशाना लगाते हो पर इस बार तुम असफल रहे। अब मैं जाती हूँ।

बाई बाई।" यह कह कर वह एक घोड़े पर चढ़ी और अपने प्रेमी के साथ चली गयी।

राजपुत्र बेचारा लज्जित सा वहीं खड़ा रह गया। उसने उसे बिना कुछ कहे ही जाने दिया। क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है — "यहाँ तक कि ब्रह्मा जी भी स्त्रियों के जाल में फँस जाते हैं। स्त्रियों का मुकाबला कौन कर सकता है। स्त्रियाँ दुखी जीवन की जड़ हैं जिसमें से नीचता के पेड़ उगते हैं उनके फूल इस तरह के हैं जिनमें से पछतावे के फल निकलते हैं।

स्त्रियाँ शान्ति कैसे ला सकती हैं। स्त्रियों से तो गड़बड़ी की स्थिति पैदा होती है और वह गड़बड़ी उन लोगों को अपने वश में कर लेती है जो उनसे कोई मतलब रखते हैं। उन्हें अपने से दूर रख कर ही हम अपने आपको प्रसन्न रख सकते हैं।"

प्रभावती तोते से बोली — "पर स्त्रियों के कारण ही तो हम सब यहाँ हैं। स्त्रियाँ ही तो वृद्धि का कारण हैं। प्रसन्नता का कारण हैं। वे बुरी कैसे हो सकती हैं। उनके बिना तो हँसी खुशी ही नहीं। उनके बिना तो किसी पुरुष का कोई अस्तित्व भी नहीं।

इसके अलावा स्त्रियाँ तो अमृत का घड़ा बनायी गयी हैं आनन्द की खान बनायी गयी हैं प्रेम के रहने का स्थान बनायी गयी हैं। स्त्रियों के साथ से अधिक और कौन सी ऐसी चीज़ है जो शान्ति और प्रसन्नता देती हो।"

तोते ने सुना जो प्रभावती ने कहा फिर बोला — "यूनीफौर्म हाथी और घोड़े, ऊन लकड़ी और पत्थर, और पानी स्त्री और पुरुष में बहुत अधिक अन्तर है।

60 हरिदत्त और मणियों जड़ा कमरा[56]

एक राजा ने एक बहुत ही शानदार कमरा बनवाया और उसे बहुत सारे सोने और जवाहरातों से सजाया। पड़ोस के एक राजा ने जब इस कमरे के विषय में सुना तो उसने हरिदत्त नाम के अपने एक दूत को हाथी घोड़े और जवाहरात के साथ उस राजा के देश भेजा ताकि वह यह देख कर आ सके कि जिस कमरे की इतनी प्रशंसा सुनी गयी थी वह सचमुच उतनी प्रशंसा के योग्य था भी या नहीं।

जब वह उस देश पहुँचा तो राजा के पास गया और बोला — "योर मैजेस्टी। क्या मैं आपका वह सुप्रसिद्ध शानदार कमरा देख सकता हूँ जिसे आपने अभी अभी बनवाया है।"

राजा ने हरिदत्त से सहर्ष कहा कि क्यों नहीं। वह उसे अगली सुबह देख सकता है। अगले दिन राजा ने अपना एक आदमी उसके साथ उसे कमरा दिखाने के लिये भेज दिया।

दूत उस कमरे की चमक धमक देख कर इतना चकाचौंध हो गया कि वह यही नहीं सोच सका कि वह उसे सच में देख रहा है या फिर सपना देख रहा है।

सो उसने अपनी जेब से एक गिरी निकाली और उसे फर्श पर फेंक दी। इससे उसे विश्वास हो गया कि वह सच ही देख रहा था।

---

[56] Haridatta and the Jewlled Hall. (Tale No 60)

वह अपने मन में आश्चर्य और प्रशंसा के भाव लिये अपने देश लौट आया।

61 तेजुका और नकली डाक्टर[57]

एक बार की बात है कि खोरसम नाम के गॉव में एक व्यापारी रहता था। उसकी पत्नी का नाम था तेजुका। वह बहुत सुन्दर थी पर वह बहुत छिछोरी थी।

एक दिन वह अपनी सहेलियों के साथ एक धार्मिक जुलूस देखने गयी। वहॉ उसे एक बहुत सुन्दर नौजवान मिल गया जिसे वह देखते ही प्यार करने लगी। क्योंकि "किसी शादी में, राजा के महल में, किसी दूसरे के घर में, स्त्री किसी भी शरारत में पड़ जाती है।"

यह भी कहा गया है कि "घर में हो या रेगिस्तान में हो, यज्ञ में हो या तीर्थयात्रा में हो, किसी त्यौहार में हो या भीड़ में हो या नगर में हो या गॉव में हो, जहॉ घूमने की आजादी हो या बन्द घर में भी हो, या खेतों में हो या अन्दर आते समय हो या बाहर जाते समय हो या दिन हो या रात हो कहीं भी हो स्त्री निश्चित रूप से गलत रास्ते पर ही चलती है।

सो तेजुका ने उसको इशारों से अपने पास बुलाया और उससे कहा — "मुझे तुमसे प्यार हो गया है पर मेरा पति बहुत ही अप्रिय किस्म का और बुरे स्वभाव का है वह मुझे घर के बाहर नहीं जाने देता। मैं तुम्हें एक तरकीब बताती हूॅ।

---

[57] Tejuka and the Pretended Doctor. (Tale No 61)

तुम मेरे घर के बाहर आना और वहाँ से एक बर्तन में साँप रख कर मेरे घर के अन्दर फेंक देना। साँप तो चला जायेगा पर मैं बहुत ज़ोर से चिल्लाऊँगी कि साँप ने मुझे काट लिया है। तब तुम वेश बदल कर यानी एक डाक्टर का वेश रख कर आना तो मेरे पति तुम्हें अवश्य ही अन्दर बुला लेंगे।"

उसने वैसा ही किया जैसा कि उससे कहा गया था। वह आया और साँप रखा एक बर्तन उसके आँगन में फेंक दिया। तेजुका एकदम से चिल्लायी — "कोई मुझे बचाओ। इस बर्तन में साँप था उसने मुझे काट लिया है।"

उसने बहुत शोर मचाया तो उसके पति को भी बहुत परेशानी हुई। उसी समय वह आदमी एक डाक्टर के वेश में उस घर के सामने से गुजरा।

तेजुका फिर चिल्लायी — "किसी डाक्टर को बुलाओ ताकि वह मेरा दर्द दूर कर सके। मेरी चिता के लिये लकड़ी इकट्ठा करो क्योंकि मैं तो अब निश्चित रूप से मर जाने वाली हूँ।"

सो उसके पति ने बाहर झाँक कर देखा तो उसको यह आदमी दिखायी दिया तो उसने सोचा कि यह डाक्टर है सो उसने उसे अन्दर बुला लिया।

नकली डाक्टर ने स्त्री का घाव देखा और उसके पति से कहा — "उफ़। यह घाव तो बहुत ही खतरनाक है पर आप बहुत

भाग्यशाली हैं कि आपको मैं मिल गया क्योंकि मैं इसे बिल्कुल ठीक कर सकता हूँ।"

व्यापारी ने डाक्टर से विनती की कि वह उसकी पत्नी को ठीक कर दे। तब डाक्टर ने तेजुका के शरीर पर किसी तेज़ मरहम का लेप कर दिया और उसके पति से कहा — "आप चिन्ता न करें। मैंने इनके शरीर पर बहुत ही असरदार मरहम लगा दिया है जो किसी भी जहर को दूर करने के लिये काफी है। आप भी इसे लगा सकते हैं।"

व्यापारी ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था। पर उस मरहम को लगाने पर उसकी आँखों से इतना पानी बहने लगा कि उसे उसे बीच में ही रोकना पड़ा। उसने डाक्टर से कहा — "अच्छा हो इसे आप ही लगा लें।" कह कर वह कमरे से बाहर चला गया।

जब व्यापारी बाहर चला गया तो डाक्टर और व्यापारी की पत्नी ने बहुत आनन्द किया। चालाक तेजुका जल्दी ही ठीक हो गयी। उसके बाद डाक्टर उनके घर कई बार आता रहा और व्यापारी की पत्नी भी बहुत प्रसन्न रही।

65 साधु का शिष्य और मॉस का टुकड़ा[58]

गणस्थान नाम की एक जगह पर एक भक्त रहता था। उसका नाम श्रीवत्स था। वह महेश्वर का बहुत बड़ा भक्त था। एक दिन वह अपने एक शिष्य के साथ वाराणसी की ओर रवाना हुआ। रास्ते में उसके शिष्य को मॉस का एक टुकड़ा दिखायी दे गया तो वह उसे उठाने के लिये रुक गया।

कई साधुओं ने जो उनके साथ साथ ही जा रहे थे उसे ऐसा करते हुए देख लिया इससे श्रीवत्स बहुत कठिनाई में पड़ गया क्योंकि वे सभी एक साथ आये और उसके और उसके शिष्य की हॅसी उड़ायी।

उनकी बातों के उत्तर में वह बोला — "हॉ यह मेरा शिष्य है। और यह भी सच है कि उसने मॉस का टुकड़ा उठाया है। पर यह भी सच है कि उसे इस बात का पता नहीं था कि यह एक मॉस का टुकड़ा है।"

[58] The Disciple of the Ascetic and the Piece of Meat. (Tale No 65)

66 बहेलिया और कबूतर[59]

एक दूर देश में एक बहुत ही रमणीक जंगल है जो लोगों के रहने की जगह से दूर है। यह बहुत दूर तक फैला हुआ है। इसमें बहुत सारी चिड़ियाँ रहती हैं। इसी जंगल में एक घास का मैदान है जिसके बीच से एक नदी बहती है।

इसी नदी के किनारे पर अंजीर का एक बड़ा छायादार पेड़ है जिसके नीचे बतखों का राजा जब अपने सारे दिन के घूमने से थक जाता है तब अपने साथियों के साथ उसके नीचे बैठ कर आराम करता है।

एक दिन जब बतखें वहाँ नहीं थे तो एक बहेलिया वहाँ आया और उसने पेड़ के पास अपना जाल बिछा दिया। शाम को वे सब रोज की तरह वापस लौटे तो सारे बतखें जाल में पकड़े गये थे।

जब उनके राजा ने देखा कि वे सब जाल में पकड़े गये हैं तो उसने उन सबको इस परेशानी से बाहर निकालने का कोई उपाय सोचना प्रारम्भ किया।

सब मामले पर विचार कर के वह बोला — “जब सुबह को बहेलियाँ यहाँ आये तो तुम सब बिल्कुल चुपचाप पड़े रहना और ऐसा बहाना बनाना जैसे कि तुम सभी मर गये हो।

[59] The Fowler and the Pigeons. (Tale No 66)
[Sorry, Pigeon word is used in its title, but the Geese word is used in the text.]

वह सोचेगा कि तुम सब वास्तव में मर गये हो सो वह तुम्हें जाल में से निकालेगा और एक ओर रखता जायेगा। उसके बाद तुम कूद जाना और जितनी तेज़ी से उड़ सको उड़ जाना।" ऐसा ही करने का विचार किया गया।

अगले दिन सुबह जब बहेलिया यह देखने के लिये आया कि कोई बतख उसके जाल में फँसी या नहीं तो वह तो इतनी सारी बतखों को जाल में देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। वे सब इतनी शान्ति से पड़े हुए थे कि उसे लगा कि वे सब मर गये थे।

उसने एक एक कर के उन सबको जाल में से निकाल कर उन्हें एक ओर रखना प्रारम्भ किया। जैसे ही उसने उन सबको बाहर निकाला वे सब उड़ उड़ कर अपने अपने घर चले गये। इस प्रकार बतखों के राजा की बुद्धिमानी से सब बतखों के प्राण बचे।

67 बन्दर और मगर[60]

पुष्पाकर नाम का एक जंगल था उसमें एक छोटा सा बन्दर रहता था जिसका नाम था वनप्रिय। उस जंगल में एक नदी भी बहती थी। एक दिन जब वह बन्दर उस नदी के किनारे टहल रहा था तो उसने एक मगर धूप खाता देखा।

उसने मगर से पूछा — "क्या तुम अपनी पानी की ज़िन्दगी से इतने तंग आ गये हो कि यहाँ जमीन पर बाहर आ गये।"

मगर ने सुना जो बन्दर ने कहा तो वह बोला — "किसी के पास यदि कोई ऐसी स्थिति है जिसमें वह प्रसन्न है जिसे अपनी सेवाओं का पूरा पूरा बदला मिलता हो तो वह तो उस जगह से पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहेगा। क्योंकि ऐसा कहा गया है कि —

"लंका सारी सोने की बनी हुई है तो भी मुझे उसकी चिन्ता नहीं है पर क्योंकि अयोध्या मेरे पिता की है इसलिये मुझे तो वही पसन्द है।"

पर इसके अलावा भी और कुछ है जिसने मुझे बहुत प्रसन्नता दी है और वह है तुम्हारा साथ क्योंकि यह लिखा हुआ है कि "पवित्र नहाने की जगहों पर कभी कभी ही नहाना लाभदायक होता है पर किसी भले आदमी के दर्शनों से तो हर समय लाभ ही लाभ

[60] The Monkey and the Crocodile. (Tale No 67)

होता है।" इसके अनुसार मेरे साथ एक अच्छी घटना हुई कि मुझे कम से कम एक तो ऐसा मिला जो मुझसे इतने मीठे शब्द बोला।"

बन्दर बोला — "मेरे प्यारे मगर। आज से मैं तुम्हारे साथ ही रहा करूँगा क्योंकि तुम्हारे शब्द तो सच्ची दोस्ती के शब्द हैं। क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है कि "बुद्धिमानों की राय में दोस्ती भले आदमियों का साथ है।" इस कारण से मैं तुम्हारी उतनी मेहमानदारी करूँगा जितना कि मैं कर सकता हूँ।"

इतना कह कर बन्दर मगर के लिये कुछ मीठे पके हुए फल ले आया जो अमृत की तरह मीठे थे।

उस दिन के बाद से बन्दर रोज उसे पके मीठे केले खिलाता। मगर कुछ फल स्वयं खाता और कुछ अपनी पत्नी के लिये ले जाता।

एक दिन मगर की पत्नी ने मगर से पूछा कि वह ये फल लाता कहाँ से है तो उसने उसे सारी कहानी ठीक ठीक बता दी जैसी कि घटी थी। पत्नी ने अपने मन में कहा "ऐसा लगता है कि यह बन्दर तो ऐसे ही मीठे फल खाता होगा। मुझे आश्चर्य है कि उसका रोजमर्रा का खाना क्या होगा।"

अब मगर की पत्नी को बच्चे की आशा थी सो उसे अजीब अजीब चीज़ें खाने की इच्छा होती थी। इसलिये उसने अपने पति से कहा — "मुझे वह फल खाना है जो वह बन्दर सदा खाता रहता

है। यदि तुम मुझे वह फल नहीं खिलाओगे तो मैं निश्चित रूप से मर जाऊँगी।"

सो मगर यह सुन कर अपने काम पर चल दिया।

वह जल्दी ही नदी के किनारे उस जगह आ गया जहाँ वह बन्दर से पहली बार मिला था। उसे वहाँ बन्दर मिल गया। उसने बन्दर से कहा — "मेरे प्यारे दोस्त। तुम्हारे भाई की पत्नी तुमसे मिलने की बहुत इच्छुक है। क्या तुम मेरे साथ मेरे घर चलोगे?"

बन्दर ने उसका निमन्त्रण सहर्ष ही स्वीकार कर लिया और बिना किसी हिचकिचाहट के मगर की पीठ पर बैठ गया। वे नदी में चलने लगे। रास्ते में बन्दर ने कुछ सोचा तो मगर से पूछा — "अभी अभी मुझे विचार आया कि मैं वहाँ से वापस कैसे लौटूँगा।"

मगर ने बन्दर की परेशानी समझी और उसे घर लौटने का रास्ता समझाया।

बन्दर बोला — "प्यारे मगर। तुम्हारी यह बात कहने से कोई लाभ नहीं क्योंकि मुझे अच्छी तरह मालूम है कि मैं उस समय तक इसे याद नहीं रख पाऊँगा। इसके अलावा अब मेरा तुमसे प्यार भी कम हो गया है इसलिये अब मेरे तुम्हारे साथ तुम्हारे घर जाने का भी कोई लाभ नहीं।"

इस पर मगर बोला — "तो फिर अब मैं तुम्हें कहाँ उतारूँ।"

बन्दर बोला — "मगर भाई। क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी कि मेरा दिल तो हमेशा ही अंजीर के पेड़ में

रहता है। मुझे तो हमेशा पवित्र अंजीर खाने की इच्छा रहती है। तुम यदि इसका अर्थ समझ गये हो तो मुझे तुरन्त ही वापस ले चलो।"

यह सुन कर मूर्ख मगर तुरन्त पलटा और उसे नदी के किनारे वापस ले चला। जैसे ही वे नदी के किनारे पहुँचे बन्द मगर की पीठ पर से कूद कर जमीन पर आ गया और अपने अंजीर के पेड़ पर चढ़ गया।

ऊपर जा कर वह बोला — "अब तुम अकेले ही जाओ। मैं अब तुम्हारी पकड़ से बाहर हूँ। बुद्धिमान लोगों का कहना है कि "जो लोग जमीन पर रहते है उनकी पानी में रहने वालों से कभी दोस्ती हो ही नहीं सकती।"

सो मगर दुखी हो कर वहाँ से वापस चला गया। जो लोग बुद्धिमान होते हैं वह कठिनाई में पड़ जाने के बाद भी अपनी बुद्धि के प्रयोग से उस कठिनाई से बाहर निकल कर आते हैं।

68 ब्राह्मण और व्यापारी की बेटी[61]

विद्यास्थान नाम के एक गॉव में केशव नाम का एक ब्राह्मण रहता था। एक बार वह झील में नहाने के लिये जा रहा था कि रास्ते में उसे व्यापारी की एक सुन्दर बेटी मिल गयी। उसे देखते ही उससे उसे प्यार हो गया।

फिर जब वह नहा कर वापस आ रहा था तो वह उसे फिर से मिल गयी। उसके पास पानी से भरा एक घड़ा था। उसने उससे पूछा कि क्या वह पानी का घड़ा उसके सिर पर रखवाने में उसकी सहायता कर देगा।

वह तुरन्त ही तैयार हो गया सो जब वह पानी का घड़ा उसके सिर पर रखवा रहा था तो उसने धीरे से उसे चूम लिया। इत्तफाक से लड़की का पिता भी वहीं से गुजर रहा था उसने देख लिया। उसने अपनी बेटी को तंग करने के अपराध में केशव को बुलाया।

अब ब्राह्मण तो कठिनाई में फॅस गया पर उसका एक दोस्त था जिसका नाम था वितर्क। उसने यह हाल सुन कर ब्राह्मण से कहा — "प्यारे दोस्त। तुम मेरी बात सुनो। जब तुम अदालत में आओ तो ध्यान रखना कि तुम बहुत ही अस्पष्ट शब्दों में बोलना ताकि कोई तुम्हें समझ न सके।"

[61] The Brahmana and the Merchant's Daughter. (Tale No 68)

सो उस ब्राह्मण ने वैसा ही किया जैसा उसके दोस्त ने कहा था। जब उसने अदालत में बोला तो जज उसकी बात समझ ही नहीं सका तो वह झल्ला कर बोला — "मुझे नहीं लगता कि इस आदमी ने कोई अपराध किया है। यह तो बहुत ही माननीय आदमी है।"

इस प्रकार अपने दोस्त वितर्क की सहायता से न केवल केशव निरपराध ही साबित हुआ बल्कि उसका चरित्र भी और ऊँचा हो गया।

69 वगिका जिसने टैंक में गिर जाने का बहाना किया[62]

एक बार की बात है कि एक गॉव में एक व्यापारी रहता था जिसकी पत्नी का नाम वगिका था। वह व्यापारी अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि उसके पति को नहाना था तो वह उसके नहाने की तैयारी में लगी थी कि उसको अपना एक प्रेमी सड़क पर जाता दिखायी दे गया।

यह देख कर उसने अपने पति से कहा कि उसके उसके नहाने के लिये काफी पानी नहीं था और उसे यह जताने के लिये वह और पानी लेने जा रही है घर के बाहर भागी। फिर वह अपने दोस्त के साथ काफी देर तक बाहर रही। इस सारा समय उसका पति अपने नहाने की प्रतीक्षा में बैठा रहा।

अब उसके सामने प्रश्न यह था कि वह घर जा कर क्या बहाना बनाये कि वह इतनी देर कहॉ थी। उसने एक पल सोचा और वहीं अपने घर के सामने वाले तालाब में कूद गयी।

और कूद कर चिल्लायी — "मुझे बचाओ मुझे बचाओ। मैं डूबी मैं डूबी।"

---

[62] Vagika Who Pretended to Fall in the Tank. (Tale No 69)

उसके पति ने उसके पानी में गिरने की छपाक की आवाज और फिर अपनी पत्नी के चिल्लाने की आवाज सुनी तो वह यह देखने के लिये बाहर आया कि कहीं उसकी पत्नी किसी कठिनाई में तो नहीं है।

जैसे ही वह बाहर आया और अपनी पत्नी को तालाब में डूबते देखा तो वह तुरन्त ही उसमें कूद पड़ा और बिना उससे कुछ कहे सुने और पूछे गछे उसे बचा कर घर ले आया।

इन कहानियों के समाप्त होने पर मदन लौट आया। प्रभावती ने बहुत प्यार से उसका स्वागत किया।

तोते ने बहुत धीमे से कहा — "स्त्रियों में प्यार नाम की कोई चीज़ नहीं होती। घमंड नाम का भी कुछ नहीं होता। जितनी देर तुम बाहर रहे यह मेरी दोस्त थी यह मेरे प्रति ही वफादार थी।"

मदन ने जो तोते ने कहा वह सुना पर उसने उसकी ओर कोई अधिक ध्यान नहीं दिया। तोता मुस्कुराया और बोला — "जो अच्छी सलाह सुनता है और उसे मानता है वह इस संसार में और दूसरे संसार में भी सुखी रहता है।"

अब मदन को लगा कि उसे तोते से यह पूछना चाहिये कि उसका इस बात को कहने का क्या तात्पर्य है। प्रभावती भी यह सुन कर कुछ उत्सुक हो गयी कि देखें अब क्या निकल कर आता है।

क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है कि "अच्छाई सदा ही मुखर रहती है क्योंकि उसके अन्दर अच्छाई की भावना छिपी रहती है। नीच लोग सदा ही डरे रहते हैं क्योंकि उनकी बुरी नीयत उनको कायर बनाती है।"

सो प्रभावती ने अपने पति से कहा — "सर। आपकी यह जगह तो बहुत ही अच्छी है क्योंकि इस घर में एक तोता रहता है जो ऐसा लगता है कि यह सीधा भगवान के घर से आया है क्योंकि यह सदा बुद्धिमानी की बात करता है। यह तो मेरे पति और बेटे दोनों के बराबर था।"

तोता अपने विषय में ऐसा सुन कर कुछ शर्मा गया क्योंकि उसे लगा कि वह ऐसी सब प्रशंसा के योग्य नहीं था। मदन ने प्रभावती से कहा — "ज़रा मुझे भी तो बताओ कि वे बुद्धिमानी की बातें क्या थीं जिनसे तोते से तुम्हें तसल्ली मिली।"

प्रभावती बोली — "मेरे स्वामी। सच बोलने वाला तो मिल सकता है पर कोई अच्छा सुनने वाला नहीं मिल सकता। क्योंकि कुछ ऐसा कहा गया है कि "जो लोग मीठा बोलते है उनका सब जगह स्वागत होता है। पर जो न अच्छा लगने वाला सच बोलते हैं उनकी बात कोई नहीं सुनता।

स्त्रियाँ तो बहुत ही चंचल होती हैं। उनके मन में पति के लिये या तो बिल्कुल ही प्यार नहीं होता या फिर बहुत थोड़ा प्यार होता है। वे अपने विषय में अधिक सोचती हैं। वे अज्ञानी हैं वे अपने कर्तव्यों के पालन में लापरवाह होती हैं और जब वे किसी आदमी को पकड़ लेती हैं तो वे उसको अपने जाल में से ऐसे निकालती हैं जैसे किसी मछली को निकालते हैं।

वे समुद्र की लहरों की तरह से बदलती रहती हैं। शाम के बादलों की तरह से एक जगह से दूसरी जगह जाती रहती हैं। जब उनका उद्देश्य पूरा हो जाता है तो वे आदमी को एक निचोड़े हुए फटे हुए कपड़े की तरह से फेंक देती हैं। वे आदमी के दिल में घुस जाती हैं और फिर उसे परेशानी क्रोध और धोखेधड़ी से भर देती हैं। ऐसा क्या है जो स्त्रियाँ प्राप्त नहीं कर सकतीं।

प्रिय अब तुम मेरी सुनो। जब तुम चले गये तब यद्यपि हम लोग अलग अलग थे फिर भी कुछ समय तक तो मैं तुम्हें याद करती रही पर फिर मेरी कुछ नीच सहेलियाँ आयीं और उन्होंने मुझे भटकाने की चेष्टा की पर इस चिड़िया ने मुझे उनके पीछे जाने से मुझे **70** रातों तक कहानियाँ सुना सुना कर रोका।

इस प्रकार इसने मुझे मेरी इच्छाओं के पीछे भागने से रोका और मैं अपनी बुरी इच्छाओं को पूरा नहीं कर पायी। आज से, जीवन में या मृत्यु के बाद भी, ओ मेरे प्रिय तुम्हीं मेरे जीवन के उद्देश्य रहोगे।"

पत्नी के इस कथन के बाद मदन ने तोते से पूछा कि यह सब वह क्या कह रही थी।

तोता बोला — "किसी भी बुद्धिमान को कोई भी बात जल्दी में नहीं कहनी चाहिये। जो उचित और अनुचित का भेद जानते हैं उन्हें उसी के अनुसार काम करना चाहिये।

सर। मैं मूर्ख लोगों की, पियक्कड़ों की, स्त्रियों की, रोगियों की, प्रेमियों की, कमजोरों की, जल्दी से क्रुद्ध होने वालों की, पागलों की, लापरवाहों की, आसानी से डरने वालों की और भूखे लोगों की या फिर बहुत कम गुणों वालों की बात नहीं कहता।

दस तरह के लोग होते हैं जो न्यायशील तरीका नहीं जानते – पागल, लापरवाह, पियक्कड़, कमजोर, क्रोधी, भूखा, जल्दबाज, कायर, लालची और कामी।

मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप प्रभावती को उसकी कमियों के लिये क्षमा कर दें क्योंकि इसमें उनका कोई दोष नहीं है बल्कि दोष तो उनकी संगत का है।

क्योंकि यह कहा गया है कि "गुणवान लोग यदि किसी बुरे रास्ते पर चलते हैं तो इसमें उनका नहीं बल्कि उनके साथ का कुसूर होता है। यहाँ तक कि भीष्म जी ने भी दुर्योधन के असर में गाय चुरायी थी।

राजा की बेटी को एक विद्याधर ने भटका दिया था लेकिन क्योंकि उसका दोष बहुत ही सीधा सादा था इसलिये उसके पिता ने उसे क्षमा कर दिया था।"

उसके बाद तोते ने मदन को आगे लिखी कहानी सुनायी।

70 गन्धर्व की बेटी जिसे नारद ने शाप दिया[63]

एक पहाड़ है जिसका नाम मलय पर्वत है। उसकी चोटी पर गन्धर्वों का एक नगर है जिसका नाम मनोहर है। वहाँ मदन नाम का एक गन्धर्व रहता था। उसके एक पत्नी थी जिसका नाम था रत्नावली। उनकी एक बेटी थी जिसका नाम था मदनमंजरी।

मदनमंजरी बहुत सुन्दर और आकर्षक थी। जो भी उसे देख लेता था वह बस उसी में खो जाता था चाहे वह देवता हो या कोई हीरो हो। एक दिन नारद जी वहाँ आये तो उन्होंने भी उसको देखा तो उसे देख कर तो उनका दिमाग ही घूम गया।

कुछ समय बाद जब नारद जी जो एक ऋषि थे अपने आपे में आये तो उन्होंने उसे शाप दिया "क्योंकि तुम्हारी सुन्दरता ने मेरे अन्दर काम भावना जगायी है तो तुम धोखे की शिकार होगी।"

जब लड़की के पिता ने नारद जी का यह शाप सुना तो उन्होंने ऋषि के सामने जमीन तक झुक कर उनसे विनती की कि "हे ऋषि। मेरी बेटी पर दया कीजिये और उसे क्षमा कीजिये।"

नारद जी बोले — "मेरा शाप झूठा नहीं हो सकता सो वह धोखा तो खायेगी ही पर उससे इसे कोई हानि नहीं होगी और न इसे पति मिलने में कोई परेशानी ही होगी। मेरु पर्वत की चोटी पर

[63] Gandharva's Daughter Who Was Cursed by Narada. (Tale No 70)

विपुल नाम का एक नगर है जहाँ कणप्रभ नाम का एक गन्धर्व रहता है। वही तुम्हारी बेटी का पति होगा।"

इतना कह कर नारद जी चले गये और उनके कहे अनुसार उस गन्धर्व ने अपनी बेटी कणप्रभ गन्धर्व को दे दी। कुछ समय बाद ही उसके पति को किसी काम से कैलाश पर्वत जाना पड़ गया। उसके जाने से वह बहुत अधीर हो रही थी उसे तसल्ली देना असम्भव सा हो रहा था। वह अपने घर के आँगन में पड़े पत्थर पर लेट गयी।

एक विद्याधर ने उसे देख लिया तो वह भी उससे प्रेम करने लगा। उसने उससे अपना प्रेम व्यक्त किया तो उसने बिना किसी हिचकिचाहट के उसे मना कर दिया। पर उसने उसके पति का रूप रखा और अपना उद्देश्य पूरा किया।

कुछ समय बाद ही उसका पति वापस आ गया पर उसे लगा कि वह उसे देख कर प्रसन्न नहीं हुई। सो उसे लगा कि लगता है कि वह किसी और की ओर आकर्षित हो गयी है। धीरे धीरे उस नये आदमी से उसे द्वेश हो गया और वह यह सोचने लगा कि वह अपनी पत्नी की हत्या कर देगा।

जब मदनमंजरी को यह पता चला तो वह दुर्गा जी के मन्दिर गयी और वहाँ जा कर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

देवी ने उसका रोना सुना तो उसने उसके पति से कहा — "ओ भले गन्धर्व। तुम्हारी पत्नी निर्दोष है। उसे एक विद्याधर ने तुम्हारा

रूप ले कर धोखा दिया है। जब उसे सच का पता ही नहीं था तब तुम उस पर कोई आरोप कैसे लगा सकते हो।

इसके अलावा यह तो केवल नारद जी के दिये गये शाप का परिणाम था। और अब क्योंकि उनका शाप काम कर चुका है इसलिये अब वह दोषरहित हो गयी है इसलिये अब तुम्हें उसे क्षमा कर देना चाहिये अैर उसे वापस स्वीकार कर लेना चाहिये।"

देवी दुर्गा के मुॅह से यह सुन कर कणप्रभ अपनी पत्नी को वापस अपने घर ले गया और फिर वे दोनों सुख से रहने लगे।"

तोता आगे बोला — "सो मदन यदि तुम्हें मेरे कहे पर ज़रा सा भी विश्वास है तो तुम भी अपने पत्नी को प्रेमपूर्वक घर ले जाओ क्योंकि वह निर्दोष है।"

तब मदन ने तोते का कहा माना और प्रभावती को घर ले गया।

उसके पिता हरिदत्त ने जब अपने बेटे को वापस आया देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। इस अवसर पर आकाश से फूल बरसे और तोता जो प्रभावती का सलाहकार और विश्वासपात्र था भी उस शाप से मुक्त हो गया जिसके कारण उसे एक तोते का रूप लेना पड़ा था।

तोता देवताओं के रहने की जगह उड़ गया और मदन और प्रभावती दोनों ने अपना जीवन प्रसन्नता और शान्ति से बिताया।

List of 70 tales of "Shuk Saptati"
12 Tales are not given in the book that is why only 58 titles are given here.

1. Mohana and Lakshmi
2. Yashodevi and Her Transmigrations
3. Prince Sudarshan and Vimala
4. The Stupid Brahman Who Married a Witch
5. The Queen and the Laughing Fish
6. Sumati Jayanti and Ganesha
7. The Brahman and the Migical Cloak
8. The Merchant Who Lost his House and the Prperty
9. The Queen and the Laughing Fish Concluded
10. Devas and His Two Wives
11. Rambhika and Her Brahman Lover
12. Shobhika and the Vakul Tree
13. The Wily Rajika
14. The Ingenious Dhanashri
15. What Sridevya Did When She Lost Her Anklet
16. Mugdika Who Gor the Better of Her Husband
17. Gunadhyaya the Brahman of Ready Wit
18. **Not Available**
19. The Prudent Santika Who Saved Her Husband's Credit
20. Kelika Who deceived Her Husband by Pretended Affection
21. Not Available
22. Madhaka and the Camel
23. The Son of the Promise Who Lost All His Money
24. Not Available
25. The Buddhist Mendicant
26. Ratnadevi and Her two Lovers
27. **Not Available**
28. What Devika Did Whe She Was Caught With Her Lover
29. The Clever Sundari
30. Muladeva Who Saved Himself by HIs Tact
31. Shashak the Hare and the Lion
32. Rajani and the Bundle of Wheat
33. Rambhika and Her Four Lovers
34. The Brahman the Girl and the Five Ears of Corn
35. Shambhak the Seed Merchant
36. Nayini and the Silk Dress
37. Purnapal the Ploughman and the Master's Daughter
38. **Not Available**
39. Iron Weights and Scales Which Were Eaten by Mice
40. Subuddhi and Kubuddhi

41. Not Available
42. The Lady Tiger Slayer
43. The Lady Tiger Slayer, contd
44. The Lady Tiger Slayer, contd
45. Not Available
46. The Goblin and the Brahman's Wife
47. The Goblin and the Brahman's Wife, concluded
48. Shakatala the Wise Minister
49. Not Available
50. Dharmabuddhi and Dushtabuddhi
51. The Brahmana Who Put the Thieves to Flight
52. The Asventures of Durdamana and His Three Companions
53. Not Available
54. Dharmadatta and His Minister Vishnu
55. The Cheating Brahmana and the Cobbler
56. Not Available
57. Chandralekha Who Fell in Love With One of King's Wise Maen
58. Not Available
59. The Stupid and Ill-tempered Rajaputra
60. Haridatta and the Jewelled Hall
61. Tejuka and the Pretender Doctor
62. Not Available
63. Not Available
64. Not Available
65. The Disciple of the Ascetic and the Meat
66. The Fowler and the Pigeons
67. The Monkey and the Crocodile
68. The Brahmana and the Merchant's Daughter
69. Vajika Who Pretended to Fall in the Tank
70. The Gandharva's Daughter Who Was Cursed by Narada

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi by Sushma Gupta

12th Cen **Shuk Saptati.**
No 29 By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title “The Enchanted Parrot”.
शुक सप्तति — ।

c1323 **Tales of Four Darvesh**
No 24 By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes.
किस्सये चहार दरवेश

1868 **Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23 By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889).
पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियाँ

1872 **Indian Antiquary 1872**
No 34 A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.

1880 **Indian Fairy Tales**
No 30 By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1884 **Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.

1887 **Folk-tales of Kashmir.**
No 11 By James Hinton Knowles. 64 Tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं

1889 **Folktales of Bengal.**
No 4 By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales.
बंगाल की लोक कथाऐं

1890 **Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18 By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri.
London : WH Allen. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं

1892 **Indian Nights' Entertainment**
No 32 By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॅा – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डेरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales.
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales.
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Panjab
By Charles Swynnerton – a collection of short tales given in his two books – "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment" given above – No 31 and 32. **1903**.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022